जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 29 संख्याः 166 प्रभात अजमेर, मंगलवार 14 जनवरी, 2025 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

सोमवार, पौष पूर्णिमा के दिन दुनिया के सबसे बड़े सनातन समागम महाकुंभ के पहले स्नान पर्व शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर डेढ़ करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने पतित पाविनी गंगा,श्यामल वर्ण यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के संगम पर अमृत स्नान किया। इसके साथ ही महाकुम्भ की विशिष्ट परंपरा, कल्पवास की भी शुरुआत हो गई है। पद्म पुराण और महाभारत के अनुसार संगम तट पर माघ मास में कल्पवास करने से सौ वर्षों तक तपस्या करने के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। श्रद्धालुओं ने संगम तट पर केला, तुलसी और जौ रोपकर कल्पवास की शुरुआत की। अमेरिका, रूस, जर्मनी, इटली, इक्वाडोर सहित अनेक देशों से आये विदेशी श्रद्धालु भी मानवता के इस मंगलपर्व के साक्षी बने। जानकारी के अनुसार शाम चार बजे तक एक करोड़ 60 लाख लोग संगम में पवित्र डुबकी लगा चुके थे। महासंगम में सारा दिन हर-हर गंगे के जयकारे गूंजते रहे। आधी रात से ही श्रद्धालु और कल्पवासी संगम तट पर जुटने लगे थे। हर-हर गंगे और जय श्रीराम के गगनभेदी जयकारों से पूरा मेला क्षेत्र गूंज उठा। महाकुम्भ में कल्पवास करना विशेष फलदायी माना जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार माघ मास में पौष पूर्णिमा से माघ पूर्णिमा तक कल्पवास करने का विधान है। कल्पवासी पूरे माघ मास केला और तुलसी का पूजन करेंगे। तीनों काल में सभी कल्पवासी नियम पूर्वक गंगा स्नान, जप, तप, ध्यान, सत्संग और पूजन करेंगे। महाकुंभ का संगम घाट इस बार दुनिया के लिए बड़ा आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। स्पेनिश, जर्मन, रशियन और फ्रेंच समेत कई विदेशी भाषाओं में जय राम और हर हर गंगे के जयकारों से संगम का वातावरण गूंज उठा। विदेशी श्रद्धालुओं ने इसे आध्यात्मिक अनुभव का केंद्र बताया है।

महाकुंभ के पहले दिन डेढ़ करोड़ लोगों ने संगम में डुबकी लगाई

सुबह से संगम में स्नान करने के इच्छुक शृद्धालुओं की भारी भीड़ लग गई

- **विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक आयोजन में बड़ी संख्या में लोग संगम किनारे एक माह का कल्पवास करने की प्राचीन परम्परा निभा रहे हैं।**

प्रयागराज, 13 जनवरी। केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने महाकुंभ मेला क्षेत्र में सांस्कृतिक कलाग्राम का उद्घाटन किया और साथ ही प्रेस वार्ता की। उन्होंने कहा कि दुनिया महाकुंभ को उत्सुकता के साथ देख रही है। उन्होंने प्रेसवार्ता में कहा कि महाकुंभ क्षेत्र में भव्य कार्यक्रमों का आयोजन होगा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुतियां होंगी। श्री शेखावत ने कहा कि महाकुंभ देश को एकता में बांधता है।

तीर्थराज प्रयागराज में विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक आयोजन महाकुम्भ की शुरुआत आज प्रथम स्नान के साथ हो गई। त्रिवेणी के संगम में सुबह से देश-विदेश से आए श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई, इसके साथ ही एक महीने के कल्पवास की शुरुआत भी आज से हो गई। एक तरफ जहां श्रद्धालु पवित्र संगम में डुबकी लगाएंगे तो वहीं, बड़ी संख्या में लोग संगम किनारे कल्पवास की प्राचीन परंपरा का भी पालन करेंगे।

महाकुम्भ में पहले स्नान के लिए तड़के से ही संगम में श्रद्धालुओं का भारी भीड़ लगी हुई है। देश ही नहीं, दुनियाभर से लोग दिव्य और भव्य महाकुम्भ का अद्भुत अनुभव करने के लिए संगमनगरी पहुंचे हैं। विदेश से प्रयागराज आए श्रद्धालुओं का कहना है कि वे कई वर्षों से सनातन धर्म से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

न स्वास्थ्य, न उम्र, न ही गांधी परिवार का गहलोत के प्रति अविश्वास, गहलोत के पक्ष में है

पर, फिर भी उनका सत्ता, ''रुतबा'' व राजनीति के लिये लगाव, राजनीतिक महत्वाकांक्षा को लगातार हवा देता रहता है

- **जहाँ तक स्वास्थ्य का सवाल है, गहलोत ने स्वयं ट्वीट कर सार्वजनिक किया कि अभी जब वे मुम्बई यात्रा पर थे, उनको तुरंत ''गॉल ब्लैडर'' का ऑपरेशन कराना पड़ा। यह ''गॉल ब्लैडर'', ट्वीट के अनुसार, काफी समय से उन्हें तकलीफ दे रहा था।**
- **वैसे, पार्टी का राजस्थान का चुनाव हारने के बाद, गहलोत अस्वस्थ रहे हैं तथा अस्पताल जाना-आना काफी समय तक बना रहा है। इसके बाद, अस्पताल की सभी सुविधाएं उन्हें घर पर उपलब्ध करायी गईं और घर पर वे काफी समय तक रोगी-शैय्या पर रहे।**
- **25 सितम्बर को सोनिया गांधी के खिलाफ बगावत करने के बाद, गांधी परिवार का उन पर से जो विश्वास उठा था, वह खाई अभी बरकरार है।**
- **पर, उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की ज्वाला, विशेषकर, सचिन पायलट के कारण पैदा असुरक्षा की भावना और तेज हो गई। पर, जहाँ उन्होंने हाथ डाला, चाहे हरियाणा विधानसभा या महाराष्ट्र का इलैक्शन, असफलता ही हाथ लगी।**
- **और, अब वे सचिन से प्रतिद्वंदिता, दिल्ली में चुनाव की तैयारी में पूर्णतया दिखा रहे हैं। सचिन, दिल्ली के चुनाव में सक्रिय हुए तो, गहलोत ने भी वहाँ प्रेस कॉन्फ्रेंस ले डाली। तो, हाईकमान ने सचिन के लिये एक और प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करवायी और घोषणा करवायी कि कांग्रेस हर बेरोजगार युवक को 8,500 रूपए प्रतिमाह देगी। एक साल तक, जिससे वह अपनी शिक्षा पूरी कर ले।**

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जनवरी। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इस समय मुम्बई के एक अस्पताल में हैं। वहाँ उनका गॉल ब्लैडर (पित्ताशय) ऑपरेशन हुआ है। उन्हें आराम की सलाह दी गई है तथा वे कुछ समय तक लोगों से नहीं मिल सकेंगे।

पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा किये गये एक ट्वीट के अनुसार, कुछ दिन से गॉल ब्लैडर उन्हें तकलीफ दे रहा था तथा जब वे मुम्बई आये हुये थे, तुरंत ही उनका ऑपरेशन करना पड़ा।

71-वर्षीय राजनेता गहलोत पिछले कुछ समय से स्वास्थ्य संबंधी कई कष्टों का सामना कर रहे हैं। कुछ समय से, उनके अस्पताल में जाने-आने का सिलसिला चल ही रहा है। राजस्थान विधानसभा चुनावों में मिली हार के तुरंत बाद ही, उन्हें अस्पताल में भर्ती होना पड़ा था, जिसके बाद वे घर पर ही विश्राम करते रहे। वे घर में कुछ समय बैड पर ही रहे, जहाँ उनके लिये अस्पताल जैसी सारी सुविधाएं उपलब्ध थीं।

लेकिन, अधिकांश राजनेताओं की तरह, समय और उम्र के साथ सत्ता, पद और राजनीति के प्रति उनका लगाव कम नहीं हुआ है।

उन्होंने अपने पाँच साल के शासनकाल का ज्यादातर समय अपने से युवा, बेहतर वक्ता तथा खुद से अधिक करिश्माई साथी सचिन पायलट के खिलाफ षड़यंत्र करने में ही गुजार दिया था।

पायलट के खिलाफ उनका भय तथा असुरक्षा की भावना 25 सितम्बर को इस हद तक बढ़ गई थी कि उन्होंने सोनिया गांधी के खिलाफ बगावत कर दी थी, राज्य के मुख्यमंत्री पद पर बने रहने के लिये चालबाजी की तथा कांग्रेस अध्यक्ष बनने के प्रस्ताव तक को ठुकरा दिया था। वे पायलट से इस सीमा तक आशंकित थे कि उन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी से दूर रखने के लिये किसी भी हद तक जाने को तैयार थे।

और अब वे अपने धन-बल का उपयोग करके कांग्रेस की राजनीति के केन्द्र में वापस आना चाह रहे हैं।

लेकिन सूत्रों का कहना है कि जहाँ तक गांधी परिवार का प्रश्न है, गहलोत के खिलाफ उनका अविश्वास अभी भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हाईकोर्ट ने गंगापुर सिटी जिला खत्म करने पर जवाब मांगा

- **ठोस आधार नहीं बताया तो याचिकाकर्ता पर भारी हर्जाना लगाया जा सकता है।**

जयपुर, 13 जनवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार की ओर से बनाए गए गंगापुर सिटी जिले को खत्म करने के मामले में राज्य सरकार को यह बताने को कहा है कि जिला खत्म करने के निर्णय में विवेक का इस्तेमाल कर लिया गया है या नहीं? वहीं, अदालत ने याचिकाकर्ता को बताने को कहा है कि उन्होंने जनहित याचिका पेश करने से पूर्व राज्य सरकार से इस संबंध में जानकारी जुटाने के लिए क्या किया है? अदालत ने याचिकाकर्ता को मौखिक रूप से चेताया है कि यदि इस संबंध में कोई ठोस आधार नहीं बताया गया तो जनहित याचिका को भारी हर्जाने के साथ खारिज किया जा सकता है। चीफ जस्टिस एम.एम. श्रीवास्तव और जस्टिस उमाशंकर व्यास की खंडपीठ ने यह आदेश गंगापुर सिटी विधायक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

फरवरी 2020 को दिल्ली में हुए दंगे के 3 आरोपी चुनाव लड़ रहे हैं इस बार

ताहिर हुसैन व शाहरुख पठान, ओवैसी की पार्टी की ओर से उम्मीदवार हैं तथा तीसरा ओरापी इशरत जहान कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ रहा है

- **जैसा कि विदित ही है, 24 फरवरी 2020 को नॉर्थ-ईस्ट दिल्ली में हिंसा भड़की थी तथा 53 लोगों की जान गई थी।**
- **26 फरवरी 2020 को रविन्द्र कुमार ने एक एफ.आई.आर. करवाई थी कि उसका पुत्र अंकित शर्मा जो इंटैलिजैंस ब्यूरो में पोस्टेड था, 25 फरवरी से लापता है। यह आरोप लगाया गया है, एफ.आई.आर. में कि अंकित शर्मा के अवशेष खजूरी खास नाले से बरामद किये गये हैं, जो दंगाग्रस्त क्षेत्र में बहता है। यह भी कहा गया है, एफ.आई.आर. में कि अंकित शर्मा के शरीर पर 51 चोट के निशान थे।**

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जनवरी। फरवरी 2020 में दिल्ली में हुए दंगों के कम से कम तीन आरोपी विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं। दो को ओवैसी की पार्टी ए.आई.एम.आई.एम. ने प्रत्याशी बनाया है, ये है जफराबाद का ताहिर हुसैन और शाहरुख पठान जो कि दिल्ली दंगों का पोस्टर बॉय था।

तीसरी है इशरत जहाँ जिसे कांग्रेस ने प्रत्याशी बनाया है।

दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा कि आम आदमी पार्टी के पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन जो फरवरी 2020 में हुए दिल्ली दंगों में कई मामलों में आरोपी हैं, जेल से ही नामांकन पत्र भर सकते है।

अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल चेतन शर्मा ने हुसैन, जिस पर दंगों से जुड़ा हत्या का मामला है, की जमानत मांगी जाने वाली अंतरिम याचिका पर प्रतिक्रिया देते हुए पुलिस की तरफ से कहा कि, ऐसे कई उदाहरण हैं, जब

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सिंगापुर के राष्ट्रपति आज भारत में

- **राष्ट्रपति थर्मन शनमुगरत्नम राजनैतिक यात्रा पर भारत आ रहे हैं और 18 जनवरी तक भारत में रहेंगे।**

नयी दिल्ली, 13 जनवरी। सिंगापुर के राष्ट्रपति थर्मन शनमुगरत्नम 14-18 जनवरी तक भारत की राजकीय यात्रा पर आयेंगे। शनमुगरत्नम की सिंगापुर के राष्ट्रपति के रूप में यह पहली भारत यात्रा होगी।

एक बयान के अनुसार, उनके साथ मंत्रियों, संसद सदस्यों और अधिकारियों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सीएजी रिपोर्ट पेश करने में बरती जा रही टालमटोल से आपकी मंशा पर संदेह होता है'

दिल्ली हाई कोर्ट ने दिल्ली के भाजपा विधायकों की याचिका पर सुनवाई करते हुए तीखी टिप्पणी की

- **दिल्ली विधानसभा में विपक्ष के नेता विजेन्द्र गुप्ता तथा 6 अन्य भाजपा विधायकों ने हाई कोर्ट में याचिका दायर कर मांग की है कि विधानसभा अध्यक्ष को सदन की बैठक बुलाने के निर्देश दिए जाएं ताकि सदन में सीएजी रिपोर्ट पेश हो और उस पर चर्चा हो सके।**

नयी दिल्ली, 13 जनवरी। दिल्ली उच्च न्यायालय ने सोमवार को दिल्ली सरकार की खिंचाई करते हुए कहा कि वह अपने कामकाज के बारे में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) के रिपोर्टों को विधानसभा के समक्ष प्रस्तुत करने में टालमटोल कर रही है, जिससे उसकी वास्तविक मंशा पर शक होता है।

न्यायाधीश सचिन दत्ता ने विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायकों द्वारा दायर एक याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा, दिल्ली सरकार

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

छात्र आंदोलन केस में नरेश मीणा बरी

- **देवली -उनियारा के निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा के एसडीएम से मारपीट के मामले में आगे सुनवाई होगी।**

जयपुर, 13 जनवरी। न्यायिक मजिस्ट्रेट क्रम-6 अदालत ने छात्र जीवन के दौरान दर्ज हुए मामले में देवली-उनियारा विधानसभा उपचुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार रहे नरेश मीणा को बरी कर दिया है। वहीं, विश्वविद्यालय के बाहर प्रदर्शन के दौरान दर्ज एक अन्य प्रकरण में अदालत ने आरोपी नरेश मीणा को न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया है। इसके अलावा, उपचुनाव के दौरान समरावता में एसडीएम से मारपीट के मामले में नरेश मीणा की ओर से हाईकोर्ट में जमानत याचिका पेश की गई है, जिस पर अदालत आगामी दिनों में सुनवाई करेगी। गत दिनों टोंक के सत्र न्यायालय ने मीणा की जमानत अर्जी को खारिज कर दिया था।

नरेश मीणा के अधिवक्ता फतेह राम मीणा ने बताया कि साल 2004 में नरेश मीणा ने विवि के छात्रसंघ चुनाव में महासचिव का चुनाव लड़ा था। मतगणना के दिन 21 अगस्त को वह मतगणना कक्ष में था। इस दौरान, बाहर हुए झगडे में पुलिस ने छह अन्य आरोपियों विजय सिंह, कपिल, जितेन्द्र, मोहम्मद शफी, अनिल और ज्ञानचंद सहित नरेश मीणा को आरोपी बनाकर एफआईआर दर्ज की थी। अदालत पूर्व में अनिल और जितेन्द्र को परिवीक्षा (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हर मोर्चे पर असफल बांग्लादेश की अंतरिम सरकार पर दबाव है कहीं तो नतीजे दिखाए

शांति और प्रशासन नहीं दे पाई तो जनता का ध्यान बंटाने के लिए सीमा पर तनाव पैदा कर रही है यूनुस सरकार

- **बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से ठप्प हो चुकी है और विदेशी बाजार पूरी तरह से छिन गया है।**
- **बांग्लादेश से होने वाले निर्यात में सबसे अग्रणी, रैडीमेड गारमैंट निर्माण नहीं हो पा रहा है। देश की रेडीमेड गारमैंट कम्पनियां विदेशी खरीददारों के ऑर्डर को पूरा नहीं कर पा रही हैं।**
- **आवश्यक खाद्य पदार्थों के दाम निरंतर बढ़ रहे हैं और आपूर्ति ना के बराबर है, बांग्लादेश की आम जनता बुरी तरह से त्रस्त है।**

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जनवरी। बाँग्लादेश सीमा पर जानबूझकर तनाव बढ़ा रहा है और सीमा पर सेना तैनात करके अस्थिरता व युद्ध जैसे हालात का दिखावा कर रहा है। बाँग्लादेश की अंतरिम सरकार देश में शांति और व्यवस्था तो कायम नहीं कर पाई और अब जनता का ध्यान बंटाने के लिए सीमा पर युद्ध का डर दिखा रही है।

शेख हसीना की निर्वाचित सरकार गिरे हुए कई महीने हो चुके हैं, अंतरिम सरकार अभी तक प्रशासन पर पकड़ नहीं बना पाई है।

इसी बीच भारत ने बाँग्लादेश के राजदूत को बुलाया, क्योंकि बाँग्लादेश सीमा पर बाड़ लगाने के काम में अड़ंगे डाल रहा है।

भारत सीमा पर कांटेदार बाड़ लगा रहा है, ताकि माल्दा जिले के कुछ भागों में सीमा पर से घुसपैठ रोकी जा सके। बाँग्लादेश ने इसका विरोध किया है।

बाँग्लादेश में अव्यवस्था बढ़ गई है। इसका सारा विदेशी बाजार छिन गया है। कानून व्यवस्था और सुशासन के अभाव में अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हुआ है। देश का मुख्य व्यवसाय रेडीमेड गारमेंट ठप्प पड़ गया है। बगावत के बाद से गारमेंट निर्माण इकाइयां सामान्य कामकाज नहीं कर पा रही है। विदेशी खरीददारों को समय पर पूरी सप्लाई नहीं हो पा रही है।

आम लोगों को महंगाई ने परेशान कर रखा है आवश्यक खाद्य पदार्थों के दाम बढ़ गए हैं तथा उनकी आपूर्ति नहीं हो रही है। आम जनता का अंतरिम सरकार से मोहभंग हो गया है।

कुछ रिपोर्टों के अनुसार, यूनुस

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नाबालिग से दुष्कर्म व बेचने में सहयोग पर आजीवन कारावास

- **अभियुक्त महिला ने नाबालिग किशोरी से दुष्कर्म में अपने पुत्र का सहयोग किया। बाद में पीड़िता को अनैतिक कार्य के लिये बेचने का प्रयास किया।**

जयपुर, 13 जनवरी। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-2 महानगर प्रथम ने नाबालिग किशोरी को अनैतिक काम के लिए बेचने का प्रयास और उससे दुष्कर्म में अपने पुत्र का सहयोग करने वाली महिला करिश्मा उर्फ कस्सो को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही, अदालत ने अभियुक्त पर 61 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। अदालत ने प्रकरण में नैना, सपना और मंजू को गिरफ्तारी वारंट से तलब कर मुकदमा चलाने की कार्रवाई शुरू करने को कहा है। पीठासीन अधिकारी तिरुपति कुमार गुप्ता ने कहा कि अभियुक्त ने स्वयं महिला होते हुए भी पीड़िता का दर्द नहीं समझा और उसे अपने बेटे की सहायता से घर से भगवाया। वहीं, उसे वेश्यावृत्ति के लिए बेचने का प्रयास किया। जब पीड़िता अपना लैंगिक शोषण कराने के लिए तैयार नहीं हुई तो अपने बेटे के जरिए उसे टार्चर कराया। अदालत ने कहा कि ऐसी महिला समाज रूपी बगिया में उगे कैक्टस के समान है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक राकेश महर्षि ने अदालत को बताया (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

दंड अन्यायी के लिए न्याय है। –अगस्तियन

कंपनी की बैलेंस शीट बनाम ज़िंदगी की बैलेंस शीट

हाल ही में 'एल एंड टी' कंपनी के अध्यक्ष सुब्रमण्यन ने अपने अधिकारियों/ कर्मचारियों को पत्र लिखकर आव्हान किया कि वे प्रति सप्ताह 90 घंटे काम करें। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे और घर पर रहेंगे तो केवल पत्नी को कितने समय तक घूर सकते हैं? इसी तरह पत्नी भी उन्हें कितने समय तक घूर सकती है? उन्होंने यह भी कहा कि कर्मचारियों को रविवार को भी काम पर आना चाहिए।

एल एंड टी कंपनी के मुखिया का यह कथन न केवल उनकी घोर असंवेदनशीलता को दर्शाता है अपितु स्त्रियों के प्रति उनकी घिनौनी मानसिकता का भी द्योतक है।

आश्चर्य की बात यह है कि यह सलाह उस व्यक्ति के द्वारा दी जा रही है जिसका वेतन प्रति वर्ष 51 करोड़ रूपए है और पूरी ऐशो आराम से अपना जीवन बिता रहा है। उनका वेतन, उनकी कंपनी के कर्मचारी के वेतन से 800 गुणा अधिक है (यह मानते हुए कि कर्मचारियों का वेतन लगभग 6 लाख सालाना है)।

दुनिया भर में जहां काम और जीवन में संतुलन बनाने पर जोर दिया जा रहा है, वहीं सुब्रमण्यन उन्हें परिवार को समय न देने की बात कर रहे हैं। वैसे ही काम के दबाव और मानसिक तनाव के कारण निजी क्षेत्र में काम करने वाले कई प्रतिभाशाली युवा गत दिनों में आत्म हत्या कर चुके हैं। ऐसा लगता है, सुब्रमण्यन के लिए रिश्तों की मिठास और महत्त्व का कोई अर्थ नहीं है। सप्ताह में 90 घंटे काम करने की सलाह देने वाले यह भूल जाते हैं कि उनके कर्मचारी केवल पत्नी को निहारने (जिसे वे घूरना कह रहे हैं) का ही काम नहीं करते। उन्हें घर के बच्चों के साथ समय बिताना होता है, उन्हें होम वर्क कराना होता है, बाज़ार से सामान लाना होता है, बुजुर्ग माता–पिता की देखभाल करनी होती है, बच्चों को स्कूल छोड़ना होता है, अपने मित्रों, रिश्तेदारों के यहां सामाजिक अवसरों पर जाना होता है। यदि वे यह सब नहीं करेंगे तो उनका घर चलेगा कैसे?

सुब्रमण्यन का कथन, अपने कर्मचारियों के प्रति उनके अमानवीय दृष्टिकोण को दर्शाता है। कुछ दिनों पहले इंफोसिस के अध्यक्ष नारायण मूर्ति ने भी यह बयान दिया था कि कर्मचारियों को प्रति सप्ताह 70 घंटे काम करना चाहिए। क्या कॉर्पोरेट के मुखियाओं का काम केवल अपनी कंपनी के मुनाफे को बढ़ाना ही रह गया है, चाहे इसके लिए उन्हें अपने कर्मचारियों के जीवन को नर्क ही क्यों न बनाना पड़े?

प्रति सप्ताह 90 घंटे कार्य करने का अर्थ हुआ कि एक कार्य दिवस में 18 घंटे कार्य किया जाए। इतने अधिक समय तक काम करने से किसी भी इंसान की क्या स्थिति होगी? जिन परिस्थितियों में हमारे यहां लोगों को कार्य करना होता है, वह अत्यंत असुरक्षित और कठिन है। श्रम सुरक्षा कानूनों को तो पहले ही विदाई दे दी गई है। हम समाचार पत्रों में प्रतिदिन पढ़ते हैं कि कैसे कोई व्यक्ति असुरक्षित कार्यस्थल के कारण मर गया, मिट्टी ढहने से, मशीन में हाथ कटने से या जहरीली गैस के कारण मर गया। इन सब का कारण यही है कि उपयुक्त सुरक्षा के उपाय मालिकों द्वारा नहीं किए जाते।

गत कुछ वर्षों में जहां बड़ी प्राइवेट कंपनियों का मुनाफा 15 प्रतिशत से अधिक बढ़ा, वहीं कर्मचारियों का वेतन एक–दो प्रतिशत भी नहीं बढ़ा। स्पष्ट है कि अपने कर्मचारियों से मशीन की तरह काम कराने के बाद कॉर्पोरेट का एक मात्र उद्देश्य अपने मुनाफे को बढ़ाना है ताकि उनके मालिक और सी ई ओ ऐशो आराम की ज़िन्दगी बिता सकें।

उद्योग में निवेश बढ़ाने के नाम पर गत कुछ वर्षों में विभिन्न श्रमिक कानूनों को बहुत शिथिल कर दिया गया है। श्रमिक संगठन तो एक प्रकार से भूतकाल की बात हो गए हैं। आजकल श्रमिकों के हित की बात करने वाला न कोई संगठन है और न मीडिया ही। इन्हें केवल नियोक्ताओं की दया पर ऐसे छोड़ दिया गया है, जैसे किसी शेर के आगे मेमने को छोड़ दिया जाता है। दुर्भाग्य से नियोक्ता ने अब कर्मचारियों के प्रति केवल शोषण का ही दृष्टिकोण अपना लिया है। उनका मूल मंत्र ही यह है कि कर्मचारियों को कम से कम वेतन दिया जाए और लाभ अधिक से अधिक बढ़ाया जाए। कर्मचारियों के लिए समस्या यह है कि बेरोजगारी के कारण उनके पास अन्य कोई विकल्प भी उपलब्ध नहीं हैं। इसी कारण वे नियुक्ताओं के हाथों शोषित होने को बाध्य हैं।

श्रम कानून के अनुसार वेतन 8 घंटे कार्य करने के लिए मिलता है और उससे अधिक काम करने पर दुगुनी दर पर भुगतान किया जाता है। अब तो कार्य की अवधि ही बढ़ाकर 12 घंटे कर दी गई है। अनेक ऐसे कर्मचारी हैं जो प्रतिमाह 12000 में प्रतिदिन 8 से 12 घंटे कार्य कर रहे हैं। शायद सुब्रमण्यन और नारायण मूर्ति को यह नहीं पता कि खुद का छोटा–मोटा काम करने वाले, ठेला, थड़ी लगा कर, व्यवसाय करने वाले 12 से 15 घंटे कार्य करते हैं। वे 'हफ्ते' के रूप में कभी नगर निगम को, कभी पुलिस वालों को मजबूरन अपनी गाढ़ी कमाई का पैसा देने के लिए मजबूर होते हैं। रहने के लिए उनके पास किसी कच्ची बस्ती में नारकीय हालात के अलावा और कुछ नहीं होता।

मनुष्य एक मशीन नहीं है। अतः उससे मशीन की तरह काम लेने की सोचना भी स्वयं का ही नुकसान करना है। मशीन सोचती नहीं है, उसमें भावना ही नहीं होती, किंतु मनुष्य सोचता भी है और उसमें भावनाएं भी होती हैं। अपनी सोच को परिष्कृत करने के लिए कई बार इंसान को प्रकृति के साथ समय बिताना होता है, परिवार के साथ रिश्ते प्रगाढ़ करने होते हैं, मित्रों के साथ हंसी-मजाक भी करना होता है।

दुखद आश्चर्य की बात है कि अपने कार्मिकों के प्रति इस प्रकार का अमानवीय दृष्टिकोण रखने और उन्हें 90 घंटे काम करने की सलाह देते समय उन्हें किसी प्रकार की शर्म तक महसूस नहीं हुई। उन्होंने शायद इंसान को मशीन मान लिया है और खुद के मुनाफे के लिए वे किसी भी हद तक गिरने को तैयार हैं।

उदारीकरण और निजीकरण के नाम पर कई वर्षों से सामाजिक सुरक्षा, कार्य स्थल की सुरक्षा और कार्य अवधि की अधिकतम सीमा के बारे में जो प्रावधान थे, उन्हें बिल्कुल भुला दिया गया। जब भी निवेश की बात होती है तो पहली शर्त ही निवेशकों को श्रम कानून से मुक्ति की बात रखी जाती है।

श्रमिकों और कार्मिकों का शोषण करने में सरकार भी निजी क्षेत्र जैसा व्यवहार करने लगी है। आजकल सरकार में भी लगभग 30 से 40 प्रतिशत कर्मचारी ठेके पर काम कर रहे हैं जिन्हें नियमित कर्मचारियों के समान न तो वेतन मिलता है न उनकी सेवा की कोई सुरक्षा है। उन्हें किसी भी समय नौकरी से बिना नोटिस, हटाया जा सकता है। निजीकरण और उदारीकरण के बाद ही कार्मिकों के शोषण का युग प्रारंभ हो गया था किंतु गत 10–12 सालों में स्थिति और खराब हो गई है। नियमित कर्मचारी और ठेके पर रखे कर्मचारियों के वेतन में लगभग 5–6 गुना अंतर होता है। इनके लिए न तो नौकरी की सुरक्षा की गारंटी होती है और न ही किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की। इन्हें नियोक्ता, जब चाहे, नौकरी से निकाल देता है। शोषण का सबसे प्रचलित तरीका यही हो गया है। अब तो सरकार भी ऐसा करने में लग गई है। सरकार में नियमित नौकरियों का स्थान धीरे–धीरे ठेकेदारी प्रथा ने ले लिया है। इन्हें नियमित नौकरी का कोई लाभ नहीं मिलता है। नियमित नौकरियों का संविदाकरण, कर्मचारियों के शोषण का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है। इनके कोई अधिकार नहीं हैं। दुर्भाग्य तो यह है कि न्यायालयों ने भी इनके अधिकारों की रक्षा करना बंद कर दिया है।

सुविधायुक्त वातावरण के कारण सर्वोच्च अधिकारी अथवा नियोक्ता तो 15 घंटे काम कर सकते हैं, किंतु अमानवीय कार्य परिस्थितियों के कारण अधीनस्थ कर्मचारियों का शारीरिक और मानसिक क्षरण 4–5 घंटे में ही हो जाता है। कार्यस्थल का वातावरण उनके लिए अस्वास्थ्यकर होता है और अधिक समय तक काम करते रहने पर वे स्थाई रूप से कई बीमारियों से ग्रस्त भी हो जाते हैं। अत: यदि कोई उन्हें 90 घंटे काम करने के लिए कह रहा है तो यह उन्हें एक प्रकार से मौत के मुंह में ही धकेलने जैसा है।

इस प्रकार की बेतुकी सलाह उस व्यक्ति के द्वारा ही दी जा सकती है जिसके लिए मुनाफा ही भगवान है और जो मानवीय रिश्तों और मानवीय भावनाओं की कोई कद्र नहीं करता है। एल एंड टी के अध्यक्ष सुब्रमण्यन के बयान की जितनी निंदा की जाए उतनी कम है। इसके साथ ही यह महिलाओं के प्रति उनके अपमानजनक दृष्टिकोण को भी दर्शाता है। आश्चर्य की बात है कि अभी तक महिला संगठनों ने इस संदेश का उतना तीव्र विरोध नहीं किया, जितना होना चाहिए था। सुब्रमण्यन के बयान से तो यह लगता है कि वह अपने परिवार के साथ समय बिताने को समय की बर्बादी मानते हैं। अब तक के सारे अध्ययन यह बताते हैं कि जो व्यक्ति जितना अच्छा संतुलन कार्य और परिवार के बीच में बना पाता है, उसकी उत्पादकता एवं कार्य की गुणवत्ता कहीं बेहतर हो जाती है।

मनुष्य एक मशीन नहीं है। अत: उससे मशीन की तरह काम लेने की सोचना भी स्वयं का ही नुकसान करना है। मशीन सोचती नहीं है, उसमें भावना ही नहीं होती, किंतु मनुष्य सोचता भी है और उसमें भावनाएं भी होती हैं। अपनी सोच को परिष्कृत करने के लिए कई बार इंसान को प्रकृति के साथ समय बिताना होता है, परिवार के साथ रिश्ते प्रगाढ़ करने होते हैं, मित्रों के साथ हंसी–मजाक भी करना होता है। ऐसा लगता है कि सुब्रमण्यन ने न तो कभी कोई मित्र रखे ना उन्होंने परिवार में कभी रिश्तों की मधुरता को अनुभव किया है। उनके जीवन का लक्ष्य ही अपनी कंपनी का मुनाफा बढ़ाने तक सीमित है। ऐसा व्यक्ति वास्तव में दया का पात्र है। वे कितना ही पैसा क्यों न कमा लें और कंपनी का मुनाफा कितने ही गुणा क्यों न बढ़ा लें, अन्दर से अत्यंत गरीब और खोखले ही रहेंगे। वे यह सरल सत्य ही भूल गए कि धन दौलत से रिश्ते नहीं खरीदे जा सकते हैं।

गनीमत यह है कि जहां सुब्रमण्यन जैसी घटिया सोच के व्यक्ति हैं, वहीं आनंद महिंद्रा जैसी परिष्कृत सोच के उद्योगपति भी हैं जो कर्मचारियों के हित में ही कंपनी का हित देखते हैं।

दुर्भाग्य यह है कि सुब्रमण्यन जैसी सोच रखने वाले नियुक्ताओं की इस देश में कमी नहीं है। अंतर केवल इतना है कि अधिकतर ऐसे लोग इस ओछी मानसिकता को सार्वजनिक रूप से प्रकट नहीं करते किंतु उनके निर्णय यही प्रदर्शित करते हैं।

श्रम कानून को तो आजकल खलनायक के रूप में देखा जाने लगा है। मुझे राजस्थान में श्रम आयुक्त के पद पर दो वर्ष तक कार्य करने का अवसर लगभग 20–22 वर्ष पूर्व मिला था। आजकल श्रमिक संघ और श्रमिक आंदोलन एवं श्रमिकों की बात करने वाले लोग यदा–कदा ही देखे जाते हैं। जब भी सेवा सुरक्षा एवं सेवा की शर्तों के बारे में कोई आंदोलन करने का प्रयास किया गया उसे कुचलने में प्रबंधन ने पूरी ताकत लगा दी। कई बार तो इस प्रकार के आंदोलन को हिंसात्मक रूप से दबाने का प्रयास भी किया गया। लोग भूले नहीं हैं, जब गुड़गांव के मारुति के कारखाने में हड़ताल खत्म करवाने के लिए श्रमिकों के विरुद्ध पुलिस द्वारा प्रबंधन के सहयोग से लाठी चार्ज किया गया और गोली चलाई गई। इससे क्रुद्ध होकर श्रमिकों की भीड़ ने एक एचआर मैनेजर को मार ही दिया।

आशा की जानी चाहिए कि विभिन्न महिला संगठन, उद्योग संगठन सुब्रमण्यन के इस कथन की कड़ी निंदा करेंगे, ताकि विभिन्न कंपनियों के अध्यक्ष कंपनी की बैलेंस शीट के साथ ही अपनी ज़िंदगी की बैलेंस शीट पर भी ध्यान देंगे।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

जागरूकता की कमी के कारण हैं कोलेस्ट्रॉल को लेकर भ्रम

डॉ. रामावतार शर्मा

कोलेस्ट्रॉल मोम जैसा एक पदार्थ होता है जो निर्धारित मात्रा में शरीर के कई महत्वपूर्ण निर्माण कार्यों में काम आता है। हमारे मस्तिष्क की हर एक कोशिका की प्लाज्मा झिल्ली कोलेस्ट्रॉल से ही बनती है। कोलेस्ट्रॉल मस्तिष्क, नर्व और तंत्रिका तंत्र के विभिन्न घटकों के निर्माण के लिए अत्यावश्यक है। इसके अलावा शरीर में विटामिन डी, कई प्रकार के हार्मोन एवं पाचन के लिए अत्यावश्यक एंजाइम्स के निर्माण के लिए भी कोलेस्ट्रॉल की आवश्यकता होती है। हमारे शरीर में मौजूद करीब 85 प्रतिशत कोलेस्ट्रॉल हमारा लिवर ही बनाता है और हमारे शरीर में कुल कोलेस्ट्रॉल का 25 प्रतिशत कोलेस्ट्रॉल हमारे मस्तिष्क में मौजूद रहता है। इस तरह से यह बात स्पष्ट होती है कि कोलेस्ट्रॉल मानव जीवन के आधारभूत तत्वों में से एक है। अब सवाल उठता है कि लोग कोलेस्ट्रॉल को मृत्यु दूत क्यों मानने लगे हैं जबकि इसके अभाव में जीवन संभव नहीं है? इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का कारण पर्याप्त जानकारी का अभाव और लोगों का शॉर्टकट के द्वारा जीवन जीने का स्वभाव है। दूसरी तरफ कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण करने वाली दवाओं की 1 खरब 64 अरब रुपए से भी अधिक वैश्विक बिक्री भी इंगित करती है कि न तो लोग अपनी जीवनशैली बदलना चाहते और न ही दवा कंपनिया अपने फायदे को खोना चाहेंगी। सोशल मीडिया पर लोग बेतुकी बातें करते रहेंगे, स्टेटिन खाते रहेंगे और समय पूर्व दीर्घकालिक रोगों के शिकार होते रहेंगे।

हमारा लिवर वी एल डी एल नामक लाइपोप्रोटीन यौगिक उत्पादित करता है जिसकी एक निश्चित मात्रा हमारे हृदय के स्वास्थ और शरीर को फुर्तीला बनाए रखने के लिए आवश्यक होती है। यह यौगिक ट्राइग्लिसराइड को शरीर की कोशिकाओं में पहुंचाने का अत्यावश्यक कार्य करता है जिसके फलस्वरूप शरीर को लगातार ऊर्जा मिलती रहती है। इसके विघटन से ही एल डी एल नामक लाइपोप्रोटीन यौगिक उत्पादित होता है जो कोलेस्ट्रॉल को शरीर के विभिन्न भागों में पहुंचाता है। अब जो कोलेस्ट्रॉल आवश्यकता से अधिक हो उसे एच डी एल नामक लाइपोप्रोटीन लिवर में ले जाता है जहां वह विघटित हो कर शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है। अब यहां सवाल उठता है कि इतनी संतुलित एवं नियंत्रित प्रक्रिया में ऐसा क्या हो जाता है कि जीवन का आधारभूत यौगिक मृत्यु का कारण और दवा कंपनियों और चिकित्सकों के लिए धनोपार्जन का एक बहुत बड़ा माध्यम बन जाता है। यहां उपरोक्त दोनों पक्षों पर दोषारोपण से काम नहीं चलेगा। आपको आत्मावलोकन करना पड़ेगा और अपनी कमजोरियों एवं गलतियों को स्वीकारना एवं सुधारना पड़ेगा।

वास्तव में असली दोषी कोलेस्ट्रॉल नहीं बल्कि आपकी जीवनशैली और भोजन को लेकर ग़लत प्राथमिकताएं हैं। उच्च कोलेस्ट्रॉल के कुछ प्रतिशत मामले तो आनुवंशिक होते हैं परंतु ज्यादातर लोगों में अधिक कार्बोहाइड्रेट्स वाला भोजन, सफेद चीनी या उससे बनी मिठाइयां, मोटापा, निष्क्रिय जीवन शैली, सुबह एवं रात्रिकालीन भोजन के समय में लापरवाही आदि जिम्मेदार होते हैं। इसके अलावा डायबिटीज और गुर्दे के रोगों में भी कोलेस्ट्रॉल बढ़ सकता है। कई तरह के रोगों की दवाएं, शराब का अनियंत्रित सेवन आदि के कारण भी कोलेस्ट्रॉल बढ़ सकता है। इसके विपरीत यदि भोजन में चीनी और उससे संबंधित उत्पादों की बड़ी कटौती कर दी जाए, सैचुरेटेड फैट को 10 प्रतिशत तक नियंत्रित कर दिया जाय और ट्रांस फैट का उपयोग न के बराबर कर दिया जाए तो कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण में बड़ा फायदा होता है। भोजन में ओमेगा 3 का उपयोग, घुलनशील फाइबर का अच्छा उपयोग, व्हे प्रोटीन का सेवन, तंबाकू का निषेध, शराब उपभोग पर नियंत्रण, मोटापे से मुक्ति और जीवन में कसरत तथा क्रियाशील जीवनशैली को अपनाना आदि सारे कदम कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण और बेहतर हृदय स्वास्थ्य की तरफ बढ़ते कदम होते हैं। रात्रिकालीन भोजन सूर्यास्त के साथ या फिर हर हालात में रात के 8 बजे से पहले होजाना चाहिए।

ऑलिव ऑयल, पत्तेवाली हरी सब्जियां, सूखे मेवे, ताजा फल, छाछ, दही, टोफू, सोयाबीन, मछली और फलियों वाली सब्जी आदि सभी स्वास्थ्य वर्धक होते हैं। इनके विपरीत सोडा, पैकेजिंग वाले फलों के रस, कार्न सिरप, फ्राइड फूड, कोटेड एवं रोस्टेड भोज्य पदार्थों का उपयोग अति सीमित मात्रा में करना चाहिए। भोजन को उबालने, भाप द्वारा पकाने या फिर बंद बर्तन में धीरे–धीरे पकाने की पद्धतियों का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए। माइक्रोवेव, प्रेशर कुकिंग आदि का उपयोग कम करना चाहिए। दही, छाछ, राबड़ी, इडली, डोसा, किमची का उपभोग पर्याप्त मात्रा में करना फायदेमंद होता है। कसरत, ध्यान, गतिशीलता, संगीत, साहित्य और सहृदयता हमारे शरीर में प्रज्वलन (इन्फ्लेमेशन) को कम करते हैं इसलिए ये हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा होना चाहिए। घृणा, विवाद, भेदभाव, वासना, अत्यधिक संग्रहण आदि नकारात्मक जीवन पद्धतियां हार्मोन तंत्र के दुष्प्रभावों को विकसित करती हैं इसलिए इन सबसे बचना चाहिए।

पिछले चंद वर्षों के शोध अध्ययन बताते हैं कि हृदय की धमनियों में कैल्शियम का जमाव जनसंख्या के एक बड़े हिस्से में होने लगा है जो कि भविष्य में हार्ट अटैक का सूचक होता है। आज से 50 वर्ष पहले यह 70 वर्ष की उम्र के आसपास देखा जाता था परंतु आजकल 10 से 15 वर्ष के बच्चों में भी सी टी एंजियोग्राफी में इसे हृदय की धमनियों में देखा जाने लगा है। यह एक विषम स्थिति है इसलिए इस बारे में व्यापक जन चेतना की आवश्यकता है वरना निकट भविष्य में 15 से 20 वर्ष के युवा भी स्टेंट लगवाते या बाईपास सर्जरी करवाते नजर आ सकते हैं। शहरी क्षेत्रों में 90 प्रतिशत लोगों के भोजन में फाइबर की कमी पाई जाती है, 75 से 80 प्रतिशत लोग आवश्यकता से कम प्रोटीन का उपभोग कर रहे है और 90 प्रतिशत आवश्यकता से अधिक कार्बोहाइड्रेट्स एवं कैलोरी का सेवन कर रहे है। ये सब घातक प्रवृत्तियां हैं जिन पर स्व अनुशासन की आवश्यकता आज से पहले कभी इतनी ज़्यादा नहीं थी।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

मकर संक्राति : भारतीय संस्कृति का उत्सव

श्वेता यादव

हर साल 14 जनवरी को भारत में मकर संक्राति का पर्व उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व केवल मौसम परिवर्तन का प्रतीक ही नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति, कृषि और आध्यात्मिकता से जुड़ी गहरी परम्पराओं को भी दर्शाता है। इस दिन का महत्व न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी इसका विशेष स्थान है।

मकर संक्रांति का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व– वेदों के अनुसार, मकर संक्राति सूर्य के मकर राशि में प्रवेश का पर्व है, जो दक्षिणायन से उत्तराध्यन की ओर यात्रा का संकेत देता है। हिंदू धर्म में इसे शुभ माना जाता है क्योंकि सूर्य देवता के उत्तरायण होने से सकारात्मक ऊर्जा और जीवन में नई शुरूआत होती है। इस दिन भगवान विष्णु ने बुराई का अंत कर धर्म की स्थापना की थी, इसलिए इसे अच्छाई की विजय के रूप में देखा जाता है।

परम्पराएं और रिवाज– मकर संक्राति पर देश भर में विभिन्न प्रकार की परम्पराओं का पालन किया जाता है। तिल और गुड़ का दान एवं सेवन करना इस पर्व का एक अभिन्न हिस्सा है। तिल को पवित्र माना गया है और यह शरीर को शुद्ध करता है, जबकि गुड़ जीवन में मिठास लाने का प्रतीक है। इस दिन खिचड़ी बनाना और पतंग उड़ाना भी विशेष रूप से लोकप्रिय है। पतंगबाजी से न केवल उत्साह का संचार होता है, बल्कि यह सूर्य की किरणों से विटामिन–डी पाने का एक माध्यम भी है।

देश भर में विविध रूप– मकर संक्राति को देश के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग नामों और परम्पराओं के साथ मनाया जाता है।

–तमिलनाडु में पोंगल– यह चार दिवसीय त्योहार है, जिसमें किसान अपनी फसल की पूजा करते हैं।

–पंजाब और हरियाणा में लोहड़ी– आग जलाकर तिल, गुड़ और मूंगफली अर्पित की जाती है।

–आसाम में भोगाली बिहू– नृत्य और गीतों के साथ फसल की कटाई का उत्सव।

–गुजरात में उत्तरायण– पतंगबाजी का त्योहार।

–महाराष्ट्र में तिल–गुड़ उत्सव– महिलाएं एक–दूसरे को तिल–गुड़ देकर कहती हैं–'तिल गुड़ घ्या, गोड़ गोड़ बोला।'

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण– आयुर्वेद के अनुसार तिल और गुड़ का सेवन शरीर में गर्मी और ऊर्जा प्रदान करता है। यह स्वास्थ्य को मजबूत बनाने और रोगों से बचाने में सहायक है।

संक्रांति का महत्व– मकर संक्राति हमें सिखाती है कि अंधकार के बाद प्रकाश आता है और हर अंत एक नए आरंभ का संकेत देता है। यह त्योहार हमें सकारात्मक सोच, कृतज्ञता और सामाजिक समरसता का संदेश देता है। आइए, इस पर्व पर हम सभी तिल–गुड़ की मिठास से अपने रिश्तों को मजबूत करें और जीवन में नई ऊंचाइयों को छूने का संकल्प लें।

आप सभी को मकर संक्रांति की हार्दिक शुभकामनाएं।

–श्वेता यादव,
स्वतंत्र लेखिका

बाबा साहिब का शताब्दी महोत्सव सम्पन्न

अजमेर। संतो द्वारा दिखाये गये मार्ग से सेवा, समपर्ण, सनातन में अपना जीवन समर्पित करना चाहिये। जिस आश्रम से हमारे पूर्वज जुडे हैं उन्ही आश्रमों व संतो की आज्ञा से अपनी युवा पीढी को जोडकर संस्कारवान बनायें। बाबा ईसरदास की समाधि से हमें आज भी प्रेरणा मिलती हैं ऐसे आर्शीवचन महामण्डलेश्वर हंसराम उदासीन ने ईश्वर मनोहर उदासीन आश्रम में चल रहे बाबा ईसरदास साहिब के शताब्दी महोत्सव पर प्रकट किये। उन्होनें धर्म संसद में पारित प्रस्तावों को समाज में पालन करने का आव्हान किया जिससे सामाजिक कुरीतियों को समाप्त किया जा सके। बाबा ईसरदास के निर्वाण शताब्दी महोत्सव समापन पर महन्त स्वरूपदास उदासीन ने आर्शीवचन देते हुये कहा कि इस सात दिवसीय धार्मिक आयोजन में जिन्होने भी अपना सहयोग तन, मन व धन से दिया है उन्हें बाबा ईसरदास व हमारे बड़े संतों का आर्शीवाद उनके परिवार व समाज को मिलेगा। समापन पर तीर्थराज पुष्कर के महन्त हनुमानराम, किशनगढ से महन्त श्यामदास जी, भीलवाड़ा से गणेशदास जी, चित्तौडगढ़ से स्वामी गुरुदास, स्वामी माधवदास, राजकोट से स्वामी अमरलाल, भावनगर गुजरात से सांई दीपकलाल, फकीर सांई नन्दलाल जी, आदि मौजूद रहे।

जीवदया, पर्यावरण व स्वच्छता का संदेश लिए निकाली चेतना यात्रा

भीलवाड़ा। अपना संस्थान एवं नगर निगम भीलवाड़ा के संयुक्त तत्वाधान में 10 से 14 जनवरी तक आयोजित हरित संगम मेले के चौथे दिन आज जीवदया, पर्यावरण एवं स्वच्छता चेतना यात्रा को उद्योग राज्य मंत्री के.के. विश्नोई ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर संकट मोचन मंदिर के महंत बाबूगिरी जी एवं हाथीभाटा आश्रम के महंत संतदास जी का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। इसके बाद चित्रकूट धाम अवधपुरी में आयोजित कार्यक्रम में विधायक अशोक कोठारी एवं भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा भी शामिल हुए। इस अवसर पर अपना संस्थान प्रांत सचिव विनोद मेलाना, मेला संयोजक राधेश्याम सोमानी, अमरचंद विश्नोई सहित अनेक पदाधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया। उद्योग राज्य मंत्री ने मेले के साथ ही फ्लावर शो का भी अवलोकन किया।

उद्योग राज्य मंत्र के.के. विश्नोई ने हरी झंडी दिखाकर यात्रा को रवाना किया।

अपना संस्थान के अंकुर बोरदिया ने बताया कि रैली में अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणविद जोधपुर उच्च न्यायालय में सहायक रजिस्ट्रार खमुराम बिश्नोई के नेतृत्व में भीलवाड़ा के विश्नोई समाज सहित सैंकड़ों की संख्या में पर्यावरण प्रेमी सम्मिलित हुए। रैली में वृक्षों की रक्षार्थ शहीद अमृतादेवी और मुक्तिधाम मुकाम मंदिर की झांकियां विशेष आकर्षण का केंद्र बनी। रैली को व्यवस्थित रखने के लिए चार मंडल गुरु जम्भ मंडल, समराथल मंडल, अमृतादेवी मंडल एवं गुरु चंद्रप्रकाश जी मंडल बनाए गए। यह चेतना रैली जम्भेश्वर नगर से प्रारंभ होकर गंगापुर चौराहा, अंबेडकर सर्किल, सूचना केंद्र चौराहा होते हुए चित्रकूट धाम अवधपुरी पहुंची, जहां मंचीय कार्यक्रम आयोजित हुआ। यात्रा संयोजक भवानी राम विश्नोई ने बताया कि हरित संगम मेले में विश्नोई समाज एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणविद खमुराम बिश्नोई द्वारा निर्मित पर्यावरण चेतना प्रदर्शनी से भी सैकड़ों लोग प्रेरित हो रहे हैं। जोधपुर से आया विश्नोई समाज का प्रतिनिधिमंडल पिछले 4 दिनों से हरित संगम मेले में पर्यावरण संरक्षण और जीवदया का संदेश दे रहा हैं।

राशिफल मंगलवार 14 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, पुनर्वसु नक्षत्र दिन 10:17 तक, विष्कुम्भ योग रात्रि 2:58 तक, बालव करण दिन 3:39 तक, चन्द्रमा कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–कर्क, बुध–धनु, गुरू–वृष, शुक्र–कुम्भ, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज कुमार योग दिन 10:17 तक है। राजयोग रात्रि 3:22 से आरम्भ होगा। आज माघ संक्रांति, सूर्य मकर राशि में प्रात: 8:55 पर प्रवेश करेगा। पूण्य काल सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात है। आज मकर संक्रांति पर्व है। कुम्भ महापर्व प्रथम शाही स्नान प्रयाग राज, गंगा सागर स्नान और यात्रा है। आज से मल मास समाप्त होगा और आज पोंगल, माघ बिधु और जन्म दिन हजरत अली (मु.) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:59 से 11:17 तक, लाभ–अमृत 11:17 से 1:54 तक, शुभ 3:13 से 4:31 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:51

मेष
परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। घर–परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सार-समाचार

जरूरतमंदों को कंबल बांटे

पुष्कर, । नगर परिषद पुष्कर के निवर्तमान अध्यक्ष कमल पाठक ने कहा कि जरूरतमंदों की मदद के लिए स्वयंसेवी संस्थाएं अहम भूमिका निभाए। परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष पाठक सामाजिक सरोकार के क्षेत्र में अग्रणी संस्था जवाहर फाउंडेशन द्वारा कड़ाके की ठंड में जरूरतमंदों को राहत देने के लिए गर्म वस्त्र वितरण अभियान के शुभारंभ के दौरान जवाहर फाउंडेशन के प्रतिनिधियों से औपचारिक बातचीत कर रहे थे। इस अवसर पर उपमंडल वन संरक्षक सुगनाराम जाट ने कहा कि नर सेवा नारायण सेवा है, इससे बड़ा कोई पुनीत कार्य नहीं हैं। हमें हर संभव जरूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए। जवाहर फाउंडेशन पुष्कर के प्रभारी ताराचंद गहलोत ने बताया कि कड़ाके की ठंड से राहत प्रदान करने के लिए जवाहर फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष रिजु झुनझुनवाला के निर्देशानुसार सोमवार को रेलवे लाइन के पास महात्मा ज्योतिबा फुले राष्ट्रीय स्मारक पर नगर परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष कमल पाठक, उप मंडल वन संरक्षक सुगनाराम जाट के नेतृत्व में निर्धन असहाय दिहाड़ी मजदूरों एवं जरूरतमंदों को 150 कंबल वितरित किए गए। इस अवसर पर जवाहर फाउंडेशन के प्रभारी शिव कुमार बंसल, महेश चौहान, एडवोकेट अरुण वैष्णव, बार कौंसिल पुष्कर अध्यक्ष कुलदीप पाराशर, मामराज सेन, शैलेश गौड़, जगदीश कुर्डिया, दामोदर मुखिया, डॉ. अजय सैनी, मुकेश फुलवारी, मुख्तयार अहमद, नितेश गहलोत सहित बड़ी संख्या में गणमान्य व्यक्तियों ने जरूरतमंदों को कंबल वितरित किए।

सडक सुरक्षा सप्ताह का आयोजन

अजमेर (कासं)। 'संत फ्रांसिस विद्यालय में सोमवार को 'राष्ट्रीय सडक सुरक्षा सप्ताह' का आयोजन किया गया।सडक सुरक्षा सप्ताह समारोह के विशेष अतिथि जिला परिवहन अधिकारी सुमन भाटी तथा सी ओ आयुष वशिष्ठ प्रकाश चन्द जैन रहे। कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विद्यार्थियों को सडक सुरक्षा विषय पर रोचक फ़िल्म दिखाई गई। तत्पश्चात कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुमन भाटी द्वारा बच्चों को यातायात के मुख्य नियमों, सडक चिन्हो का ध्यान रखने, सीट बेल्ट और हेलमेट पहनने और गति सीमा का ध्यान रखने से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई। आयुष वशिष्ठ द्वारा बच्चों को सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करने के लिए प्रतिज्ञा भी दिलवाई गई। विद्यार्थियों द्वारा सड़क सुरक्षा विषय पर प्रश्नोत्तरी का आयोजन भी किया गया।

व्यापारियों ने मनाया पौष बड़ा उत्सव

अजमेर, (कासं)। नारी शाला व्यापारिक एसोसिएशन के व्यापारियों ने सोमवार को पूर्णिमा के अवसर पर लोहडी पर्व पर पौष बड़ा कार्यक्रम आयोजन किया। मुख्य अतिथि श्री अजमेर व्यापारिक महासंघ के उपाध्यक्ष चेतन सैनी, महासचिव रमेश लालवानी ने अशोक नगर नारी शाला चौराहे स्थित महादेव मंदिर में शिव परिवार की विधि विधान से पूजा अर्चना की। रमेश लालवानी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि महासंघ से जुडे व्यापारी पदाधिकारी एवं व्यापारी वर्ग अपने व्यवसाय के साथ-साथ देश हित के कार्य, व्यापारी समस्याओं के समाधान, सामाजिक सरोकार व धार्मिक कार्य करते रहते है। चेतन सैनी ने व्यापारियों की समस्याओ के शीघ्र समाधान की मांग भी की।

मशीन का फीता काट कर किया शुभारंभ

मेड़ता सिटी । मेड़ता उपजिला अस्पताल में मेड़ता लोकप्रिय विधायक लक्ष्मण राम कलरू व जनप्रतिनिधियों द्वारा प्रयोगशाल में नई आधुनिक तकनीकी सीबीसी मशीन का फीता काट कर शुभारंभ किया गया । मेड़ता विधायक कलरू ने बताया कि नई आधुनिक सीबीसी मशीन जिसमें सीबीसी मशीन में रिपोर्टिंग की गुणवत्ता के साथ रिपोर्ट दी जाएगी जिसको लेकर इसका शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता नवरतन मल सिंघवी , पूर्व पालिका अध्यक्ष पवन परतानी, सरपंच राजू गौड़ , सुशील भादू , बलदेव लटियाल , मेड़ता चिकित्सा प्रभारी डॉ रामेश्वर बेनीवाल , डॉ कमलेश गोरा , डॉ ललित चौधरी , , डॉ सुखदेव राव , जब्बर चंद भाटी , ओमप्रकाश माली , गजेंद्र सिंह , सुरेंद्र जांगिड़ , लेब इंचार्ज श्याम सिंह राठौड, हेमाराम चौधरी , अभिषेक वैष्णव सहित कई कार्यकर्ता व स्टाफ मौजूद थे ।

गोवंश के दो पैर कटे मिलने से माहौल गर्माया

भीलवाड़ा। जिले के मंगरोप थाना क्षेत्र स्थित सबलपुरा गांव के बाहर गोवंश के दो पैर कटे मिलने से क्षेत्र का माहौल गर्म गया, इसके साथ ही नजदीक ही एक खेत में पशु अवशेष मिलने की खबर सुनकर बडी संख्या में ग्रामीण जुट गये। ग्रामीणों ने इस मामले में दोषियों पर कार्रवाई की मांग की।

ग्रामीणों ने बताया कि सबलपुरा गैस गोदाम के नजदीक एक गोवंश के पीछे के दो पैर काट दिये जाने की सूचना मिलने पर ग्रामीण मौके पर पहुंचे। सूचना पर एंबुलेंस के साथ ही तहसीलदार भीलवाडा, डीएसपी सदर श्याम सिंह व मंगरोप थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों ने बताया कि गोवंश को उपचार के लिए नजदीक ही कृष्ण गोशाला ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उपचार किया।

ग्रामीणों का कहना है कि घायल नंदी के पास से खून के निशान देखते हुये ग्रामीण एक खेत पर पहुंचे। जहां एक झोंपड़ी बना रखी थी।

बताया जा रहा है कि इसी झोपडी से घायल गोवंश निकलकर आये थे। ग्रामीणों ने जब वहां छानबीन की तो वहां गौवंश के कटे हुई कई अवशेष मिले। चमड़ी, बछडों के छोटे-छोट पैर भी मिले।

ग्रामीणों ने कहा कि बेरहमी के साथ नंदी के दोनों पैर असामाजिक तत्वों ने काट दिये। ग्रामीणों ने कहा कि गौवंश पर हो रहे अत्याचार से ग्रामीणों के साथ ही गौभक्तों और हिंदू संगठनों में भी रोष देखा गया। ग्रामीणों ने पुलिस व प्रशासन से इस मामले में दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। वहीं सूत्रों की माने तो पुलिस ने एक संदिग्ध को इस मामले में डिटेन किया है।

सिन्ध की भूमि पाने के लिए अंतिम क्षण तक हो प्रयास:लोहाणा

अजमेर, 13 जनवरी (कासं)। यह हमारा सौभाग्य है कि हम आज महाराजा दाहरसेन की स्मृति स्थल पर है, जिन्होने अपना पूरा परिवार मातृ भूमि की रक्षा के लिए न्योछावर कर दिया, ऐसी भावना हम में भी जागृत है कि सिन्ध की भूमि को अपने अन्तिम क्षण तक पाने के लिए हम प्रयासरत रहेंगे। ऐसे प्रेरणा केन्द्र के लिए हम ओंकार सिंह लखावत का धन्यवाद व आभार प्रकट करते है और उनकी प्रेरणा से जो बलिदान दिवस व जयन्ती मनाते है, हम भी ऐसे आयोजन देश-विदेश में भी करेंगे, यह विचार लंदन से आए वर्ल्ड सिन्धी कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. लखू लोहाणा ने सोमवार को सिन्धुपति महाराजा दाहरसेन स्मारक पर अवलोकन करते हुए कहे। उन्होने सिन्ध में स्वतंत्रता आंदोलन में सिन्ध के वीर महापुरूष राणा रतन सिंह, रूपलो कोल्ही, हेमू कालाणी व अन्य प्रतिमाओं पर पुष्प अर्पित किए, हिंगलाज माता की पूजा अर्चना, सिन्ध के मानचित्र पर रक्षासूत्र बांधकर सिन्ध की भूमि हमें वापस मिले। अजमेर प्रवास पर आए डॉ. लखू लोहाणा व उनके साथियों ने महाण्डलेश्वर हंसराज उदासीन व अन्य संतों से भेंट कर आर्शीवाद प्राप्त किया व सिन्धु इतिहास एवं साहित्य शोध संस्थान पर एकत्रित सिन्धी साहित्य के संकलन को देख कर आनन्दित हुएए जिसमें सिन्ध के संत महात्मा, स्वतंत्रता सेनानियों, सिन्धु नदी, मोहन जो दड़ों व सिन्धुघाटी सभ्यता का इतिहास व चित्रों को देखकर अभिभूत हुए व शोध संस्थान के अध्यक्ष कंवल प्रकाश किशनानी ने साहित्य की पुस्तके भेंट की।

शताब्दी महोत्सव संपन्न

अजमेर, (कासं)। संतो द्वारा दिखाये गए मार्ग से सेवा, समपर्ण, सनातन में अपना जीवन समर्पित करना चाहिए, जिस आश्रम से हमारे पूर्वज जुडे हैं उन्ही आश्रमों व संतो की आज्ञा से अपनी युवा पीढी को जोडकर संस्कारवान बनाए। बाबा ईसरदास की समाधि से हमें आज भी प्रेरणा मिलती है, ऐसे आशीर्वाचन महामण्डलेश्वर हंसराम उदासीन ने सोमवार को ईश्वर मनोहर उदासीन आश्रम में चल रहे बाबा ईसरदास साहिब के शताब्दी महोत्सव के समापन अवसर पर कहे। बाबा ईसरदास के निर्वाण शताब्दी महोत्सव समापन पर महन्त स्वरूपदास उदासीन ने कहा कि इस सात दिवसीय धार्मिक आयोजन में अपना सहयोग दिया है, उन्हें बाबा ईसरदास व हमारे बड़े संतों का आशीर्वाद परिवार व समाज को मिलेगा।

दिव्यांग उपकरण शिविर 16 को

मसूदा, (निसं)। जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा मसूदा पंचायत समिति में कोई भी पात्र दिव्यांगजन अंग / उपकरण से वंचित न रहेइसको लेकर राजस्थान सरकार के वर्ष 2024-25 की बजट घोषणा संख्या 92 (1) उपमुख्यमंत्री द्वारा दिव्यांगजनों को संबल प्रदान करने की दृष्टि से बीस हजार तक के अंग उपकरण उपलब्ध कराए जाने हेतू पंचायत समिति मुख्यालयों पर निम्नानुसार शिविर आयोजित किए जाएंगे इसी के तहत मसूदा पंचायत समिति के सभागार में गुरुवार 16 जनवरी को प्रात: 10 बजे से शाम 4 बजे तक दिव्यांगजनों को अंग उपकरण उपलब्ध कराने के लिए पात्र लोगों का चिन्हिकरण (श्री भगवान महावीर सेवा समिति द्वारा अंग उपकरण उपलब्ध करवाये जायेंगे)। दिव्यांगजनों को स्वावलंबन पोर्टल पर आवेदन करवाकर नवीन यूडीआईडी कार्ड जारी करना एवं ऐसे दिव्यांगजन जिनकाऑफलाईन दिव्यांगता प्रमाण पत्र बना हुआ है को डिजिटल प्रमाण पत्र जारी करना।दिव्यांगजनों को रोडवेज पास जारी करना।विभागीय योजनओं जैसे स्वरोजगार ऋण योजना, सुखद दाम्पत्य योजना, छात्रवृति योजना एवं दिव्यांग पेंशन एवं पालनहारयोजना के नवीन आवेदन करवाना।अन्य योजनाएं जो दिव्यांगजनों से संबंधित है के आवेदन प्राप्त कर लाभान्वित करना। आवश्यक दस्तावेज: शिविर में आने वाले दिव्यांगजन अपने साथ स्वयं की 01 दिव्यांगता दर्शाती हुई फोटो, आधार कार्ड, जनआधार कार्ड, यूडीआईडी कार्ड/दिव्यांगता प्रमाण पत्र, पेंशन पीपीओ की आदेश कॉपी एवं जिनके पास पहले से ऑफलाईन बना हुआ दिव्यांग प्रमाण पत्र है साथ लेकर उपस्थित हों।

भाजपा मंडल अध्यक्ष ने होनहार छात्रा को स्कूटी दी

सरवाड़। सरवाड़ शहर मे स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय की होनहार छात्रा सुश्री माहेनूर खानम शेख को राज्य सरकार की तरफ से कॉलेज शिक्षा विभाग द्वारा स्कूटी प्रदान की गई वहीं भाजपा मंडल अध्यक्ष प्यारेलाल खटीक ने होनहार छात्रा सुश्री माहेनूर खानम शेख को राज्य सरकार की और से स्कूटी प्रदान कर उसके उज्ववल भविष्य की कामना की गई इस अवसर पर भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चे की प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य फरीद मोहम्मद शेख सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहें।

पतंगबाजी के दौरान बिजली लाइनों से बनाए दूरी

■ डिस्कॉम एमडी ने की सावधानी बरतने की अपील

अजमेर, (कासं)। अजमेर विद्युत वितरण निगम ने पतंगबाजी के दौरान होने वाले हादसों से बचने के लिए सुरक्षा उपाय साझा करते हुए डिस्कॉम एमडी केपी वर्मा ने सोमवार को एक वीडियो जारी कर आमजन व उपभोक्ताओं से सावधानी बरतने की अपील की है। अजमेर डिस्कॉम के एमडी केपी वर्मा ने कहा कि बिजली लाइन के आसपास पतंग उड़ाने के दौरान बिजली दुर्घटनाओं के प्रकरण ज्यदा देखने में आते है। निगम ने पतंगबाजी के दौरान सावधानी बरतने की अपील की है। किसी भी व्यक्ति को बिजली लाइन के संपर्क में आने के संभावित खतरे को कम नहीं आंकना चाहिए। पतंग, चाईनीज मांझे बिजली की लाइन छूने पर करंट, पतंग उड़ानेवाले व्यक्ति तक पहुंच सकता है। मकानों के पास से गुजर रही बिजली की लाइनों के आसपास पतंग उड़ाते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड IDFC FIRST Bank

(पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है)

CIN : L65110TN2014PLC097792

पंजीकृत कार्यालय - केआरएम टॉवर्स, 8वीं मंजिल, हैरिंगटन रोड, चेटपेट, चैन्नाई-600031

फोन- +91 44 4564 4000 | फैक्स- +91 44 4564 4022

वित्तीय अस्तियों के प्रतिभूतिकरण व पुनर्निर्माण एवं ब्याज प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के सैक्शन 13 (2) के तहत नोटिस

निम्न ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं ने नीचे वर्णित आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड का सिक्योर्ड ऋण (पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) से लिया था। निम्नलिखित ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं के ऋण उनकी अपनी-अपनी सम्पत्तियों के गिरवी रखने से सुरक्षित है। क्योंकि उन्होंने अपने-अपने ऋण एग्रीमेन्टस के नियम व शर्तों की पालना नहीं की है और अनियिमित हो गये है, उनके ऋणों को आरबीआई की गाइडलाइन्स के अनुसार एनपीए वर्गीकृत कर दिया गया है। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को देय राशियाँ उनके पृथक नोटिस में लिखी गयी है तथा और विशेष रूप से निम्न सूचि में वर्णित है और उक्त राशियों पर आगे का ब्याज भी लागू होगा तथा वह उनकी अलग-अलग तिथियों से समझौते की प्रभावी दर से वसूला जायेगा।

क्रम संख्या	ऋण खाता संख्या	ऋण का प्रकार	ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं के नाम	सैक्शन 13(2) के नोटिस की तिथि	सैक्शन 13(2) नोटिस के अनुसार बकाया राशि
1	82465924	सम्पत्ति पर ऋण	1. गजेन्द्र सिंह, 2. सजन कंवर 3. थापू कंवर	21.12.2024	4,21,324.97/-

सम्पत्ति पता- प्लाट पट्टा नं. 18, बुक नं. 26, प्लाट एरिया 1758.13 वर्गफिट अर्थात 195.35 वर्गगज, ग्राम एवं ग्राम पंचायत-गोट्रास, पंचायत समिति-डीडवाना, जिला-नागौर, राजस्थान 341305 का पूरा व प्रत्येक भाग और सीमायें है पूर्व-आम रास्ता, पश्चिम-स्वयं का रास्ता व निकल पेसर, उत्तर-जगमाल सिंह पुत्र इन्द्र सिंह, दक्षिण-मनोहर सिंह

क्रम संख्या	ऋण खाता संख्या	ऋण का प्रकार	ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं के नाम	सैक्शन 13(2) के नोटिस की तिथि	सैक्शन 13(2) नोटिस के अनुसार बकाया राशि
2	151759205	गृह ऋण	1. पप्पू राम 2. नारायण राम	28.12.2024	3,76,275.90/-

सम्पत्ति पता- प्लाट पट्टा नं. 46, बुक नं. 49, प्लाट एरिया 54.77 वर्गगज, ग्राम-फोगडी, ग्राम पंचायत-फोगी, पेथायन समिति-भोलासर, जिला-नागौर, वर्तमान के तथा नया जिला-डीडवाना कुचामन, राजस्थान 341303 का पूरा व प्रयेक भाग और सीमाये है पूर्व-मांगीलाल, पश्चिम-आम रास्ता, उत्तर-पेनाराम देवाराम का मकान, दक्षिण -आम रास्ता

क्रम संख्या	ऋण खाता संख्या	ऋण का प्रकार	ऋणग्रहिताओं एवं सहऋणग्रहिताओं के नाम	सैक्शन 13(2) के नोटिस की तिथि	सैक्शन 13(2) नोटिस के अनुसार बकाया राशि
3	72073179	सम्पत्ति पर ऋण	1. राजेन्द्र सिंह 2. भंवर कंवर	28.12.2024	5,93,937.56/-

सम्पत्ति पता- प्लाट/मकान पट्टा नं. 56, मिसल नं. 10, प्लाट एरिया 19,200 वर्गफिट ग्राम-सेवा, आनन्दी मोहल्ला भाटी बगल, ग्राम पंचायत-डीडवाना, पंचायत समिति-डीडवाना, तहसील डीडवाना, जिला नागौर, राजस्थान-341303 का पूरा व प्रत्येक भासग, और सीमाये है पूर्व-आमरास्ता, पश्चिम-जीवन सिंह, उत्तर-आम रास्ता फिर ज्ञान सिंह, दाणि-गुलाब सिंह

आपको एतदद्वारा, इस प्रकाशन के 60 दिन के अन्दर, ऊपर सूचि में दर्शायी राशियों को उनकी प्रथम तिथि से, उस पर लगे आगे के समझौते में ब्याज दर तथा अन्य खर्चों, चार्ज आदि सहित आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लि. (पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को भुगतान करने को कहा जा रहा है, यदि ऐसा नहीं हुआ, तो अधोहस्ताक्षरकर्ता को, एसएआरएफएइएसआई एक्ट के सैक्शन 13(4) तथा सैक्शन 14 के तहत, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड (पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) को देय राशि वसूल करने के लिये, गिरवी रखी सम्पत्तियों के खिलाफ कार्यवाही शुरू करने के लिये बाध्य होना पडेगा/इसके अलावा उक्त एक्ट के सैक्शन 13 (13) के तहत आप उक्त सम्पत्तियों को बिक्री/लीज अथवा किसी अन्य प्रकार से ट्रांसफर नहीं करने के लिये प्रतिबंधित है।

ह./-

दिनांक- 14.01.2025

स्थान- नागौर

प्राधिकृत अधिकारी

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड

(पूर्व में कैपिटल फर्स्ट लिमिटेड, आईडीएफससी बैंक लिमिटेड के साथ सम्मिलित और वर्तमान में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक लिमिटेड के नाम से जाना जाता है)

बस पलटने से एक दर्जन से अधिक यात्री घायल

स्लीपर बस उज्जैन से पुष्कर के लिए जा रही थी

भीलवाड़ा। जिले के मांडल थाना क्षेत्र के धूल खेड़ा के पुलिया पर स्लीपर बस पलट गई। बस पलटने के चलते एक दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए हैं।

सोमवार को सुबह 6:00 बजे के आसपास मांडल थाना क्षेत्र के धूल खेड़ा के पास स्थित ओवर ब्रिज पर धार्मिक यात्रा के लिए जा रही स्लीपर बस पलट गई, यह स्लीपर बस उज्जैन से पुष्कर के लिए जा रही थी, अचानक ओवर टेक करने के चक्कर में बस हाईवे के डिवाइडर पर पलट गई जैसे ही बस पलटी इस दौरान वहां पर शोर शराबा सुनकर आसपास से गुजर रहे वाहन चालक एवं ग्रामीण मौके पर पहुंचे, वहीं मांडल थाना पुलिस को भी जानकारी दी सूचना मिलते ही मांडल थाने के एएसआई पृथ्वीराज सहित कहीं पुलिसकर्मी जापते के साथ मौके पर पहुंचे। दुर्घटना के बाद 108 एंबुलेंस पायलट प्रभु प्रजापत और मेल नर्स रवि वर्मा भी मौके पर पहुंचे और घायल लोगों को बस से निकाला गया 108 एंबुलेंस सहित हाईवे की एंबुलेंस के माध्यम से भीलवाड़ा के महात्मा गांधी हॉस्पिटल में ले जाया गया। वही मांडल थाना पुलिस द्वारा यातायात को सुचारू रूप से चालू करने के लिए प्रयास किया जा रहे हैं। एक दर्जन से अधिक यात्रियों के घायल होने की सुचना है सभी को भीलवाड़ा के महात्मा गांधी अस्पताल ले जाया गया। हादसे में जनहानि नहीं हुई, लेकिन 25 लोग घायल हुए जिनमे से 21 लोगों को एमजी हॉस्पिटल लाया गया, जहां 12 गंभीर घायलों को भर्ती कर उपचार किया जा रहा है, बाकी को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई है। हादसे में मीना गुप्ता / राम बिहारी उम्र 58 वर्ष निवासी झांसी, हरिमोहन कुशवाह पुत्र पन्नालाल उम्र 39 वर्ष निवासी झांसी

■ ओवर टेक करने के चक्कर में बस हाईवे के डिवाइडर पर पलट गई

महिपाल सिंह पुत्र रघुवीर सिंह उम्र 70 वर्ष निवासी झांसी, ममता विश्वकर्मा / दीपक विश्वकर्मा उम्र 40 वर्ष निवासी झांसी, लक्ष्मी गुप्ता / सीताराम गुप्ता उम्र 66 वर्ष बासी लालपुर उत्तर प्रदेश, गोविंद प्रसाद पुत्र जानकी प्रसाद उम्र 62 वर्ष निवासी चंद्रेरा मध्य प्रदेश, रघुवीर प्रसाद पुत्र नाथूराम साहू उम्र 63 वर्ष चंद्रेरा मध्य प्रदेश, ममता साहू / सुरेश साहू उम्र 47 वर्ष पलेरा टीकमगढ़ मध्य प्रदेश घायल हो गए। हादसे की सूचना मिलने के बाद शहर विधायक अशोक कोठारी एमजी हॉस्पिटल पहुंचे और घायलों की कुशलक्षेम पूछी साथ ही मेडिकल स्टाफ को घायलों के इलाज को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

जिले के मांडल थाना क्षेत्र के धूल खेड़ा के पुलिया पर पलटी स्लीपर बस।

पाली में तेज रफ्तार स्कॉर्पियो पलटी, 2 की मौत

पाली, (नि.सं.)। पाली में रविवार की शाम एक तेज रफ्तार स्कॉर्पियो पलटी खा गई। हादसे में गाड़ी में सवार 2 लोगों की मौत हो गई। वहीं 6 जने घायल हो गए। इनमें से 2 को जोधपुर रेफर किया गया। हादसे में गाड़ी भी चकनाचूर हो गई।

पुलिस के अनुसार पाली शहर के मंडिया बाईपास के पास रूपावास रोड पर रविवार की शाम करीब साढ़े 5 बजे तेज रफ्तार स्कॉर्पियो अनबैलेंस हो गई ओर गाड़ी 5 से 6 बार पलटी खा गई। इससे गाड़ी में सवार पाली के सुभाष नगर बी निवासी राणाराम (22) की मौके पर मौत हो गई ओर सुमित पुत्र महेंद्र वाल्मीकि निवासी बापूनगर के जोधपुर रेफर के बाद बीच रस्ते में उसने दम तोड़ दिया।

■ 6 में से 2 गंभीर घायल जोधपुर रेफर, रूपवास के पास हुआ हादसा

सूचना पर मौके पर पहुंचे 108 एम्बुलेंस के पायलेट अमित, ईएमटी श्रवण प्रजापत ने घायलों को एम्बुलेंस में ही प्राथमिक उपचार दिया और सभी 6 घायलों को लेकर बांगड़ हॉस्पिटल लेकर पहुंचे। जिनमें से 2 की हालत गंभीर होने पर जोधपुर रेफर कर दिया गया। जानकारी मिलते ही घायलों के परिजन हॉस्पिटल पहुंचे। मौके पर पुलिस की टीम भी पहुंची। इस दौरान परिजनों ने एक-दूसरे को सांत्वना दी।

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

Indigenous Furniture हेतु दर संविदा

(ई -बोली आंमत्रण सूचना संख्या 05/2024-25 (क्रमांक 299 दिनांक 09.01.2025))

इस विश्वविद्यालय के अधीनस्थ ईकाइयों में Supply of Indigenous Furniture हेतु दो कवर बिड (तकनीकी व वित्तीय बिड) में दर संविदा हेतु ऑनलाइन ई-बोली आंमत्रित की जाती है, जिसमें पंजीकृत फर्मों हेतु डी.एस.सी. के माध्यम से दिनांक 08.01.2025 से 28.01.2025 को सांय 5.00 बजे तक बोली प्रपत्र डाउनलोड कर अपलोड कर सकते है। UBN No. : VAU2425GLRC00117 का विस्तृत विवरण स्टेट पोर्टल की वेबसाईट htttp//sppp.raj.nic.in विभाग की वेबसाईट www.rajuvas.org एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

राज.संवाद/सी/24/10254 वित्त नियंत्रक

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

Stationery Articles हेतु दर संविदा

(ई -बोली आंमत्रण सूचना संख्या 06/2024-25 (क्रमांक 300 दिनांक 09.01.2025))

इस विश्वविद्यालय के अधीनस्थ ईकाइयों में Supply of Stationery Articles हेतु दो कवर बिड (तकनीकी व वित्तीय बिड) में दर संविदा हेतु ऑनलाइन ई-बोली आंमत्रित की जाती है, जिसमें पंजीकृत फर्मों हेतु डी. एस. सी. के माध्यम से दिनांक 11.01.2025 से 30.01.2025 को सांय 5.00 बजे तक बोली प्रपत्र डाउनलोड कर अपलोड कर सकते है। UBN No. : VAU2425GLRC00118 का विस्तृत विवरण स्टेट पोर्टल की वेबसाईट htttp//sppp.raj.nic.in विभाग की वेबसाईट www.rajuvas.org एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

राज.संवाद/सी/24/10255 वित्त नियंत्रक

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

टोडरमल लेन, सिविल लाईन्स, अजमेर

Website:-www.rajasthan.gov.in/ada Email:- ajmerada@gmail.com

Tel. No. :- 0145-2627748-2627749

क्रमांक अविप्रा / प.2 / तकनीकी / 2024–25 / 12976078 दिनांक : 13.01.2025

ई–निविदा सूचना संख्या 37/2024–25

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर की ओर से विभिन्न कार्यो की अनुमानित लागत राशि 309.55 लाख की ई–निविदा दिनांक 27.01.2025 को सांय 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट (http:://eproc.rajasthan.gov.in) एवं (http:://sppp.raj.nic.in) http:://www.urban.rajasthan.gov.in/ada पर देखा जा सकता है।

UBN: AJD2425WSOB00213-223

राज.संवाद / सी / 24 / 10295 अधिशाषी अभियन्ता

THE RAJASTHAN SMALL INDUSTRIES CORPORATION LTD.

UdyogBhawan, TilakMarg, C-Scheme, Jaipur 302005

Phone: 0141-2227267 * Fax 0141-2227257

Website: Industries. Rajasthan. Gov.in/rajsico

E-mail:rajsico@rajasthan.gov.in CIN:- U91110RJ1961SGC001118

NOTICE INVITING BIDS

UBN No. : RSI2425SLOB00040

RSIC is inviting online Bids for selection of **"Strategic Business promoter to Equip, Operate, Manage & Transfer Business Services at ICD Jodhpur from the eligible and experienced bidders"** up to 5.00 PM dated 10.02.2025

Other details/ terms and condition of the bid may be seen on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in, https://sppp.rajasthan.gov.in) of the state

The approximate value of the procurement is INR 25 Crores.

UBN No : RSI2425SLOB00040

Raj.Samwad/C/24/10202 Managing Director

किडनैपर ने सड़क किनारे रोककर बनाए 'रुद्र' के वीडियो

श्रीगंगानगर। शहर के रामदेव कॉलोनी इलाके से आठ जनवरी को किडनैप किए बच्चे रुद्र के किडनैपर्स उसे पंजाब के उस्मान खेड़ा और गुमजाल की रोही में ले गए। यह स्थान श्रीगंगानगर से करीब 25-30 किलोमीटर दूर है। यहां सड़क किनारे खुली जगह मोटरसाइकिल रोकी, वहां बच्चे के खुले मैदान में घूमते के वीडियो बनाए और उन्हें बच्चे के पड़ोस में एक जिम के संचालक को भेज दिया। जिम संचालक से इन लोगों ने बात की और उन्हें बच्चे की किडनैपिंग की जानकारी देते हुए उनसे परिजनों के नंबर लिए। मामले की जांच कर रहे सदर थाने के एएसआई हंसराज ने बताया कि किडनैपर अपहरण कर जाते समय जिम के बाहर लगे फलैक्स से जिम का नंबर ले गए थे। इसी के जरिए उन्होंने जिम संचालक से संपर्क साधा।

आरोपी खाटलबाना निवासी दीपक कुमार उर्फ दीपू और निखित उर्फ लिखित उर्फ लक्की पिछले दिनों चंडीगढ़ रहकर आए थे। वहां के शानदार लाइफ स्टाइल को देखकर उन्होंने एकमुश्त रुपया कमाने के बारे में सोचा। इसके लिए किडनैपिंग का प्लान बनाया। तीन से पांच जनवरी तक शहर के अलग-अलग हिस्सों में रैकी की लेकिन कोई ऐसा बच्चा नहीं मिला जिसे वे किडनैप कर सकें। छह जनवरी को इन लोगों ने रामदेव कॉलोनी पहुंचने के दौरान जिम के बाहर बच्चे रुद्र को खेलते देखा। इसके बाद इन लोगों ने रुद्र को किडनैप करने का प्लान बनाया। दो दिन उससे बातचीत कर दोस्ती की। जब बच्चा उनसे घुल-मिल गया तो आठ जनवरी को फिर से रामदेव कॉलोनी आए। यहां बच्चे को जिम के पास अकेला देखकर उसे पतंग दिलाने का झांसा दिया और मोटरसाइकिल पर बैठा ले गए।

तीन कारों में लगी आग, हादसे में कोई जनहानि नही

उदयपुर। प्रतापनगर थाना क्षैत्र में तीन कारों में अचानक आग लग गई। हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई। प्राप्त जानकारी के अनुसार सोमवार तडके प्रतापनगर थानाक्षैत्र देबारी में स्थित खाली भूखण्ड में रखी तीन कारों में अचानक आग लग गई।

इसकी सूचना मिलने पर प्रतापनगर थाना पुलिस ने मौके पर पहुंच कर फायर ब्रिगेड को सूचना दी। इस पर सुन्दरवास फायर स्टेशन से दो गाड़ियों ने मौके पर पहुंच कर करीब एक घंटे में आग पर काबू किया। जब तक कारें पुरी तरह जल कर नष्ट हो चुकी थी। हादसे में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। आग लगने के कारणों का पता नहीं चल पाय। कारें रिपेयरिंग के लिए बाडे में खड़ी करने की जानकारी सामने आई है। जांच के बाद ही वास्तविकता का पता चल पाएगा।

बस-जीप की टक्कर में पति-पत्नी समेत 3 लोगों की मौत

श्रीगंगानगर। जिले के पदमपुर के सीसी हेड के पास सोमवार सुबह करीब सवा 8 बजे रोडवेज बस और बोलेरो जीप की जोरदार टक्कर हो गई। हादसे में जीप सवार पति-पत्नी समेत 3 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में 2 महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गई। यह परिवार पंजाब में शोक में शामिल होने जा रहा था।

हादसा कोहरे के कारण हुआ। हादसे के बाद सड़क पर जाम लग गया। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने वाहनों को सड़क किनारे करवाया तथा घायलों को अस्पताल पहुंचाया। वहीं मृतकों के शव सरकारी अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाए। श्रीगंगानगर से रोडवेज की बस सुबह 7 बजे बीकानेर के लिए रवाना हुई। यह सुबह करीब 8 बजे पदमपुर के पास पहुंची। इसी दौरान सामने से आ रही जीप से इसकी टक्कर हो गई। हादसा इतना जबरदस्त था कि टक्कर से जोरदार धमाका हुआ और जीप का आगे का हिस्सा पूरी तरह डैमेज हो गया। धमाके की आवाज सुनकर आसपास खेतों में काम कर रहे लोग मौके पर दौड़े और जीप सवार घायलों को निकाला। मौके पर 3 लोगों की मौत हो चुकी थी।

बस श्रीगंगानगर से बीकानेर के लिए रवाना हुई थी, वहीं जीप गांव 33 एमएल से पंजाब की तरफ जा रही थी। इसमें 5 लोग सवार थे। घटना की जानकारी मिलते ही पदमपुर एसएचओ सुरेंद्र राणा और पुलिस टीम मौके पर पहुंची। शव पदमपुर के सरकारी अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाए गए हैं। हादसे में घायल जीप सवार 2 महिलाओं की भी हालत गंभीर बनी हुई है। उन्हें हायर सेंटर रेफर किया गया है।

बस श्रीगंगानगर से बीकानेर के लिए रवाना हुई, जबकि जीप में सवार लोग गांव 33 एमएल से पंजाब के लिए रवाना हुए थे। जीप स्पीड में थी। सीसी हेड के पास पहुंचने पर इसके आगे एक ट्रैक्टर-ट्रॉली चल रही थी। जीप के ड्राइवर ने ट्रैक्टर-ट्रॉली को ओवरटेक कर आगे बढ़ ने का प्रयास किया। इस दौरान जीप सामने से आ रही रोडवेज बस से टकरा गई। हादसे में बस में सवार एक बच्ची के होठ पर मामूली चोट लगी है। इसके अलावा बस में किसी सवारी को कोई चोट नहीं आई। जीप सवार 2 घायलों की हालत गंभीर होने पर उन्हें हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है। तीन मृतकों में एक महिला भी शामिल है।

जयपुर विकास प्राधिकरण

इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302004

क्रमांक: जविप्रा/अधि.अभि. (विद्युत-I)/जॉब नं.265/2024-25/ डी-773 दिनांक: 13.01.2025

बिड आमंत्रण सूचना

बिड संख्या - 09/2024-25

जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा **"Annual Rate Contract (ARC) for Shifting/ Dismantling of LT/HT Lines and Electrification works in JDA Region, Jaipur"** जिसकी अनुमानित राशि **रू. 186.97** लाख के लिए ऑनलाईन बिड्स दिनांक 27.01.2025 सायंकाल 6:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा बोली का ऑनलाईन आवेदन व भुगतान जयपुर विकास प्राधिकरण पोर्टल पर करने की अन्तिम तिथि 27.01.2025 को सायंकाल 6:00 बजे तक है। निविदा बोली के दस्तावेजों का विस्तृत विवरण **www.sppp.rajasthan.gov.in, www.eproc.rajasthan.gov.in** and **https://jda.rajasthan.gov.in** पर देखा जा सकता है।

निविदा में भाग लेने वालों को निम्न शर्तों की पूर्ति करनी होगी- 1. निविदादाता जयपुर विकास प्राधिकरण की वेबसाईट **https://jda.rajasthan.gov.in** पर पंजीकृत हो एवं निविदा में भाग लेने के लिए बोलीदाता को आवेदन करने के लिए दस्तावेज शुल्क, अमानत राशि, आर.आई.एस.एल.प्रोसेसिंग शुल्क ऑनलाईन जमा करनी होगी।

2. ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने के लिए निविदादाताओं का राजस्थान सरकार के ई-प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल **www.eproc.rajasthan.gov.in** पर पंजीकृत हो।।

(UBN No. JDA2425WSRC00448)

राज.संवाद/सी/24/10298 **अधिशाषी अभियन्ता - (विद्युत-I)**

छेड़छाड़ का मामला दर्ज

उदयपुर। शहर के नाई थाना पुलिस ने होटल कर्मी के खिलाफ पीडिता के साथ छेड़छाड़ का मामला दर्ज किया है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीडिता ने आरोपी होटल फतहगढ बूझड़ा के कर्मचारी अरविन्द के खिलाफ छेड़छाड़ करने का प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें पीडिता ने बताया कि मैं महाराष्ट्र में एक परिवार में काम करती हूं। उनके परिवार के साथ 12 जनवरी को बूझड़ा स्थित होटल फतहगढ पहुचे जहां होटल कर्मचारी कमरें में एक्सट्रा बेड लगा बाहर निकल रहा था। उस दौरान उसने मेरे साथ छेड़छाड़ की इसका विरोध कर चिल्लाने पर वह भाग गया। कुछ समय बाद वापस पानी व टॉवेल लेकर आया तब उसे पहचान कर जिनके साथ आई उनकों घटना की जानकारी दी। इस पर पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया।

सफेद रंग के विचित्र जानवर से लोगों में डर

पाली के आकेली गांव में सफेद रंग के विचित्र जानवर ने 2 को नोंचा, बछड़े पर झपटा

पाली, (नि.सं.)। पाली शहर से 7 किलोमीटर दूर आकेली गांव के बावरियों का बास ढाणी में विचित्र जानवर की दहशत है। रविवार सुबह 5 से 5.30 बजे के बीच एक जानवर ने गांव के दो लोगों और एक बछड़े को जख्मी कर दिया। दोनों घायलों का कहना है कि वह सफेद रंग का विचित्र प्राणी था, उसे पहले कभी नहीं देखा। गांव आकेली में अजीब जानवर की अफवाह के बीच सदर थाना पुलिस ने वन विभाग को सूचना दी है। थाना सदर थाना इंचार्ज अनिल विश्नोई ने कहा कि थाना इलाके के आकेली गांव में अनजान जानवर के हमले की सूचना मिली थी। इस पर एएसआई नरपत सिंह को मौके पर भेजा था। हमले में घायल दो ग्रामीणों का पाली के बांगड़ हॉस्पिटल में इलाज कराकर छुट्टी दे दी गई। वन विभाग को सूचना दे दी है।

आकेली गांव के पूर्व सरपंच बाबूलाल बंजारा ने बताया कि रविवार सुबह कुछ ग्रामीणों का फोन आया था। बताया कि विचित्र टाइप दिखने वाले जानवर ने गांव के कानाराम पर जानवर ने हमला कर दिया। इसके बाद कुछ दूर बाड़े में बंधे बछड़े के चेहरे को नोंचा। इसके बाद गांव के ही एक युवक पर झपटकर जंगल में गायब हो गया। विचित्र जानवर की मौजदूगी से गांव वालों में दहशत है। वन विभाग और प्रशासन से अपील है कि जल्द जानवर का पता लगाकर उसे पकड़ा जाए। पशुपालन और खेती करने वाले ग्रामीण कानाराम बावरी (64) पुत्र कूपाराम के बायें हाथ के अंगूठे, दायें हाथ की कलाई और चेहरे पर जख्म हैं।

कानाराम ने बताया कि मेरे मकान के सामने पशु बाड़ा है। मैं बाड़े में बनी झोंपड़ी में सो रहा था। पास में पालतू कुत्ता सो रहा था। सुबह 4 बजे के करीब कुत्ता जोर-जोर से भोंकने लगा। मैंने एक बार उठकर देखा। कुछ नहीं था। मैं सो गया।

सुबह 5 बजे के करीब मुझ पर किसी जानवर ने हमला कर दिया। मेरे हाथ और मुंह पर काट लिया। मैं चिल्लाया तो जानवर मुझे छोड़ झोपड़ी से बाहर निकल गया। मैं भी डंडा लेकर पीछे भागा। जो जानवर देखा उसे पहले कभी नहीं देखा था। वह न तो लेपर्ड था, न डॉग। न जरख था। सफेद रंग का था।

वन विभाग पाली के रेंजर प्रकाश कुमार ने बताया कि पुलिस की सूचना पर वनरक्षक नेमाराम, चौकीदार आलम खान को मौके पर भेजा था। पगमार्क नहीं मिले हैं। लोग जिस विचित्र जानवर की बात कर रहे हैं, ऐसा जानवर मैंने मेरी सर्विस के 10 साल में नहीं देखा है। फिर भी जांच अभी जारी है।

नरपतसिंह ने बताया कि ग्रामीणों की सूचना पर मैं स्टाफ के साथ मौके पर गया था। गांव के 20-25 लोगों के साथ 2 घंटे तक खोजबीन और घटनास्थलों की जांच की। जानवर नहीं मिला। वन विभाग के अधिकारियों को सूचना दी है।

बालश्रमिक दलालों के खिलाफ प्रकरण दर्ज

उदयपुर। बालश्रमिकों को मजदूरी करने के लिए बाहर भेजने वाले आरोपियों की वीडियों वायरल होने पर पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया है।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार गत दिनों फलासिया थाना क्षैत्र दमाणा गांव से बाल श्रमिकों को गुजरात मजदूरी कराने के लिए लेजाने तथा उन्हें वहां दिए जाने वाले वेतन व सुविधा को लेकर श्रमिकों के परिजनों से बातचीत करने का वीडियों वायरल होने पर पुलिस ने आरोपी मोतीलाल पुत्र कन्हैयालाल, बंशीलाल पुत्र कन्हैयालाल निवासी पटेला फला दमाणा के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया। आरोपी गांव से बाल श्रमिकों को गुजरात मजदूरी कराने ले जाते व वेतन व अन्य सुविधा दिलाने का आश्वासन देकर उनका शोषण करते है।

कार्यालय नगर निगम, अजमेर

पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर (राजस्थान) फोन नं. 0145–2429971, 2429920

क्रमांक :–MEW/2024-25/3335 दिनांक:– 09.01.2025

:: ई–निविदा सूचना संख्या 46/2024–25 ::

नगर निगम अजमेर की ओर से नगर निगम अजमेर एवं राजकीय विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको जो कि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, डाक एवं दूरसंचार, रेलवे या अन्य राज्य सरकार, केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनो जो राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो (निविदा पात्रता पंजीकरण के नियमो के अनुसार मान्य) जो निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से सिविल निर्माण कार्य (नगर निगम अजमेर शहर में आनासागर झील के पास के क्षेत्र में स्थित नालो व् ड्रेनेज सबंधी निर्माण कार्य Under CM Budget Annoucement 2024-25) हेतु ऑनलाईन ईनिविदा आमंत्रित की जाती है।

निविदा कार्यो की कुल लागत	राशि 2410.95 लाख (01 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड / अपलोड करने की अवधि	Date 09.01.2025 To 10.02.2025 Time 6.00 PM तक
प्री–बिड मिटिंग की तिथि व समय	Date 15.01.2025 Time 11.00AM पर S.E. Chamber Nirman Section Municipal Corporation Ajmer
Technical निविदा खोलने की तिथि व समय	Date 11.02.2025 Time 11.30 AM पर
Financial निविदा खोलने की तिथि	सफलतम निविदादाता को उचित माध्यम के द्वारा सूचित कर दिया जावेगा।

विस्तृत विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http:/www.eproc.rajasthan.gov.in पर एवं नगर निगम के निर्माण विभाग के कार्यालय में भी देखी जा सकती है।

Nib Code :-ANN2425A0174

UBN No. :-ANN2425WLOB00279

राज.संवाद / सी / 24 / 10242 अधिशाषी अभियन्ता नगर निगम अजमेर

कड़ी ठंड और कोहरे के बीच पौष पूर्णिमा पर पुष्कर सरोवर में श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकी

मकर संक्रांति की तैयारी जोरों पर, पतंगबाजों की सजी दुकानें, मंदिरों होगी विशेष पूजा

पुष्कर/अजमेर, (कासं)। तीर्थों के राजा प्रयागराज में सोमवार से शुरू हुए महाकुंभ के तहत मंगलवार को पहला अमृत स्नान हुआ वहीं तीर्थ गुरु पुष्कर में कड़ी ठंड और कोहरे के बीच पौष पूर्णिमा पर सोमवार को ही अल सुबह श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाकर जगतपिता ब्रह्मा मंदिर के दर्शन किए और दान-पुण्य कर जगत पालनकर्ता भगवान विष्णु से स्वयं के लिए और परिवार सहित विश्व कल्याण की मंगल कामना की।

पंडित फूलचंद पाराशर के अनुसार श्रद्धालुओं ने घने कोहरे व कंपकंपी छुटा देने वाली ठंड के बावजूद अल सुबह पुष्कर सरोवर के घाटों पर पहुंचना शुरू कर दिया और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सरोवर की पूजा अर्चना कर आस्था की डुबकी लगाई और पंडितों पुरोहितों व निर्धन को दान दक्षिणा देकर पुण्य अर्जित किया। सोमवार को जगतपिता ब्रह्मा मंदिर, नए व पुराने रंगजी के मंदिर पर भगवान वेंकटेश के दर्शन के लिए भी श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। बताया जाता है कि कुंभ स्नान का फल भी तब ही मिलता है जब पुष्कर स्नान कर लिया जाता है। वैसे मल माह और विशेष रूप से पुष्कर पूर्णिमा स्नान करने से भी पापों का अंत और पुण्य की वृद्धि होती है। जो लोग कुंभ और महाकुंभ अपने स्वास्थ्य व अन्य कारणों से नहीं जा पाते वे तीर्थ गुरु पुष्कर पहुंचकर ईश्वर के दर्शन करते हैं। ज्योतिष के अनुसार इस बार पौष पूर्णिमा पर रवि योग और भद्रावास योग का संयोग बन रहा है। इन योग में भगवान विष्णु की पूजा करने से घर में खुशहाली आती है। ज्योतिषों के अनुसार ही 14 जनवरी को मकर संक्रांति पर्व पुनर्वसु व पुष्य नक्षत्र योग के दुर्लभ संयोग के साथ मनाई जाएगी। सूर्य धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं तब मकर संक्रांति मनाई जाती है। इस बार माघ कृष्ण चतुर्थी में पुनर्वसु व पुष्य नक्षत्र के युग्म संयोग में मकर संक्रांति पर्व मनाया जाएगा। मंदिरों में विशेष पूजा की जाएंगी।

सर्दियों का अंत और रबी की फसल की कटाई का प्रतीक:- कृषि से जुड़े लोग समाज की एकता, मेहनत और खुशहाली के लिए लोहड़ी पर्व मनाते हैं। 13 जनवरी को रात्रि ठंडी होने व बसंत ऋतु आने के संकेत के रूप में माना जाता है। इस दिन रात्रि में कृषि से जुड़े समाज अग्नि प्रज्वलित कर भगवान सूर्य देव और अग्नि देवता को नई फसलों का अंश यानी नया धान अर्पित करते हैं। इसे नई फसल आने की खुशी साझा करना भी माना जाता है।

मकर संक्रांति के आयोजन की तैयारी जोरों पर:- हर वर्ष के तरह इस बार भी 14 जनवरी मकर संक्रांति पर विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक व शैक्षणिक संस्थाओं की ओर से किए जाने वाले नव वर्ष स्वागत एवं खेलकूद आयोजनों की तैयारी इस बार भी जोर शोर से चल रही है। अजमेर में जगह -जगह पतंग की दुकानों पर पतंग सज गई हैं और खरीदारों की भीड़ उमड़ने लगी है। विभिन्न संस्थाओं की ओर से सामूहिक खेलकूद व पतंगबाजी के आयोजनों की भी सूचनाएं व्हाट्सएप ग्रुपों पर भेजी जाने लगी है। विभिन्न मंदिरों में पौषबड़ा वितरण उत्सव परवान पर चल रहे हैं।

पौष पूर्णिमा पर सोमवार को ही अल सुबह श्रद्धालुओं ने पुष्करजी में आस्था की डुबकी की लगाई।

राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डवलपमेंट एंड इनवेस्टमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (RIICO)

(राजस्थान सरकार का उपक्रम)

उद्योग भवन, तिलक मार्ग, जयपुर- 302005, फोन-0141-2227751,4593201

ई-मेल-riico@riico.co.in वेबसाईट- www.riico.co.in

निविदा सूचना

रीको द्वारा निम्नांकित कार्यों/आपूर्ति/सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए सीलबंद निविदाएं निर्धारित प्रपत्र में आमंत्रित की जाती हैं:-

क्र सं.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख रूपये में)
1.	इकाई प्रभारी, उदयपुर	
1.1	औद्योगिक क्षेत्र मेवाड़ विस्तार में कर्ब स्टोन की पेन्टिंग का कार्य UBN-RDC2425WSOB01436	1.84
1.2	औद्योगिक क्षेत्र मेवाड़ विस्तार में सडक किनारे कर्ब स्टोन की आपूर्ति और फिक्सिंग का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01437	1.99
1.3	औद्योगिक क्षेत्र मेवाड़ विस्तार में सडक के किनारे से मलबा हटाने का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01438	1.93
1.4	औद्योगिक क्षेत्र सनवाड़ में खाली पड़ी भूमि पर से मलबा हटाने का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01439	1.85
1.5	औद्योगिक क्षेत्र गुडली में सड़क के किनारे डंप किये गये मलबे को हटाने का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01440	1.87
2.	इकाई प्रभारी, सीकर	
2.1	औद्योगिक क्षेत्र श्रीमाधोपुर में स्ट्रीट लाईट मरम्मत एवं रखरखाव का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01441	1.07
3.	इकाई प्रभारी, भिवाड़ी–प्रथम	
3.1	औद्योगिक क्षेत्र भिवाड़ी में रीको रेस्ट हाउस के संचालन एवं रखरखाव का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01431	1.74

रीको द्वारा निम्नांकित कार्यों/आपूर्ति/सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाइन सीलबंद निविदाएं (लागत रूपये 2 लाख या उससे अधिक) निर्धारित प्रपत्र में eproc.rajasthan.gov.in पर आमंत्रित की जाती हैं:-

क्र सं.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत
1.	इकाई प्रभारी, उदयपुर	
1.1	मेवाड़ औद्योगिक क्षेत्र उदयपुर में सीमेंट कंक्रीट सड़क का निर्माण और बीटी सड़क का सुदृढ़ीकरण और रीकार्पेटिंग का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01395	161.51
1.2	औद्योगिक क्षेत्र आई.आई.डी. सेन्टर एवं भामाशाह कलडवास में 2 वर्ष के लिए स्ट्रीट लाईट एवं हाई मास्ट के रखरखाव का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01396	10.74
1.3	औद्योगिक क्षेत्र कलडवास विस्तार डीआई पाईप लाईन बिछाने का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01397	41.28
1.4	औद्योगिक क्षेत्र मेवाड़ में रोड बर्म्स की सफाई का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01398	8.84
1.5	औद्योगिक क्षेत्र आई.आई.डी. सेन्टर एवं भामाशाह कलडवास रोड बर्म्स की सफाई एवं मलबा हटाने का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01399	8.28
1.6	औद्योगिक क्षेत्र आई.आई.डी. सेन्टर एवं भामाशाह कलडवास नाली सफाई का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01400	5.28
1.7	औद्योगिक क्षेत्र मेवाड़ में नाली सफाई एवं रिपेयरिंग का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01401	9.21
1.8	औद्योगिक क्षेत्र आई.आई.डी. सेन्टर कलडवास में एक वर्ष के लिए कचरा संग्रहण का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01402	2.51
1.9	औद्योगिक क्षेत्र भामाशाह कलडवास में एक वर्ष के लिए कचरा संग्रहण का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01403	3.17
1.10	औद्योगिक क्षेत्र कलडवास विस्तार में बेड मेसन्री एवं नाली बनाने का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01404	19.45
1.11	औद्योगिक क्षेत्र प्रतापनगर में सड़क के किनारे बर्मस से मलबा हटाने का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01432	2.89
1.12	औद्योगिक क्षेत्र मेवाड़ विस्तार में नालियों की मरम्मत एवं रखरखाव का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01434	15.96
1.13	औद्योगिक क्षेत्र फतेहनगर में क्षेत्र की सफाई एवं सड़क की सुरक्षा के लिए स्टोन पिचिंग का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01433	5.34
1.14	औद्योगिक क्षेत्र प्रतापनगर में सड़क के किनारे इंटरलॉकिंग टाइलें उपलब्ध कराना और लगाने तथा नालियो की मरम्मत का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01435	14.14
2.	इकाई प्रभारी, घीलोठ	
2.1	औद्योगिक क्षेत्र घीलोठ में एलईडी स्ट्रीट लाईटें उपलब्ध कराने और लगाने का शेष कार्य। (फर्म मैसर्स साहनी इलेक्ट्रीकल वर्क्स के जोखिम और लागत पर)। UBN-RDC2425WSOB01451	110.48
2.2	औद्योगिक क्षेत्र घीलोठ में नए नियोजित सामान्य क्षेत्र और वाणिज्यिक ब्लॉक में बिजली लाइनों के पी.एण्ड.एल. और एलईडी स्ट्रीट लाईट के पी.एण्ड.एफ. का शेष कार्य।(फर्म मैसर्स साहनी इलेक्ट्रीकल वर्क्स के जोखिम और लागत पर)। UBN-RDC2425WSOB01452	63.39
2.3	औद्योगिक क्षेत्र शाहजहांपुर में यू/जी केबल बिछाकर 33, 11 केवी और एलटी ओवरहेड लाईन की शिफ्टिंग का शेष कार्य। (फर्म मैसर्स साहनी इलेक्ट्रीकल वर्क्स के जोखिम और लागत पर)। UBN-RDC2425WSOB01453	73.67
2.4	औद्योगिक क्षेत्र शाहजहांपुर में जलापूर्ति योजना का संचालन एवं रखरखाव का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01454	4.56
3.	इकाई प्रभारी, अलवर	
3.1	मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र, अलवर में नाली के मरम्मत का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01405	27.06
3.2	मार्बल मण्डी, एम.आई.ए. अलवर में पुलिया निर्माण का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01406	29.75
3.3	मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र, अलवर में सड़कों का सुदृढ़ीकरण एवं री-कार्पेटिंग का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01407	53.33
3.4	मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र विस्तार, अलवर में नाली के मरम्मत का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01408	10.51
4.	इकाई प्रभारी, भीलवाड़ा	
4.1	औद्योगिक क्षेत्र मोड़ का निम्बाहेडा में सर्वे डिमार्केशन एवं सीमाझान पिलरों के निर्माण का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01421	118.42
4.2	औद्योगिक क्षेत्र फतेहपुरा समेलिया में अप्रोच कल्वर्ट आपूर्ति एवं लगाने का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01423	20.71
4.3	औद्योगिक सम्पदा क्षेत्र भीलवाड़ा में नाली मरम्मत का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01424	16.34
4.4	औद्योगिक क्षेत्र ग्रोथ सेन्टर हमीरगढ़ में जलापूर्ति लाईन आपूर्ति एवं बिछाने का कार्य। UBN-RDC2425WSOB01426	8.74

निविदा का विस्तृत विवरण, नियम इत्यादि एवं भविष्य में निविदा में किसी प्रकार के संशोधन/तिथि बढ़ने की जानकारी हेतु वेबसाइट www.riico.co.in व www.eproc.rajasthan.gov.in को देखें। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: महाप्रबंधक (सिविल), फोन -0141-4593243 Raj.Samwad/C/24/10283

राजस्थान को पर्यटन में नम्बर वन बनाने के लिए पर्यटकों को मिले यूनिक अनुभव : दिया कुमारी

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा है दूर-दराज के निर्जन क्षेत्रों को भी पर्यटन के वैश्विक मानचित्र पर लोकप्रिय डेस्टिनेशन बनाने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजनरी क्षमता का अनुकरण किया जाए। उन्होंने कहा कि पर्यटक स्थलों पर ट्रेफिक की समस्या के समधान सहित राजस्थान को पर्यटन में नंबर एक बनाने लिए बेहतरीन सुविधाएं विकसित करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि राजस्थान आने वाले पर्यटकों को यूनिक और अद्भुत अनुभव दिलाने की दिशा में काम किया जाए। उन्होंने कहा कि हम विश्व स्तरीय सेवाओं और सुविधाओं से ही राजस्थान को पर्यटन में अग्रणी बना सकते हैं।

- **टूर ऑपरेटरों, होमस्टे मालिकों, होटलों और पर्यटक गाइडों के लिए आयोजित हुई एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला**

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने मुख्य अतिथि के रूप में सोमवार को जयपुर स्थित होटल द ललित में पर्यटन विभाग, फिक्की और द ललित सूरी हॉस्पिटैलिटी ग्रुप के संयुक्त तत्वाधान में टूर ऑपरेटरों, होमस्टे मालिकों, होटलों और पर्यटक गाइडों के लिए आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए उक्त विचार व्यक्त किए।

दिया कुमारी ने कहा कि राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए प्रधानमंत्री विशेष रूचि रखते हैं। इसी के अनुकरण में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने टूर ऑपरेटर, होमस्टे मालिक, होटल और पर्यटक गाइड और ड्राइवर्स तथा पर्यटन से जुड़े अन्य लोगों को बेहतर प्रशिक्षण से उनकी क्षमता संवर्धन के लिए राइजिंग राजस्थान प्री समिट (पर्यटन) में मंच से ही निर्देश दिए थे। जिस पर डॉ. ज्योत्सना सूरी, पूर्व अध्यक्ष, फिक्की और सीएमडी, द ललित सूरी हॉस्पिटैलिटी ग्रुप ने ऐसा करने की सहमति दी थी। जिसकी अनुपालना में यह क्षमता संवर्धन कार्यशाला आयोजित की जा रही है। उन्होंने इस हेतु मुख्यमंत्री का धन्यवाद दिया। इस कार्यशाला को संबोधित करते हुए शासन सचिव पर्यटन रवि जैन ने कहा कि हमें राजस्थान को पर्यटन का सिरमौर बनाने के लिए पर्यटन क्षेत्र में वैल्यू एडिशन्स करने होंगे। शासन सचिव ने कहा कि उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी के दिशा-निर्देशन में प्रदेश में नए पर्यटन स्थलों को विकसित किया जा रहा है साथ ही राजस्थान पर्यटन के प्रमोशन के लिए तेज गति से काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह कार्यशाला निश्चित रूप से पर्यटन क्षेत्र से जुड़े सभी स्टेकहोल्डर्स के लिए लाभकारी साबित होगी।

इस अवसर पर फिक्की की पूर्व अध्यक्ष ज्योत्सना सूरी ने अपने स्वागत उद्बोधन में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी का कार्यशाला में शिरकत करने हेतु आभार जताया। फिक्की उत्तरप्रदेश कमेटी के चेयरमैन प्रतीक हीरा ने इस अवसर पर कहा कि राजस्थान हमेशा से विदेशी सैलानियों की पहली पसंद रहा है। उद्घाटन सत्र के अंत में आयुक्त पर्यटन विजय पाल सिंह ने सभी अतिथि वक्ताओं और सहभागियों तथा मीडिया बन्धुओं का आभार जताया। उद्घाटन सत्र के अवसर पर सुषमा अरोड़ा, प्रबंध निदेशक राजस्थान पर्यटन विकास निगम, सुरेन्द्र सिंह शेखावत, सह-अध्यक्ष, फिक्की राजस्थान राज्य परिषद और अध्यक्ष, शाहपुरा होटल और रिसॉर्ट्स भी उपस्थित रहें।

भारतवंशी युवाओं के दल ने जयपुर फुट की निर्माण विधि का निरीक्षण किया

जयपुर। भारतवंशी युवक-युवतियों के 38 सदस्यीय दल जो विभिन्न देशों से भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के भारत को जानो (नोव इण्डिया प्रोग्राम) के अन्तर्गत भारत आए हुए हैं, ने सोमवार को विश्व प्रसिद्व जयपुर फुट की निर्माण विधि का निरीक्षण किया।

इस दल में फ्रांस, फिज़ी, गयाना, इटली, मलेशिया, मौरिशिस, म्यानमार, मलेशिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका, सुरिनाम, तंजानिया, ट्रिनिडाड और टोबैगो युवक और युवतियाँ थी। इन्हें भारत सरकार ने विभिन्न भारतीय दूतावासों के जरिए चयनित किया था। दल का जयपुर फुट की निर्माता संस्था भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डी.आर. मेहता, अध्यक्ष सतीश मेहता और बी.एम.वी.एस.एस. के सचिव (तकनिकी) डॉ. दीपेन्द्र मेहता ने स्वागत किया।

कृषि उपज मंडियों में 6 करोड़ रु. के विकास कार्यों को मंजूरी

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार कृषकों की आय में वृद्धि कर उनके जीवन को समृद्ध और खुशहाल बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य सरकार ने गत एक वर्ष में कृषक हित में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं। इन फैसलों में किसान सम्मान निधि में वृद्धि, गेंहू के समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी, बड़ी संख्या में नए कृषि कनेक्शन तथा किसानों को बिजली के बिलों में अनुदान सहित कई फैसले शामिल हैं। साथ ही, कृषि उत्पादों के प्रभावी विपणन हेतु मंडियों का विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण भी किया जा रहा है।

इसी क्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य की विभिन्न कृषि उपज मंडियों में 6 करोड़ रुपये से अधिक के विकास कार्यों को मंजूरी दी है। इनमें कृषि उपज मंडी समिति सीकर की विशिष्ट प्याज गौण मंडी यार्ड रसीदपुरा में 74 लाख रुपये के नवीन निर्माण कार्य, कृषि उपज मंडी समिति (विशिष्ट श्रेणी) बूंदी के अंतर्गत नवीन मंडी प्रांगण कुंवारती में 2.58 करोड़ रुपये से अधिक के विद्युत व निर्माण कार्य, कृषि उपज मंडी समिति पीपाड़ शहर, जोधपुर के गौण मंडी यार्ड आसोप में 90.86 लाख रुपये की लागत से सीसी रोड़ निर्माण एवं सोलर स्ट्रीट लाइट के कार्य तथा कृषि उपज मंडी समिति नगर, डीग के अंतर्गत मुख्य मंडी यार्ड में 1.76 करोड़ से अधिक की लागत से डोम निर्माण कार्य शामिल हैं।

मुख्यमंत्री 16 को कर्मचारी संगठनों के साथ करेंगे बजट पूर्व संवाद

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य की डबल इंजन सरकार प्रदेश के चहुंमुखी विकास और जनकल्याण की भावना के साथ कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व तथा दूरगामी सोच के साथ समाज के हर वर्ग के हित में निरंतर निर्णय लिए जा रहे हैं। विकसित राजस्थान 2047 के ध्येय के साथ सरकार आगामी राज्य बजट वर्ष 2025-26 की रूपरेखा तैयार कर रही है। इसी दिशा में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा विभिन्न वर्गों के साथ 16 से 22 जनवरी तक बजट पूर्व संवाद कर उनके अमूल्य सुझाव लेंगे। इस क्रम में 16 जनवरी को शर्मा राज्य के कर्मचारी संगठनों के साथ महत्वपूर्ण बैठक करेंगे।

विधायकों को आइपेड पर नेवा का प्रशिक्षण कल

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के अथक प्रयासों से 16वीं विधानसभा के तीसरे सत्र के लिए विधायक विधान सभा सदन से संबंधित कार्यों में सूचना तकनीक का उपयोग कर रहे हैं। विधायक नेशनल ई-विधान एप्लिकेशन के माध्यम से ऑनलाइन पद्धति से कार्य सम्पादित करेंगे। ऑनलाइन कार्य सम्पादन में उत्कृष्टता लाने के लिए विधायक 15 जनवरी को दोपहर 12:30 बजे से सदन में आइपेड पर भौतिक प्रशिक्षण भी लेंगे।

- **विधान सभा का प्रत्येक सदस्य करेगा सूचना तकनीक का उपयोग : देवनानी**

देवनानी ने बताया कि विधानसभा के सदन को नये कलेवर में तैयार किया गया है। सदन में विधायकों की सीटों पर आइपेड लगाये गये हैं। अब विधानसभा को पेपरलैस बनाने की दृष्टि से 16वीं विधानसभा के तृतीय सत्र से नेशनल ई-विधान एप्लिकेशन (नेवा) लागू किया जाएगा। विधानसभा का प्रत्येक सदस्य इस एप्लिकेशन के माध्यम से सदन से जुडी सभी जानकारी आईपेड पर देख सकेंगे।

देवनानी ने बताया कि विधायक मोबाइल से भी नेवा एप्लिकेशन एप द्वारा विधान सभा को ऑनलाइन प्रश्न प्रेषित कर सकते हैं। राजस्थान विधानसभा का सदन हाइटेक हो रहा है। सदन से संबंधित कार्य ऑनलाइन सम्पादित हो रहे हैं।

देवनानी ने मकर सक्रांति के पर्व पर प्रदेशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। देवनानी ने अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि भारतीय परम्पंरा में मकर सक्रांति का विशेष महत्व है। इस दिन सूर्य उत्तरायण में आता है। मकर संक्रांति का पर्व पर जप, तप, दान, स्नान का विशेष महत्व होता है।

विधानसभा में बुधवार को पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय जगन्नाथ पहाड़िया को उनकी जयन्ती पर पुष्पाजंलि दी जावेगी। विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी बुधवार को विधान सभा के प्रथम तल स्थित पूर्वी लॉज में स्व . पहाडिया के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि देंगे।

तिवाड़ी ने महाकुंभ में किया संगम में स्नान

जयपुर। भाजपा के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवाड़ी ने सोमवार को परिवार के साथ महाकुंभ में संगम का पवित्र स्नान किया। तिवाड़ी ने कहा कि यह अनुभव वास्तव में अविस्मरणीय था। उन्होंने कहा कि संगम के पवित्र जल में स्नान करने से मुझे एक अद्भुत शांति और आनंद की अनुभूति हुई। यह पल मेरे जीवन के सबसे यादगार पलों में से एक है। तिवाड़ी ने कहा कि महाकुंभ की भीड़ में भी संगम की पवित्रता ने मुझे आकर्षित किया। यह एक ऐसा अनुभव था जिसने मेरे जीवन को समृद्ध बनाया है।

पौष बड़ा का आयोजन

जयपुर। शिव दुर्गा सेवा समिति विद्याधर नगर द्वारा नववर्ष स्नेह मिलन समारोह, सामूहिक सुंदरकांड पाठ व पौष बड़ा महोत्सव सोमवार को आयोजित किया गया। जिसमें कॉलोनी के निवासियों ने सामूहिक सुंदरकांड पाठ। शाम को भगवान शिव और माँ दुर्गा को भोग के बाद सबने प्रसादी ग्रहण की।इस मौके पर अध्यक्ष गोविंद सैनी, सचिव धीरज डँगायच, पंकज अग्रवाल, संदीप गुप्ता, अनूप सोमानी के साथ कॉलोनी के प्रतिष्ठित निवासी भी शामिल रहे। स्थानीय वार्ड पार्षद दिनेश कांवट व विद्याधर नगर थाना इंचार्ज राकेश ख्यालिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

डोटासरा और गहलोत जवाबदार-जिम्मेदार आदमी, अनर्गल बातें नहीं करनी चाहिए : मदन राठौड़

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि भाजपा संविधान गौरव अभियान चलाकर देशभर में कांग्रेसियों का दोहरा चरित्र उजागर करेगी। इसके लिए भाजपा ने जिला, मंडल और बूथ स्तर तक समिति बनाई है जो जनता के बीच जाकर कांग्रेस के काले कारनामें उजागर करगी। कांग्रेसियों ने संविधान का अपमान किया और बाबा साहब को कभी सम्मान नहीं दिया। कांग्रेस पार्टी ने बाबा साहब को संसद में जाने से रोका, उनके खिलाफ उम्मीदवार खड़ाकर हराने का षडयंत्र रचा। वहीं दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी है जिसने बाबा साहब के सम्मान में पंचतीर्थ बनाने का कार्य किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तो विदेश में जमीन खरीदकर उनकी शिक्षा स्थली पर स्मारक बनाने का कार्य किया है।

- **'कांग्रेस ने अटकाए, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नियुक्ति पत्र और विभागों का भर्ती कैलेंडर किया जारी'**

राठौड़ ने कहा कि देश के गृहमंत्री अमित शाह ने संसद में स्पष्ट कहा है कि कांग्रेसियों को अब अंबेडकर याद आ रहे हैं, अगर कांग्रेसी नेता सच्चे मन से बाबा साहब का सम्मान करना चाहते तो पहले करते, लेकिन अब जब भाजपा बाबा साहब को सम्मान दे रही है तो कांग्रेसी श्रेय लेने के लिए इस तरह का कार्य कर रहे है। भाजपा दिखावा नहीं करती है। भाजपा ने गांधी जी का सम्मान किया, अंबेडकर जी, सरदार पटेल सहित तमाम महापुरूषों को सम्मानित करने का काम कर रही है, जिन्हे कांग्रेस ने दरकिनार कर दिया था।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने एक सवाल के जवाब में कहा कि गहलोत और डोटासरा को पता होना चाहिए कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने युवा दिवस पर 13500 युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान करने का कार्य किया है, ये वो नियुक्तियां थी, जो कांग्रेस को देनी चाहिए थी, लेकिन कांग्रेस ने हमारे युवाओं के भविष्य को गर्त में डालने का कार्य किया और उनकी नियुक्तियों को अटकाए रखा। इसके बाद भी गहलोत और डोटासरा सवाल उठा रहे है, यह लोकतंत्र है, इसमें सबको बोलने की स्वतंत्रता है। लेकिन वो जवाबदार और जिम्मेदार आदमी है, अनर्गल बाते नहीं करनी चाहिए।

मंडल अध्यक्षों की घोषणा के बाद ही होगी जिलाध्यक्षों की नियुक्ति

जयपुर। राजस्थान में भाजपा के संगठन चुनाव चल रहे हैं। बूथ और मंडल स्तर के अधिकांश अध्यक्ष निर्वाचित कर दिए हैं। अब जिलाध्यक्षों के चुनावों की प्रक्रिया इन मंडल अध्यक्षो की घोषणा के बाद ही होगी। भाजपा ने प्रदेश को 44 जिला इकाईयों में बाट रखा है। इनमें से पार्टी करीब 30 से अधिक अध्यक्ष निर्वाचन से बनाने पर विचार कर रही है। राजधानी जयपुर में शहर अध्यक्ष बनने की रेस और नेताओं की लॉबिंग शुरू हो गई है। जानकारी के अनुसार भाजपा जयपुर में वैश्य व ओबीसी वर्ग के किसी चेहरे को मौका दे सकती है। जयपुर में सोमवार को 19 मंडलों के चुनाव हो चुके हैं। शेष 14 मंडलों के चुनावों की प्रक्रिया जल्द ही होगी। लगभग सभी मंडलों में अध्यक्षों का निर्वाचन सर्वसम्मति से होगा। ऐसे में जयपुर में शहर अध्यक्ष के भी सर्वसम्मति से निर्वाचित किया जाना तय है। बताया जा रहा है कि जल्द ही जयपुर में भाजपा नया शहर अध्यक्ष निर्वाचित कर देगी।

- **शहर में अरविंद स्वामी तो देहात उत्तर में मदन प्रजापत का नाम प्रमुख**

भाजपा जयपुर में पॉलिटिकल रूप से जातीय संतुलन बैठाना चाहती है। जयपुर में वैश्य वर्ग बहुतायत में है। वर्तमान में जयपुर में सांसद ब्राह्मण वर्ग से है। दोनों निगमों के मेयर ओबीसी-एसबीसी वर्ग से है। सरकार में मंत्री राजपूत-दलित वर्ग से हैं। भाजपा की बीती दो सरकारों में जयपुर से वैश्य वर्ग से मंत्री भी रहा है, लेकिन इस बार कोई मंत्री नहीं बनाया गया है। ऐसे में भाजपा जयपुर शहर में वैश्य वर्ग के चेहरे को शहर अध्यक्ष बना सकती है। वैश्य वर्ग लगातार भाजपा से समाज को तवज्जों देने की मांग कर रहा है। वही जयपुर देहात के अभी तक एक मंडल अध्यक्ष की घोषणा नही हुई हैं। पहले मंडल अध्यक्ष की घोषणा होगी उसके बाद ही जिलाध्यक्ष के नाम की घोषणा होगी।

पतंगबाजी से घायल 22 पक्षियों का उपचार किया

जयपुर । जवाहर नगर स्थित लाल जैन मंदिर पर एनवायरनमेंट एंड वाइल्ड लाइफ केयर सोसाइटी के अध्यक्ष आशीष मेहता, उपाध्यक्ष संजय सिंह शेखावत ने पक्षी चिकित्सा शिविर लगाया है। पतंगबाजी से घायल हुए परिंदों के उपचार के लिए यह शिविर 13 से 15 जनवरी तक चलेगा। संस्था का यह शिविर 16 वां है, जिसमें मंगलवार को करीब घायल 22 पक्षियों का उपचार डॉ. विकास शर्मा, डॉ. साहिल सिंघल और डॉ. अक्षय गुप्ता की देखरेख में किया गया। इस मौके पर संस्था का हैल्पलाइन नंबर 8875310002 भी जारी किया गया है। भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी, ग्रेटर नगर निगम के उप महापौर पुनीत कर्णावत शिविर में पहुंचकर घायल पक्षियों के उपचार के पोस्टर का विमोचन किया।

कार की टक्कर से मजदूर की मौत

जयपुर । शिवदासपुरा इलाके में गलत दिशा से आ रही तेज रफ्तार कार ने मजदूर को जोरदार टक्कर मार दी। जिससे मजदूर अचेत होरक गिर पड़ा । राहगीरों की सूचन पर मौके पर पहुंची पुलिस ने अचेत अवस्था में मजदूर को महात्मा गांधी अस्पताल भिजवाया। जहां पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक के भाई सुरेश मीणा की शिकायत पर कार चालक के खिलाफ लापरवाही से कार चलाने का मामला दर्ज कर चालक की तलाश शुरु कर दी है। पुलिस ने बताया कि थाना इलाके में स्थित मुण्डली निवासी रमेश मीणा (28) पुत्र बद्रीनारायण मजदूरी करता था। शनिवार देर शाम वो मजदूरी कर पैदल ही अपने घर लौट रहा था। तभी दांतली से सिरोली की ओर से एक तेज रफ्तार अनियंत्रित कार आई और रमेश को जोरदार टक्कर मार दी। जिससे रमेश बुरी तरह से जख्मी हो गया। अस्पताल ले जाने के बाद चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

पंजाबी गीतों के संग छाया लोहड़ी का उल्लास

जयपुर (कासं)। पंजाबी समाज ने सोमवार को खुशियों की लोहड़ी मनाई। पंजाबी बाहुल्य इलाकों में पर्व की रौनक देखते ही बन रही थी। यहां सुबह से पंजाबी माहौल नजर आ रहा था। जयपुर में जगह-जगह पर पंजाब की संस्कृति साकार हुई। मुख्य आयोजन राजापार्क में हुआ।

राजस्थान प्रदेश पंजाबी महासभा और राजा पार्क व्यापार मंडल की ओर से यहां गोकाष्ठ लोहड़ी उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अतिथियों ने गोकाष्ठ से लोहड़ी की अग्नि प्रज्वलित की। पंजाबी गीतों के साथ लोगों ने लोहडी की अग्नि के परिक्रमा की। भाजपा नेता रवि नैय्यर, भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष सरदार अजय पाल सिंह, सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा, विधायक कालीचरण सराफ समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। पंजाबी समाज के साथ ही अन्य समुदाय के लोगों ने भी त्योहार का लुत्फ उठाया। खास बात यह रही कि इस बार अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग थीम से

राजस्थान प्रदेश पंजाबी महासभा और राजा पार्क व्यापार मंडल की ओर से यहां गोकाष्ठ लोहड़ी उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया

लोहडी का महापर्व मनाया गया। शाम ढलते ही लोगों ने पंजाबी कलाकारों की मौजूदगी में गिद्दा-भंगडा किया। कैंप फायर के साथ अलग-अलग मनोरंजक कार्यक्रम हुए। रात के खाने के लिए बुफे भी शानदार हुआ। व्यंजनों में गुड़ और तिली की मिठास ने जायका बढ़ा दिया। अंताक्षरी और हाऊजी में बच्चों ने खूब लुत्फ उठाया। आमतौर पर घरों में नई दुल्हन के आने और पुत्र जन्म पर लोहड़ी धूमधाम से मनाई जाती थी, लेकिन अब कन्या के जन्म लेने पर भी लोहड़ी पूरे उत्साह और उमंग के साथ मनाई जाने गई।

सार-समाचार

माही संदेश ''काव्य-कलम'' का आयोजन

जयपुर । राजधानी जयपुर में 12 जनवरी की शाम हर बार की तरह गीत-ग़ज़ल,कविता व कला को समर्पित रही। गुलाबी सर्दियों की दस्तक के बीच सरदार पटेल मार्ग पर ''मालार्पण'' में माही संदेश काव्य-कलम कार्यक्रम के 26वें संस्करण का आयोजन किया गया। बतौर अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार व शायर मनोज मित्तल 'कैफ़' व अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी, राजू लाल चौधरी (डिप्टी सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ पुलिस) ने शिरकत की। कार्यक्रम में अन्तर्राष्ट्रीय लोक गायक बिस्मिल्लाह खान व रोजे खान की बेहतरीन गायकी ने उपस्थित लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया। उपस्थित सभी रचनाकारों ने अपनी खूबसूरत रचनाओं से इस कार्यक्रम को सफल व सार्थक बनाया। कार्यक्रम में आमंत्रित शायर, कवि-कवयित्री के रूप में राजेन्द्र राजन, मोनिका शर्मा, योगिता शर्मा 'ज़ीनत', कृष गौड़, अशोका विश्नोई, शैफ़ाली चौहान, सुजाता पुरोहित, विनोद जोशी, माला रोहित कृष्ण नंदन, विजेंद्र पॉटर ने अपनी बेहतरीन प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में मंच संचालन का दायित्व कवि सूर्य प्रकाश उपाध्याय ने निभाया। कार्यक्रम के अंत में माही संदेश के संरक्षक-सलाहकार सुधीर माथुर, प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन, चित्रकार चंद्रप्रकाश गुप्ता ने माही संदेश विंध्य कोकिल भैया लाल व्यास काव्य-कलम सम्मान से कलाकारों व साहित्यकारों को सम्मानित किया। शिक्षाविद डॉ. दीपा सचदेवा, कबड्डी खेल में उल्लेखनीय योगदान के लिए राजू लाल चौधरी, कला के क्षेत्र में मिनिएचर आर्टिस्ट महेश राज, रोजे ख़ान,बिस्मिल्ला ख़ान को माही संदेश- प्रेमा माथुर-प्रेरणा पुरस्कार प्रदान किया गया।

शिविर में होगा घायल पक्षियों का उपचार

जयपुर । मकर सक्रांति पर पतंगबाजी से बेजुबान परिंदे पतंग की डोर में फंसकर घायल हो जाते हैं। घायल पक्षियों की जान बचाने के लिए जयपुर शहर में अनेक स्थानों पर पक्षी उपचार शिविर लगाए जा रहे हैं। ऐसा ही एक घायल पक्षी सहायता केन्द्र राजस्थान जनमंच ट्रस्ट पक्षी चिकित्सालय की और से शांति पथ, तिलक नगर स्थित चंद्रा इंडस्ट्रीज पर 13 से 15 जनवरी तक लगाया गया है। इस निशुल्क शिविर में चिकित्सकों सहित प्रशिक्षित कर्मचारियों की व्यवस्था की गई है। राजस्थान जनमंच ट्रस्ट पक्षी चिकित्सालय के यूथ विंग के अध्यक्ष एडवोकेट रवि खत्री ने बताया कि पक्षी सहायता केन्द्र का शुभारम्भ स्थानीय पार्षद महेश सैनी, भाजपा विधानसभा संयोजक ब्रह्म कुमार सैनी, नगर निगम समिति चैयरमेन लक्ष्मण सिंह नूनीवाल ने किया। इस अवसर पर राजस्थान जनमंच के महासचिव कमल लोचन, अशोक भगत, भाजपा मंडल पूर्व अध्यक्ष राजेश शर्मा, वरिष्ठ भाजपा नेता चंद्र मोहन खत्री, चंद्रा इंडस्ट्रीज के श्याम खत्री, राजेंद्र खत्री, सूरज खत्री, प्रोफ़ेसर मोनिका ओझा खत्री सहित क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित थे। यूथ विंग के अध्यक्ष एडवोकेट रवि खत्री ने क्षेत्र के निवासियों से अपील की है सुबह और शाम के समय पक्षियों के स्वच्छंद विचरण को देखते हुए इस समय पतंगबाजी नहीं करें। चाइनीज मांझे का उपयोग भी वर्जित है। यह आमजन और पक्षियों की जान के लिए भी घातक होता है।

सिद्धेश्वर महादेव मंदिर में पौषबड़ा प्रसादी

जयपुर । सिविल लाइन्स विकास समिति ने अपने पूर्व संरक्षक स्वर्गीय मूलचंद खडोलिया की याद में सिद्धेश्वर महादेव मंदिर में श्रद्धांजलि सभा और पौष बड़ा प्रसादी वितरण का कार्यक्रम रखा। सभी समिति सदस्यों और परिवारजनों के साथ कॉलोनीवासियों ने खडोलिया को पुष्पांजलि दी। इसके बाद आमजन में पौषबड़ा प्रसादी भी वितरित की गई। कार्यक्रम में नगर निगम के पूर्व चेयरमैन रतन खडोलिया, पूर्व पार्षद संतोष राजोरिया, मुहाना सब्जी मंडी के अध्यक्ष योगेश तंवर, पार्षद प्रत्याशी चित्रा खडोलिया तथा सिविल लाइन्स विकास समिति अध्यक्ष दिवाकर प्रताप सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया।

पशु कल्याण पखवाड़ा आज से शुरू होगा

जयपुर (कासं)। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रदेश में 14 जनवरी से 30 जनवरी 2024 तक पशु कल्याण पखवाड़ा मनाया जा रहा है। पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने बताया कि इस पखवाडे के दौरान विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी अपने कार्यों के साथ-साथ जीव जन्तुओं के प्रति प्रेम व दया भाव जाग्रत करने की दृष्टि से विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर आमजन को जागरूक करने का प्रयास करेंगें।

मकर संक्रांति पर पतंगबाजी के लिए सोमवार को दिनभर बाजारों में भीड़ उमड़ी, बच्चों और युवाओं में पतंग व डोर खरीद को लेकर जबरदस्त उत्साह देखा गया। आज आसमां में ''वो काटा-वो मारा'' का शोर गूंजेगा। फोटो-राष्ट्रदूत

चाकू की नोंक पर बिजनेसमैन से लूट

जयपुर । शिवदासपुरा इलाके में कुछ नकाबपोश बदमाशों ने चाकू की नोक पर एक बिजनेसमैन के चेहरे पर चाकू से वार पासवर्ड लिया और ऑन लाइन बैंक अकाउंट से रुपए ट्रांसफर कर लिए। वारदात को अंजाम देने के बाद नकाबपोश बदमाश मौके से फरार हो गए। पुलिस ने बताया कि शिवदासपुरा शांति विहार निवासी मनोज कुमार (45) मुहाना मंडी में आढ़त का काम करता है। 5 जनवरी को सुबह पौने 4 बजे वो घर से मुहाना मंडी जाने के लिए निकला था। पैदल जाते समय तीन नकाबपोश बदमाशों ने उसे रास्ते में रोक लिया और चाकू दिखाकर उसका मोबाइल फोन छीन लिया।

पटेल नगर आवासीय योजना के ऑनलाईन आवेदन आज से

जयपुर । जयपुर विकास प्राधिकरण ने मकर संक्राति पर्व पर आमजन को जोन-10 में पटेल नगर आवासीय योजना (खोरी रोपाडा) में 270 भूखण्डों के लिए ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित किये है। इस आवासीय योजना के आवेदन 13 फरवरी तक लिए जाएंगे, इसके बाद 24 फरवरी को लॉटरी निकाली जायेगी।

- **270 भूखण्डों की इस योजना की लॉटरी 24 फरवरी को**

जयपुर विकास आयुक्त आनन्दी ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में एम.आई.जी. वर्ग के आवास का सपना साकार करने के लिए जे.डी.ए. प्रशासन ने जयपुर की प्रमुख लोकेशन पर पटेल नगर आवासीय योजना विकसित की है। इसमें 270 भूखण्डों का आवंटन लॉटरी के माध्यम से किया जायेगा। जेडीसी ने बताया कि पटेल नगर आवासीय योजना, जोन-10 में खोरी-रोपाडा, हैरिटेज सिटी (दक्षिणी रिंग रोड एवं खातीपुरा रेल्वे स्टेशन के समीप) है। इस योजना में 76-120 व. मी. तक के 138 भूखंड़ तथा 121-220 वर्ग मीटर तक के 132 भूखण्ड है। योजना की आरक्षित दर रूपये 18 हजार रु. रखी गई है।

160 मिट्टी कामगारों को मिलेंगे विद्युत चालित चाक

जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विजन को पूरा करने में श्रीयादे माटी कला बोर्ड पूरा शिद्दत से जुटा है। बजट घोषणा वर्ष 2024-2025 में प्रदेशभर के 1000 मिटी कामगारों को विद्युत चालित चाक व पगमिल (मिट्टी गूंथने की मशीन) आवंटन के लिए बोर्ड ने सोमवार को प्रदेश के आठ और जिलों के 160 मिटटी कामगारों का लॉटरी के माध्यम से चयन किया। उधोग भवन के सभागार में बोर्ड के अध्यक्ष प्रहलाद राय टाक ने सवाईमाधोपुर, भरतपुर, धौलपुर, दौसा, टोंक, बूंदी, कोटा व बारां जिलों से आए जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में इन जिलों की लॉटरी निकाली।

उन्होंने बताया कि प्रत्येक जिले में 20-20 लोगों का चयन किया गया है। चयनित कामगारों को 10 दिन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। टाक ने बताया कि पहले फेज में प्रदेश के 25 जिलों के 500 मिटटी कामगारों का लॉटरी से चयन कर उन्हें प्रशिक्षण उपरांत विद्युत चालित चाक व पगमिल का वितरण किया जाएगा।

अब तक कुल 9 जिलों के 180 मिटटी कामगारों का चयन कर लिया गया है। शेष 16 जिलों के 320 मिटटी कामगारों का चयन भी 20 जनवरी से पूर्व कर लिया जाएगा।

सभी सरकारी स्कूलों में 1 अप्रैल से होगा प्रवेशोत्सव

जयपुर । स्कूल शिक्षा एवं भाषा विभाग के शासन सचिव कृष्ण कुणाल ने सोमवार को शिक्षा संकुल में पीएमयू के तहत आगामी शिक्षा योजनाओं एवं नवाचारों पर विस्तृत चर्चा की। इस दौरान शिक्षा सचिव ने सभी राजकीय विद्यालयों में आगामी एक अप्रैल से प्रवेशोत्सव शुरू करने के निर्देश दिए।

'बोर्ड परीक्षाओं के प्रश्न पत्रों की सुरक्षा व्यवस्था पुख्ता हो'

जयपुर । माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित होने वाली बोर्ड परीक्षा आगामी 6 मार्च से प्रारम्भ होनी है। इन परीक्षाओं के सफल आयोजन को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा मंत्री मदन दिलावर की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय उच्चाधिकार प्राप्त परीक्षा समिति की बैठक सोमवार को सचिवालय में आयोजित हुई। साथ ही आगामी रीट परीक्षा के सफल आयोजन की तैयारियों की भी शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने संबंधित विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा की।

शिक्षा मंत्री ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि बोर्ड परीक्षा केंद्रों पर किसी भी प्रकार की स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहे। उन्होंने कहा कि परीक्षा केंद्रों पर गलत विषय के पेपर का वितरण जैसी त्रुटियों से बचे तथा विद्यार्थियों को समय पर प्रवेश के लिए पूर्व में ही निर्देश दिए जाएं। प्रश्न पत्रों के स्ट्राँग बोक्स की सुरक्षा व्यवस्था का पुलिस विभाग के अधिकारी पूर्ण रूप से ध्यान रखें। दिलावर ने कहा कि सभी बोर्ड परीक्षा केन्द्रों पर पेयजल, टॉयलेट व बिजली की उचित व्यवस्था हो। शिक्षा मंत्री ने आगामी रीट परीक्षा के लिए भी आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उन्होंने बताया कि बोर्ड परीक्षा केन्द्र के आस-पास के अन्नपूर्णा रसोई केन्द्रों में खाने की व्यवस्था सुचारू हों। जहां बैठने की उचित व्यवस्था के साथ खाने की सामग्री में गुणवत्ता व मात्रा में कोई कमी न हो। रीट परीक्षा के पारदर्शी, निष्पक्ष तथा सफल आयोजन के लिए संदिग्ध लोगों को परीक्षा व्यवस्था से दूर रखें और उन्हें पाबन्द करें जिससे बिना किसी व्यवधान के सभी परीक्षा केन्द्रों पर सुचारू रूप से परीक्षा का आयोजन हो सकें। बैठक के दौरान शासन सचिव स्कूल शिक्षा एवं भाषा एवं पुस्तकालय विभाग कृष्ण कुणाल, प्रशासक माध्यमिक शिक्षा बोर्ड महेश शर्मा, निदेशक माध्यमिक शिक्षा आशीष मोदी, निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा सीताराम जाट, संयुक्त शासन सचिव गृह विभाग पूजा कुमारी पार्थ सहित अन्य सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

सार-समाचार

अपहरण कर पीटा, तीन आरोपी पकड़े

जोधपुर, (कासं)। लव अफेयर की आशंका में एक छात्र का भगत की कोठी इलाके में अपहरण कर लिया गया। तीन युवक छात्र के कमरें में घुसे और खुद को पुलिस अधिकारी बताकर कार में अपहरण कर ले गए। थाने चलने की बात कही और फिर कार में मारपीट की। उसके बाद छात्र को पाली जिले के रोहट क्षेत्र में सडक़ पर पटक कर चले गए। उसका मोबाइल लूट लिया गया। पीड़ित छात्र की तरफ से भगत की कोठी थाने में रिपोर्ट दी गई। पुलिस ने कार्रवाई कर तीन लोगों को पकड़ा है जोकि भीलवाड़ा के रहने वाले है। जैसलमेर के फलसूण्ड स्थित भीखोडाई के रहने वाले एक छात्र की तरफ से रिपोर्ट दी गई। इसमें बताया कि वह भगत की कोठी स्थित कृष्ण मंदिर गली नंबर 3 में किराए के कमरे में रहकर पढ़ाई करता है। 11 जनवरी की रात को वह अपने कमरें में पढ़ाई कर रहा था। तब उसके रूम पर तीन युवक कार लेकर आए। उन्होंने खुद को पुलिस अधिकारी बताते हुए पूछताछ के लिए थाने चलने के लिए कहा। बाद में उसे जबरन कार में डालकर ले गए। बीच रास्ते मारपीट की और उसका मोबाइल छीन लिया। पाली के रोहट क्षेत्र में ले जाकर सड़क पर पटक दिया। आरोपियों में से एक ने कहा कि वह उसकी पत्नी को फोन करता है। मोबाइल चैट से इसका खुलासा होने पर छात्र का अपहरण किया गया। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच में तीन आरोपियों भीलवाड़ा निवासी शैतानसिंह , पारसमल गुर्जर एवं सांवलियाराम को शांतिभंग में फिलहाल गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनकी बीच राजीनामे की बात भी बताई है।

पटवारियों ने कार्यों का बहिष्कार किया

सायला, (निसं)। उपखण्ड मुख्यालय पर सोमवार को राजस्थान पटवार संघ की प्रदेश कार्यकारिणी के आव्हान पर 9 सूत्री मांग पत्र के निस्तारण की मांग को लेकर पटवारियों द्वारा राजस्व कार्यों का बहिष्कार कर धरना प्रदर्शन किया गया। पटवार संघ जिलाध्यक्ष महेन्द्रसिंह चंपावत ने बताया कि गिरदावरी एप्प में अपेक्षित आवश्यक संशोधन करवाने, 1०35 पटवार मंडल एवं भानोत कमेटी में वित्तिय स्वीकृति से शेष पटवार मंडल एवं भू-अभिलेख निरीक्षक वृत की वित्तिय स्वीकृति जारी करवाने, पटवारी से वरिष्ठ पटवारी पद की रिव्यू डीपीसी एवं डैफर्ड एवं लिफाफा बंद प्रकरणों का निस्तारण करवाने तथा 752 नवसृजित भू-अभिलेख निरीक्षक पदों के निर्धारण संबंधित पत्रावली का निस्तारण करवाने समेत 9 सूत्री मांग पत्र का निस्तारण नही होने से समस्त पटवारियों में भारी रोष है तथा मांगों पर सहमति नही बनने तक राजस्व कार्यों का बहिष्कार जारी रहेगा। इस दौरान उपशाखा अध्यक्ष जसाराम, दिनेश सोलंकी, उमाराम, ज्ञानसिंह, सुरेश कुमार, रविन्द्रसिंह, देवीसिंह, आसकरणसिंह, परमेश्वरी, रिन्की राव, भीमराज, भीमाराम समेत पटवारी मौजूद रहे।

मकरसंक्राति पर मेले का आयोजन होगा

अजमेर (कासं)। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड स्टाफ क्लब द्वारा मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में हर वर्ष की भॉति इस वर्ष भी मेले का आयोजन किया जायेगा। क्लब अध्यक्ष मोहन सिंह रावत के अनुसार कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रशासक महेश शर्मा व विशिष्ट अतिथि सचिव कैलाश चंद शर्मा एवं अतिथि वित्तीय सलाहकार रश्मि बिस्सा रहेंगे। मेले का शुभारम्भ प्रशासक द्वारा किया जावेगा साथ ही मेले की ऐकरिगं जानी मानी ऐंकर किरण पाराशर द्वारा की जावेंगी। क्लब सचिव मुकेश घसवा ने बताया कि मेले में विभिन्न प्रकार के खाने पीने के व्यंजन रखे है। हाउजी के साथ साथ कई प्रकार के रोचक खेलो और मनमोहक प्रश्नोत्तरी का अयोजन किया जायेगा जिसमें सभी कार्मिको व अधिकारियों ने परिवार सहित भरपूर आनन्द लेगें।

जर्सी वितरण कार्यक्रम हुआ

शाहपुरा ।राजकीय प्राथमिक विद्यालय हरिधाम पंचायत बासेड़ा में कक्षा 1 से 5 तक के बालक बालिकाओं को पंरमेशचन्द्र ओझा स्मृति संस्थान द्वारा जर्सी वितरण किया गया।जर्सी वितरण कार्यक्रम में संस्थान के अध्यक्ष अनिल व्यास, एडवोकेट शोभाग कुमावत, पूर्व बासेड़ा सरपंच मदन मीणा, शिक्षिका पूजा सेरावत, कांता देवी, बद्रीलाल बलाई, सत्यनारायण कुमावत उपस्थित थे।संस्थान के अध्यक्ष ने उक्त विद्यालय का नाम ठााम हरिधाम के संस्थापक, स्वतंत्रता सेनानी सर्वोदय नेता स्वर्गीय रमेश चंद्र व्यास के नाम राज्य सरकार से मांग की।

भाजपा मंडल अध्यक्ष ने स्कूटी दी

सरवाड़ । सरवाड़ शहर मे स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय की होनहार छात्रा सुश्री माहेनूर खानम शेख को राज्य सरकार की तरफ से कॉलेज शिक्षा विभाग द्वारा स्कूटी प्रदान की गई वहीं भाजपा मंडल अध्यक्ष प्यारेलाल खटीक ने होनहार छात्रा सुश्री माहेनूर खानम शेख को राज्य सरकार की और से स्कूटी प्रदान कर उसके उज्ववल भविष्य की कामना की गई इस अवसर पर भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चे की प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य फरीद मोहम्मद शेख सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहें।

सेशन न्यायालय खोलने की मांग

बिजयनगर । अभिभाषक संघ विजयनगर के तत्वाधान में सोमवार कोअभिभाषक संघ ने तहसील कार्यालय पहुंचकर तहसीलदार रामकिशोर जांगिड़ को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंप कर बिजयनगर में अपर जिला एवं सेशन न्यायालय खोलने की मांग की । अभिभाषक संघ बिजयनगर अध्यक्ष गुलाम मुस्तफा उपाध्यक्ष अरुण सोनी, सचिव आशिष त्रिपाठी, एडवोकेट धीरज मालवीय, एडवोकेट अरिन्हत लोढ़ा, एडवोकेट गोविंद नारायण शर्मा, एडवोकेट यदुपति त्रिपाठी व एडवोकेट युगल किशोर मालवीया, संहिता अधिवक्ताओं ने प्रेषित ज्ञापन में विजयनगर में अपर जिला एवं सेशन न्यायालय खोलने की मांग की ।

बुंदेला एंक्लेव में चोरी हुई

जोधपुर, (कासं) । जोधपुर के एयरफोर्स एरिया गुरूद्वारा कॉलोनी में बुंदेला एंक्लेव में एयरफोर्स के मास्टर वारंट ऑफिसर हैली काप्टर यूनिट में तैनात दो अफसरों के क्वार्टरों के ताले रात में तोड़े गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार एक में चोरी नहीं हुई जबकि दूसरे में सामान चोरी होना बताया गया है। एक में अधिकारी 9 जनवरी को ही शिफ्ट हुए थे बाद में छुट्टी पर चले गए। 10 जनवरी को ताले टूटे होने की जानकारी मिली। मामले में एयरपोर्ट थाने में रिपोर्ट दी गई है।

अवैध मादक पदार्थ सहित एक पकड़ा

सरवाड़ ।बोराड़ा पुलिस ने मनोहरपुरा गांव के पास थानाधिकारी जगदीश चौधरी के नेतृत्व में की गई कार्यवाही कार की तलाशी के दौरान पुलिस ने नाकाबंदी के दौरान वाहन अल्टो कार से बरामद 20 किलो डोडा पोस्त जप्त किया गया वहीं आरोपी काछोला भीलवाड़ा निवासी श्याम वैष्णव को किया गिरफ़्तार किया गया वहीं बोराड़ा पुलिस ने मामला दर्ज कर मामले की जांच में जुटी हुई है।

खुला दूध गुणवत्ता जांच शिविर का आयोजन

अजमेर, (कासं)। अजमेर डेयरी द्वारा चंपा नगर डेयरी बूथ, ब्यावर में 'दूध का दूध पानी का पानी' जांच शिविर में दूध के 50 प्रतिशत नमूने विभिन्न स्तर के पाये गए।

आर.सी.डी.एफ. जयपुर लिमिटेड जयपुर के आदेशानुसार एवं अजमेर डेयरी द्वारा संघ के विपणन विभाग व गुण नियंत्रण विभाग के संयुक्त प्रयास से सोमवार को चंपा नगर, डेयरी बूथ, ब्यावर में खुला दूध गुणवत्ता जांच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें आम उपभोक्ताओं एंव दूधियों से प्राप्त हुए 32 खुले दूध के सैम्पलों में से 16.

■ सभी निम्न स्तर के सैम्पलों में पानी की मिलावट पाई गई

(50 प्रतिशत) दूध सैम्पल निम्न स्तर के पाए गए। सभी निम्न स्तर के सैम्पलों में पानी की मिलावट पाई गई।

प्रबंध संचालक रामलाल चौधरी ने बताया की ब्यावर जिले में अजमेर डेयरी द्वारा सोमवार को खुलें दूध की गुणवत्ता जांच के लिए 'दूध का दूध पानी का पानी' अभियान चलाया गया, क्योंकि आम तौर पर यह पाया जा रहा है कि दूधियों द्वारा धड़ल्ले से बेखौफ होकर मनमाने दामों पर उपभोक्ताओं को मिलावटी दूध बेचा जा रहा है तथा उनके स्वास्थ्य के साथ खिलवाड किया जा रहा है। मिलावट की इन गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए अजमेर डेयरी द्वारा एक टीम का गठन किया गया है, जिसके नोडल अधिकारी मुकेश पडौदा (ए.एस.ओ. विपणन) को नियुक्त किया गया है।

साथ ही गुण नियंत्रण शाखा से टैक्निकल स्टाफ दीपक व देवराज को सैम्पल कलेक्शन व जांच के लिए नियुक्त किया गया है। उपभोक्ताओं को खुले दूध के स्थान पर पाश्चुरिकृत दूध का सेवन करने को प्रेरित करने व खुले दूध में हो रही मिलावट व उसके सेवन से होने वाली स्वास्थ्य संबंधी हानियों के प्रति जागरूक करने के लिए प्रभारी विपणन लादूराम चौधरी के निर्देशानुसार अजमेर डेयरी के विपणन विभाग से श्वेता व्यास, सुमित कागंवा, अजीत काठात व राहुल चौधरी द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाये जाने का प्रयास किया गया। अगला शिविर15 जनवरी को कृषि मंडी के सामने, बिजयनगर में आयोजित किया जायेगा।

अजमेर डेयरी द्वारा चंपा नगर डेयरी बूथ, ब्यावर में 'दूध का दूध पानी का पानी' जांच शिविर में दूध के 50 प्रतिशत नमूने विभिन्न स्तर के पाये गए।

भूकंप मृतको को श्रद्धांजलि दी

■ तिब्बतियन लहासा रिफयूजी गर्म वस्त्र विक्रेता एसोसिएशन व सर्वधर्म समिति के पदाधिकारियों ने दी श्रद्धांजलि

अजमेर, (कासं)। तिब्बत, नेपाल, भूटान व भारत में भूकंप का प्रभाव होने पर हादसे में मृतको को सोमवार को पूर्णिमा के अवसर पर तिब्बतियन लहासा रिफयूजी गर्म वस्त्र विक्रेता एसोसिएशन व सर्वधर्म समिति के पदाधिकारियों द्वारा मृतको को श्रद्धांजलि अर्पित की।

बौद्धमठ के अध्यक्ष गुणवन्त राहुल और जन सेवा समिति महासचिव रमेश लालवानी ने बताया कि सोमवार को गर्म वस्त्र विक्रेता एसोसिएशन के अध्यक्ष चो गिल्तसन के नेतृत्व में तिब्बतियन भाषा में शान्ति पाठ की कथा का आयोजन हुआ और कैंडिल जलाकर भूकम्प में मृतकों की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। चो गिल्तसन ने बताया कि प्राकृतिक आपदा भूकम्प से मृतको को श्रद्वासुमन अर्पित करते हुए अपने संदेश में बताया कि प्राकृतिक आपदा को परमात्मा से प्रार्थना करके ही समाधान पाया जा सकता है। समस्त गर्म वस्त्र विक्रेताओं द्वारा उनके गुरू दलाई लामा की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्जवलित करके उनको नमन किया गया। इस अवसर पर विश्व शान्ति और मृतको की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थाना की।

कार्यालय अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

मूल आवंटी / अन्तरिति द्वारा निष्पादित वसीयतनामें के आधार पर नामान्तरण हेतु आम सूचना का प्रारूप

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि प्राधिकरण की माकड़वाली योजना के आवासीय भूखण्ड संख्या 32 खसरा नं. 463, 464 क्षेत्रफल 175 वर्गगज के आवंटी/अन्तरिति श्रीमती लीलावती पिपाड़ा पत्नि स्व. तारा चन्द पिपाड़ा निवासी चितौड़गढ़ की मृत्यु दिनांक 11/10/2011 को होने पर मृत्यु प्रमाण पत्र तथा वसीयतनामा (अपंजीकृत दिनांक 6/7/2009) सलंग्न कर मृतक द्वारा निष्पादित वसीयतनामें के आधार पर नामान्तरण हेतु श्री मनीष पिपाड़ा पुत्र स्व. तारा चन्द्र पिपाडा निवासी हाल चितौड़गढ़ द्वारा आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। उक्त नामान्तरण किये जाने के संबंध में किसी को आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन के 7 दिवस के भीतर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज करावें उक्त नियत अवधि पश्चात कोई आपत्ति स्वीकार योग्य नहीं होगी व आवेदकों के नाम नामान्तरण की कार्यवाही कर दी जायेगी। योजना प्रभारी अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

लोक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती भारती लोढ़ा पत्नि श्री महेन्द्र लोढ़ा की ग्राम लोहागल, तहसील व जिला अजमेर के खसरा नम्बर 1020 (साबिक) 948 (हाल) में भूखण्ड संख्या 05 क्षेत्रफल 333.33 वर्गगज के भूखण्ड की पत्रावली नियमन हेतु प्रक्रियाधीन है। उक्त भूखण्ड को पंजीकृत विक्रयपत्र द्वारा खातेदार श्री गिरवर सिंह पुत्र श्री मांगू सिंह द्वारा श्री शिवांशु गुप्ता पुत्र श्री अनिल गुप्ता को विक्रय किया गया था उसके पश्चात् श्री शिवांशु गुप्ता द्वारा नोटेरीशुदा मुख्तयारनामा आम श्री सुरेन्द्र लोढ़ा पुत्र श्री सोहनलाल लोढ़ा के पक्ष में निष्पादित किया गया है। मु.आम श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने पंजीकृत विक्रयपत्र द्वारा उक्त भूखण्ड श्री उम्मेदमल जैन पुत्र स्व. श्री पन्नालाल सिंघवी को विक्रय किया गया है। उसके पश्चात् उक्त भूखण्ड को श्री उम्मेदमल जैन द्वारा नोटेरीशुदा वसीयतनामा द्वारा श्रीमती भारती जैन को वसीयत किया गया है। उक्त भूखण्ड के नियमन के संबंध में दैनिक समाचार पत्र में विज्ञप्ति जारी कर 7 दिवस की आपत्ति आमंत्रित की जाती है। अतः किसी भी हितबद्धकारी को इस नियमन के संबंध में आपत्ति हो तो सूचना के 7 दिवस के भीतर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा नियमन कार्यवाही कर दी जायेगी। (उपायुक्त उत्तर) अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर।

कार्यालय नगर निगम, अजमेर

क्रमांक- न.नि.अ/24-25/भवन/750 दिनांक: 13-1-25

आपत्ति सूचना

श्री मनीष नानकानी पुत्र श्री वासुदेव नानकानी एवं विजय कुमार नानकानी पुत्र श्री भुगडोमल नानकानी निवासीगण प्लाट नं. 47-बी ग्रुप सिन्धुवाडी आशागंज, अजमेर द्वारा एक सम्पति जो थोक ए. एम.सी. नं. 8/426 = 16/289 है जो वाके गिदवानी मार्केट के पास धानका बस्ती सिनेमा रोड पडाव अजमेर में स्थित है जिसका कुल क्षेत्रफल 31.97 वर्गमीटर है। भूमि के वर्तमान मास्टर प्लान 2033 के व्यावसायिक मानचित्र स्वीकृति हेतु निर्धारित प्रपत्र में इस कार्यालय आवेदन पत्र प्रस्तुत किया अनुसार हैं। प्रस्तावित भू-भाग की सीमाएँ निम्नानसार हैं।

पूर्व - नाला तत्पश्चात् रोड पश्चिम - आदर्श विधालय

उतर - आदर्श विधालय दक्षिण - धानका बस्ती

अतः जरिए इस सूचना के पूर्व सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि किसी भी व्यक्ति/संस्था को इस संबंध में कोई आपत्ति हो तो इस सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर-अन्दर किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय समय में ठोस दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकता हैं। बाद मियाद किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा। उपायुक्त नगर निगम, अजमेर

कार्यालय अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

मूल आवंटी/अन्तरिति की मृत्यु उपरान्त उसके द्वारा निष्पादित पंजीकृत गोद नामा के आधार पर नामान्तरण हेतु आम सूचना का प्रारूप

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि प्राधिकरण की दीनदयालपूरम योजना के आवासीय/व्यावसायिक भूखण्ड संख्या सी-542, सी - 541, सी- 540, सी-539, सी-538, सी-537, सी-536, सी-535, सी-534, सी-533, सी-532, सी-229, क्षेत्रफल कुल 2020.5 वर्ग मीटर के आवंटी / अन्तरिति श्री कालु पुत्र श्री हरनाथ, निवासी ग्राम तबीजी की मृत्यु दिनांक 31.08.2022 को होने पर मृत्यु प्रमाण पत्र तथा गोद नामा (पंजीकृत/ अपंजीकृत दिनांक 11.10.2002) सलंग्न कर मृतक द्वारा निष्पादित गोद नामा के आधार पर नामान्तरण हेतु श्री इन्दरपाल उर्फ शौकीन पुत्र श्री रामकरण, निवासी- गांव तबीजी द्वारा आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। उक्त नामान्तरण किये जाने के संबंध में किसी को आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के भीतर आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज करावें। उक्त नियत अवधि पश्चात कोई आपत्ति स्वीकार योग्य नहीं होगी व आवेदक के नाम नामान्तरण की कार्यवाही की जा सकेगी।

योजना प्रभारी अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

नन्हे बच्चों कों बांटे तिल के लड्डू

मेड़ता सिटी, (निसं)। मेड़ता शहर के मेळा मेदान मे बांस बनजारों कि झूगी झोम्पडियो के नन्हे बालक बालिकाओ कों मकर शक्रांति के अवसर पर तिल के लड्डू खिलाकर खुशियाँ बाँटी तथा मोके पर संस्थान के कार्यकर्ताओ द्वारा सभी बच्चों कों ज्यादा से ज्यादा स्कूल से जुड़ने का आव्हान किया। वही साथ में झोपड़ियो मे जा कर कार्यकर्ताओ ने अभिभावको कों प्रेरित किया । संस्थान निदेशक केलाश जांगिड़ ने बताया कि हम इस संस्थान के माध्यम से समाज सेवा से जुड़े कार्य करने का प्रयास करते है इसी कड़ी मे हम आज इस मोके पर बांस बनजारो कि झुग्गी झोपड़ियो मे जाकर सभी लोगौ का मुँह मीठा करवाकर उनसे अपने बच्चों कों ज्यादा से ज्यादा स्कूलों से जोड़कर निरंतर पढ़ाई करवाने कि बात कहीं। इस मौके पर श्याम बोराणा, अमित टाक, डूंगर दान चारण, रामेश्वर घाँची, एडवोकेट वेंकटेश्वर तिवारी, कृष्णकांत दहिया,एडवोकेट धीरज देवल सहित संस्था के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित रहे

नर्सिंग कमियों ने प्रदर्शन किया

जोधपुर, (कासं)। डॉ. एसएन मेडिकल कॉलेज जोधपुर में यूटीबी नर्सिंग अधिकारियों को रिक्त पदों पर समायोजित करने की मांग को लेकर सोमवार को राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन जोधपुर शहर द्वारा धरना-प्रदर्शन किया गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन जोधपुर शहर के कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष एवं जिलाध्यक्ष जगदीश जाट ने बताया कि नए नर्सिंग अधिकारी मिलने के बाद कई अस्पतालों में पूर्व से पदस्थापित यूटीबी नर्सिंग अधिकारियों को हटा दिया गया है। हालांकि यहां अभी भी कई सैकड़ों पद रिक्त है। कुछ दिन पहले मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल व नियंत्रक डॉ. बीएस जोधा ने उन्हें वापस पदस्थापित करने का आश्वासन दिया था। इसके बावजूद मंडोर सैटेलाइट अस्पताल में कार्यरत यूटीबी नर्सिंग कर्मचारियों को हटा दिया गया है।

पाली में रैन बसेरा का निरीक्षण

पाली, (नि.सं.)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के निर्देशानुसार सर्दी के मौसम में खुले आसमान के नीचे रहने को मजबूर बेसहारा, गरीब, बेघर व असहाय व्यक्तियों, महिलाओं एवं बच्चों को रैन बसेरों या आश्रय स्थलों मे प्रवेश करवाये जाने के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (अपर जिला न्यायाधीश) पाली सचिव विक्रम सिंह भाटी द्वारा रामलीला मैदान स्थित आश्रय स्थल पाली का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान सचिव भाटी द्वारा आश्रय स्थल में सर्दी से बचाव के लिए कंबल, बिस्तर, भोजन-पेयजल व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था इत्यादि के संबंध में जानकारी ली गई।

आम सूचना

मेरी माता जमना देवी पत्नि प्रहलाद जाति भील निवासी ग्राम जुगलीपुरा की मृत्यु दिनांक 10/07/2004 को मेरे निवास स्थान पर ग्राम जुगलीपुरा में हो गयी थी। जिसका पूर्व में इन्द्राज ग्राम पंचायत सिरोंज में नहीं करवाया था। अब मैं मेरी माता जमना देवी भील का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए अरांई तहसील कार्यालय में आवेदन किया है। मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए जिस किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो 7 दिन में मय दस्तावेज के साथ अरांई तहसीलदार के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद मियाद कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

प्रार्थी- हनुमान पुत्र प्रहलाद भील निवासी ग्राम जुगलीपुरा तह. अरांई (अजमेर)

कैबिनेट मंत्री गहलोत का मेड़ता पहुंचने पर किया गया अभिनंदन

मेडतासिटी । राजस्थान सरकार में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के कैबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत के देर शाम मेड़ता पहुंचने पर कार्यकर्ताओं ने अजमेर बाई पास स्थित होटल डारा पैलेस में माला और साफा पहनाकर स्वागत और अभिनंदन किया। इस दौरान मंत्री गहलोत के सभी से कहा कि समाज और राष्ट्र के लिए काम करने वाला महापुरुषों को याद करके सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते रहना चाहिए। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि राज्य सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का प्रचार प्रसार हम सभी को करना चाहिए ताकि सामान्य समाज के जरूरत मंद नागरिकों को इसका सीधा लाभ मिल सके। मंत्री गहलोत ने उनके द्वारा चलाई जा रही जंजीर से जीवन की ओर मुहिम में सहयोग करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओ का भी धन्यबाद दिया। गौरतलब है कि मंत्री गहलोत ने अपने विभाग के स्तर पर एक जंजीर से जीवन की ओर नमक मुहिम चला रखी है जिसमें वर्षों से अपने ही घर में बेड़ियों से बंधे हुए नागरिकों को उनके परिवार को समझाकर बेड़ियों से मुक्त करवाया जा रहा है। तथा उनका इलाज भी कराया जा रहा है। इस दौरान सामाजिक कार्यकर्ता जितेन्द्र गहलोत,पार्षद राजेन्द्र सांखला,पार्षद दिलीप माली, समाज सेवी विजू भाई सांखला, पार्षद ओमप्रकाश गहलोत, ताराचंद सांखला, सुनील, रविन्द्र गहलोत, ओमप्रकाश तंवर, गजराज,अर्जुन गहलोत,राजू सांखला, बाबूलाल तंवर, सुनील सांखला, मेघराज टेलर,धनश्याम घांची, राकेश चौधरी,रामनिवास छरंग, ईश्वर सिंह,देवराज सहित अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

जोधपुर के 12 केन्द्रों पर आज स्वर्णप्राशन

जोधपुर, (कासं) । डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा संचालित स्वर्णप्राशन कार्यक्रम 14 जनवरी, मंगलवार को पुष्यनक्षत्र योग में बारह जगहों पर रखा गया है।

इसमें एम्स, जोधपुर की आयुष ओ.पी.डी. में, जालोरी गेट के निकट शनिश्चर थान, सम्राट अशोक उद्यान के सामने भवानी आदर्श विद्या मंदिर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थित लवकुश गृह-नवजीवन संस्थान, बाल बसेरा सेवा संस्थान, मगरा पूंजला स्थित राजकीय किशोर बालगृह, विश्वविद्यालय आयुर्वेद चिकित्सालय, करवड़, गोद-ठााम घड़ाव के राजकीय विद्यालय विक्टोरियन किड्स स्कूल एवं राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड में आयोजित किया जायेगा।

आम सूचना

मेरे पिता रामकरण पुत्र गोगदा जाति जाट निवासी ग्राम दादिया की मृत्यु दिनांक 20/03/2014 को मेरे निवास स्थान पर ग्राम दादिया में हो गई थी जिसका पूर्व में इन्द्राज ग्राम पंचायत दादिया में नहीं करवाया था। अब मैं मेरे पिता रामकरण जाट का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए अरांई तहसील कार्यालय में आवेदन किया है। मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए जिस किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो 7 दिन में मय दस्तावेज के साथ अरांई तहसीलदार के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद मियाद कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

प्रार्थी- उमराव पुत्र रामकरण जाट ग्राम दादिया तह. अरांई (अजमेर)

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

लोक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है की श्रीमती चमन बानो पत्नी अहमद खान ग्राम मकड़वाली, तहसील अजमेर के वर्किंग खसरा नंबर 714, प्लाट नंबर 53 में क्षेत्रफल 133.33 वर्गगज के भूखंड की पत्रावली नियमन हेतु प्रक्रियाधीन है। उक्त नियमन के सम्बन्ध में दैनिक समाचार पत्र में विज्ञप्ति जारी कर 7 दिवस की आपत्ति आमंत्रित की जाती है। अत- किसी भी हितबद्धकारी को इस नियमन के सम्बन्ध में आपत्ति हो तो आम सुचना के 7 दिवस के भीतर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा नियमन कार्यवाही कर दी जायेगी।

(उपायुक्त उत्तर) अजमेर विकास प्राधिकरण अजमेर

कार्यालय नगर पालिका बिजयनगर जिला ब्यावर राजस्थान

क्रमांक -न.प.वि/निर्माण.स्वी./2024/4930 **आम सूचना** दिनांक : 7.1.2025

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि निम्नांकित मकान निर्माण हेतु निम्न भवन निर्माण पत्रावली प्राप्त हुई है, अगर किसी को आपत्ति/उज्र हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 07 दिवस में मय सबूत के अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है, बाद मियाद, गुजरने पर कोई उज्र / आपत्ति मान्य नहीं होगी।

भवन निर्माण

फाइल नं.	आवेदक नाम	भूखण्ड का विवरण	भूखण्ड का नाप	प्रयोजनार्थ
143	मन्जूर अली पुत्र अब्बास अली	वैभव विहार कॉलोनी चौसला ख.सं. 4122, 4454/4121, 4460/4098, 4096 प्लाट नं. 75	83.61 SQ.MTR	आवासीय

अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका बिजयनगर

कार्यालय नगर परिषद किशनगढ (अजमेर) राजस्थान

क्रमांक: न.प.कि/कृषि भूमि नियमन/2025/613 दिनांक-13-1-25

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर परिषद किशनगढ़ में निम्न भूखण्ड का वितरण राजस्व ग्राम मदनगंज के खसरा न. 255 / 1 में से भूखण्ड संख्या 19 का भू भाग का क्षेत्रफल 55.91 वर्गगज भूमि का आवासीय पट्टा चाहनें हेतु कृषि भूमि नियमन प्रकरण विचाराधीन है। अत: निम्न खसरा नम्बर के भूखण्ड नियमन में संबंधित किसी व्यक्ति / संस्था को कोई आपति हो तो इस सूचना के प्रकाशन की दिनांक से 07 दिवस में इस कार्यालय को लिखित में आपतियां / कारण / विवरण सहित कार्यालय समय में दर्ज करावें।

क्रसं.	प्रार्थी का नाम	राजस्व ग्राम का नाम एवं खसरा नं.	क्षेत्रफल रकबा/ भूखण्ड संख्या	प्रस्तावित कृषि भूमि नियमन
1.	अनवर अली पुत्र बाबू शाह निवासी बडगांव रोड ग्राम डीडवाडा तहसील किशनगढ जिला अजमेर राज0 हाल निवासी पोल्ट्री फार्म के पास मदनगंज किशनगढ जिला अजमेर राज0	मदनगंज खसरा न. 255/1	भूखण्ड 19 भू भाग का क्षेत्रफल 55.91 वर्गगज	आवासीय

प्रभारी नगर परिषद किशगनढ

आम सूचना

हमारी फर्म मैसर्स ऐ.के. ज्वैलर्स (Reg. No. 17/01/19/2012) मकराना रोड़, मदनगंज किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजरथान) के हम छः भागीदार क्रमशः 1. अशोक पाटनी, 2. सुशीला पाटनी, 3. विनीत पाटनी, 4 शुचि पाटनी, 5. आदि पाटनी, 6. अरहन पाटनी थे। हम सभी भागीदारों द्वारा आपसी सहमति से उक्त फर्म मैसर्स ऐ.के. ज्वैलर्स का विघटन दिनांक 06 जनवरी, 2025 को कर दिया गया था। अत: किसी भी व्यक्ति व संस्था को एतराज हो तो सात दिवस में सूचित करें।

मैसर्स ऐ.के. ज्वैलर्स sd/- अशोक पाटनी (पार्टनर) आर. के, हाऊस, मदनगंज-किशनगढ़

कार्यालय नगर परिषद किशनगढ़ (अजमेर) राज.

क्रमांक/न.प.कि/कृ.भूमि/2025/821 दिनांक: 13-01-2025

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्व ग्राम किशनगढ़ बी के खसरा संख्या 91 पर स्थित आवासीय (भूखण्ड संख्या 7 से 12 क्षेत्रफल 1093.33 वर्गगज में से विखण्डित भूखण्ड क्षेत्रफल 158.33 वर्गगज) पर श्रीमती सीमा चौधरी पत्नि श्री शिवचरण चौधरी ने आवेदन प्रस्तुत कर उपविभाजन चाहा गया है। जिसकी सीमाऐ निम्न प्रकार से है-

पूर्व में - सीमा चौधरी का भूखण्ड पश्चिम में - देवा राम का भूखण्ड

उत्तर में - 15 फीट चौड़ा रास्ता दक्षिण में - मनमोहन नगर खसरा नम्बर 90 की भूमि पर विकसित आवासीय मकान

अत: उक्त नाम हस्तान्तरण प्रकरण में किसी भी व्यक्ति/संस्था को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो सूचना के प्रकाशन की दिनांक से 07 दिवस में इस कार्यालय में प्रस्तुत करे अन्यथा बाद मयाद किसी भी प्रकार की आपत्ति स्वीकार नहीं होगी। प्रभारी नगर परिषद, किशनगढ़

चाईनीज मांझा का उपयोग करने पर होगी कार्यवाही

अजमेर, (कासं)। मकर सक्रांति के अवसर पर पतंग उड़ाने के लिए चायनीज मांझे का उपयोग प्रतिबंधित है। इसका उपयोग करने पर कठोर कार्यवाही की जाएगी। पतंगबाजी से घायल पक्षियों का उपचार पशुपालन विभाग द्वारा सुनिश्चित किया जाएगा।

पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. सुनील घीया ने बताया कि राष्ट्रीय ग्रीन ट्रिब्यूनल के आदेशों की अनुपालना में नाईलोन या किसी अन्य सिंथेटिक समाग्री से बने और सिंथेटिक पदार्थ से लेपित, चायनीज और गैर बायोडिग्रेडेबल मांझे या धागे का उपयोग प्रतिबन्धित है। इस प्रकार के मांझे का निर्माण एवं विक्रय व उपयोग नहीं करें।

उल्लंघन करने वालों के विरूद्ध पशु क्रूरता का का निवारण अधिनियम 1960 के तहत कठोर कार्यवाही अमल में लाई जाएगी। पतंग उडाने को सीमित रखें। सूर्योदय के बाद सुबह 6 से 8 बजे तक व सायंकाल 5 से 7 बजे तक का समय पक्षियों के उडान तथा विचरण का होता है। इस समय पतंग नहीं उडाएं। पक्षी आवासी व घने पेड़ आदि के आसपास पतंगबाजी नहीं करें।

कार्यालय नगर परिषद किशनगढ़ (अजमेर) राज.

क्रमांक/न.प.कि/कृ.भूमि/2025/825 दिनांक: 13-01-2025

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्व ग्राम मदनगंज के खसरा संख्या 612, 613, 614 पर स्थित आवासीय (भूखण्ड संख्या 16 क्षेत्रफल 216.66.00 वर्गगज) पर श्रीमती घीसी देवी पत्नि श्री हरिप्रसाद ने आवेदन प्रस्तुत कर नाम हस्तान्तरण चाहा गया है। जिसकी सीमाऐ निम्न प्रकार से है-

पूर्व में - 30 फीट चौडा रास्ता पश्चिम में - भूखण्ड संख्या 13

उत्तर में - 1भूखण्ड संख्या 17 दक्षिण में - भूखण्ड संख्या 15

अत: उक्त नाम हस्तान्तरण प्रकरण में किसी भी व्यक्ति/संस्था को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो सूचना के प्रकाशन की दिनांक से 07 दिवस में इस कार्यालय में प्रस्तुत करे अन्यथा बाद मयाद किसी भी प्रकार की आपत्ति स्वीकार नहीं होगी। प्रभारी नगर परिषद, किशनगढ़

दिव्यांग उपकरण शिविर 16 को

मसूदा, (निसं)। जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा मसूदा पंचायत समिति में कोई भी पात्र दिव्यांगजन अंग / उपकरण से वंचित न रहेइसको लेकर राजस्थान सरकार के वर्ष 2024-25 की बजट घोषणा संख्या 92 (1) उपमुख्यमंत्री द्वारा दिव्यांगजनों को संबल प्रदान करने की दृष्टि से बीस हजार तक के अंग उपकरण उपलब्ध कराए जाने हेतु पंचायत समिति मुख्यालयों पर निम्नानुसार शिविर आयोजित किए जाएंगे इसी के तहत मसूदा पंचायत समिति के सभागार में गुरुवार 16 जनवरी को प्रात: 10 बजे से शाम 4 बजे तक दिव्यांगजनों को अंग उपकरण उपलब्ध कराने के लिए पात्र लोगों का चिन्हिकरण (श्री भगवान महावीर सेवा समिति द्वारा अंग उपकरण उपलब्ध करवाये जायेंगे)।

दिव्यांगजनों को स्वावलंबन पोर्टल पर आवेदन करवाकर नवीन यूडीआईडी कार्ड जारी करना एवं ऐसे दिव्यांगजन जिनकाऑफलाईन दिव्यांगता प्रमाण पत्र बना हुआ है को डिजिटल प्रमाण पत्र जारी करना।दिव्यांगजनों को रोडवेज पास जारी करना।विभागीय योजनओं जैसे स्वरोजगार ऋण योजना, सुखद दाम्पत्य योजना, छात्रवृति योजना एवं दिव्यांग पेंशन एवं पालनहारयोजना के नवीन आवेदन करवाना।अन्य योजनाएं जो दिव्यांगजनों से संबंधित है के आवेदन प्राप्त कर लाभान्वित करना। आवश्यक दस्तावेज: शिविर में आने वाले दिव्यांगजन अपने साथ स्वयं की 01 दिव्यांगता दर्शाती हुई फोटो, आधार कार्ड, जनआधार कार्ड, यूडीआईडी कार्ड/दिव्यांगता प्रमाण पत्र, पेंशन पीपीओ की आदेश कॉपी एवं जिनके पास पहले से ऑफलाईन बना हुआ दिव्यांग प्रमाण पत्र है साथ लेकर उपस्थित हों।यह जानकारी विशाल सिहं सोलंकी जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा दी गई ।

सिन्ध की भूमि पाने के लिए अंतिम क्षण तक हो प्रयास-लोहाणा

अजमेर, (कासं)। यह हमारा सौभाग्य है कि हम आज महाराजा दाहरसेन की स्मृति स्थल पर है, जिन्होने अपना पूरा परिवार मातृ भूमि की रक्षा के लिए न्योछावर कर दिया, ऐसी भावना हम में भी जागृत है कि सिन्ध की भूमि को अपने अन्तिम क्षण तक पाने के लिए हम प्रयासरत रहेंगे। ऐसे प्रेरणा केन्द्र के लिए हम ओंकार सिंह लखावत का धन्यवाद व आभार प्रकट करते है और उनकी प्रेरणा से जो बलिदान दिवस व जयन्ती मनाते है, हम भी ऐसे आयोजन देश-विदेश में भी करेंगे, यह विचार लंदन से आए वर्ल्ड सिन्धी कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. लखू लोहाणा ने सोमवार को सिन्धुपति महाराजा दाहरसेन स्मारक पर अवलोकन करते हुए कहे। उन्होने सिन्ध में स्वतंत्रता आंदोलन में सिन्ध के वीर महापुरूष राणा रतन सिंह, रूपलो कोल्ही, हेमू कालाणी व अन्य प्रतिमाओं पर पुष्प अर्पित किए, हिंगलाज माता की पूजा अर्चना, सिन्ध के मानचित्र पर रक्षासूत्र बांधकर सिन्ध की भूमि हमें वापस मिले।

अजमेर प्रवास पर आए डॉ. लखू लोहाणा व उनके साथियों ने महाण्डलेश्वर हंसराज उदासीन व अन्य संतों से भेंट कर आर्शीवाद प्राप्त किया व सिन्धु इतिहास एवं साहित्य शोध संस्थान पर एकत्रित सिन्धी साहित्य के संकलन को देख कर आनन्दित हुएए जिसमें सिन्ध के संत महात्मा, स्वतंत्रता सेनानियों, सिन्धु नदी, मोहन जो दड़ों व सिन्धुघाटी सभ्यता का इतिहास व चित्रों को देखकर अभिभूत हुए व शोध संस्थान के अध्यक्ष कंवल प्रकाश किशनानी ने साहित्य की पुस्तके भेंट की। इस अवसर पर बाड़मेर के चारण समाज के कार्यकारी अध्यक्ष तेजदान, जोधपुर के इतिहासकार डॉ.रघुवीर सिंह सोढ़ा व दलपत सिंह सोढ़ा ने भी अवलोकन कर अपने विचार रखें।बाबा ईसरदास की समाधि से आज भी प्रेरणा मिलती है।

आम सूचना

मेरी माता लाडा पत्नि भूरा जाति माली निवासी ग्राम गोठियाना की मृत्यु दिनांक 06-05-2023 को मेरे निवास स्थान पर ग्राम गोठियाना में हो गई थी। जिसका पूर्व में इन्द्राज ग्राम पंचायत गोठियाना में नहीं करवाया था। अब मैं मेरी माता लाडा माली का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए अरांई तहसील कार्यालय में आवेदन किया है। मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए जिस किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो 7 दिन में मय दस्तावेज के साथ अरांई तहसीलदार के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद मियाद कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

प्रार्थी- गोपाल पुत्र भूरा माली ग्राम गोठियाना तह. अरांई (अजमेर)

आम सूचना

मेरी पत्नि श्रीमति काली पत्नि लाला जाति जाट निवासी ग्राम छोटा लाम्बा की मृत्यु दिनांक 14/08/2004 को मेरे निवास स्थान पर ग्राम छोटा लाम्बा में हो गई थी। जिसका पूर्व में इन्द्राज ग्राम पंचायत छोटा लाम्बा में नहीं करवाया था। अब मैं मेरी पत्नि काली जाट का मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए अरांई तहसील कार्यालय में आवेदन किया है। मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए जिस किसी व्यक्ति को आपत्ति हो तो 7 दिन में मय दस्तावेज के साथ अरांई तहसीलदार के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद मियाद कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

प्रार्थी- लाला पुत्र सुगना जाट ग्राम छोटा लाम्बा तह. अरांई (अजमेर)

कार्यालय नगरपालिका मण्डल नावां शहर जिला डीडवाना कुचामन (राजस्थान)

टेलीफैक्स: 01586-263157 ई-मेल: npnawa@gmail-com

क्रमांक- न.पा. नावां/2024-25/2323 दिनांक-07/01/2025

लोक सूचना

श्री दिनेश पुत्र सोहनलाल, श्री गौरीशंकर टांक पुत्र सोहनलाल, श्री कैलाश पुत्र सोहनलाल व श्रीमति चन्दा देवी पुत्री सोहनलाल जाति खटीक निवासी नावां जिला डीडवाना कुचामन (राज.) हाल निवासी अहमदाबाद (गुजरात) ने इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित भूमि का गैर कृषिक प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वाचन के लिये आवेदन प्रस्तुत किया है। अर्थात

जिले सहित तहसील का नाम	राजस्व ग्राम का नाम	खसरा नं.	क्षेत्रफल	प्रयोजन
तहसील नावां जिला डीडवाना कुचामन	नावां	2700/112	रकबा 0.3880 हैक्टेयर	आवासीय योजनार्थ
तहसील नावां जिला डीडवाना कुचामन	नावां	2702/112	रकबा 0.3880 हैक्टेयर	आवासीय योजनार्थ
तहसील नावां जिला डीडवाना कुचामन	नावां	2703/112	रकबा 0.3880 हैक्टेयर	आवासीय योजनार्थ
तहसील नावां जिला डीडवाना कुचामन	नावां	2704/112	रकबा 0.5480 हैक्टेयर	आवासीय योजनार्थ
तहसील नावां जिला डीडवाना कुचामन	नावां	2705/112	रकबा 0.1500 हैक्टेयर	आवासीय योजनार्थ

इसलिए इसके द्वारा समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90 - क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जावेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर एवं पालिका मुद्रा से आज दिनांक 07.01.2025 को जारी की गयी। प्राधिकृत अधिकारी नगर पालिका मण्डल नावा

विराट और रोहित बहुत बड़े खिलाड़ी है और खेल में अपने भविष्य का फैसला उन्हें खुद करने दीजिए। - कपिल देव

पूर्व भारतीय खिलाड़ी, विराट कोहली और रोहित शर्मा के भविष्य के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी शोएब अख्तर

भारतीय कप्तान रोहित शर्मा और स्टार बल्लेबाज विराट कोहली की फॉर्म टीम इंडिया की सबसे बड़ी चिंता बनी हुई है। आगामी चैंपियंस ट्रॉफी में भी ये दोनों बल्लेबाज खेलते हुए आ सकते हैं। कोहली ने इससे पहले बीजीटी के पहले टेस्ट पर्थ में शतक जरूर लगाए लेकिन उसके बाद चार टेस्ट में वो फेल रहे। ऐसे में अब भारत के सामने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की बड़ी अग्निपरीक्षा है। ऐसे में जब पूर्व पाकिस्तानी तेज गेंदबाज शोएब अख्तर से रोहित और विराट कोहली की फॉर्म के बारे में पूछा गया तो उन्होंने हैरान करने वाली बात कही।

क्या आप जानते हैं ?... भारत टी-20 इतिहास में एक कैलेंडर वर्ष में 200 छक्के लगाने वाली पहली टीम बन गई, ऐसा उसने 2024 में किया।

बीसीसीआई के नए सचिव देवजीत सैकिया

नई दिल्ली, 13 जनवरी। बीसीसीआई को अपना नया सचिव मिल गया है। असम के पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज और वकील देवजीत सैकिया ने इस पद का कार्यभार संभाला। देवजीत ने जय शाह की जगह ली जो मौजूदा समय में आईसीसी के चेयरमैन हैं। देवजीत सैकिया को

निर्विरोध चुना गया। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा के साथ पढ़े सैकिया अगले दस महीने या पदाधिकारियों के लिए अगले दौर के चुनाव होने तक इस पद पर बने रहेंगे। एक क्रिकेटर के तौर पर सैकिया का करियर एक सीजन और चार मैच तक ही चला। इसके बाद उन्होंने क्रिकेट छोड़ कर वकील बन गए।देवजीत सैकिया जल्द ही क्रिकेट के प्रति इच्छआओं को छोड़कर और कानून की डिग्री के लिए दस्ताने और बल्ले को छोड़ दिया। वह 1997 में 21 साल की उम्र में अपना आखिरी रणजी मैच खेले। इसके 6 साल बाद उन्होंने भारतीय रिजर्व बैंक में अपनी नौकरी छोड़ी और आपराधिक और बीमा कानूनों में विशेषज्ञता के साथ गुवाहाटी हाई कोर्ट में वकालत शुरू कर दी। लेकिन खेल से उनका नाता बना रहा। सैकिया ने राज्य में सिक्स साइड टूर्नामेंट और क्लब गेम्स के साथ-साथ भारतीय वकीलों की टीमों से खेलना जारी रखा। सैकिया के करियर में बड़ा पल तब आया जब उन्होंने असम क्रिकेट एसोसिएशन पर आरोप लगाया कि एसोसिएशन ने धन का दुरुपयोग किया है। कई सालों के कानूनी लड़ाई और आरोपों के बाद 2019 में एक नई सरकार ने एसोसिएशन को अपने अधीन कर लिया जिसके सचिव सैकिया थे।

जयपुर पोलो सीजन 2025 का कल से होगा आगाज

जयपुर, 13 जनवरी। बहुप्रतीक्षित जयपुर पोलो सीजन 2025 की शुरुआत 15 जनवरी से महाराज पृथी सिंह बारिया कप (06 गोल) से होने जा रही है। पहले दिन 15 जनवरी को कैवेलरी ग्राउंड पर दो मैच खेले जाएंगे। जिसमें पहला मुकाबला टीम आरपीसी/एएससी और कैवेलरी रॉयल एन्फील्ड के बीच होगा। वहीं दूसरा मैच टीम रामबाग पोलो और अरावली के बीच खेला जाएगा। इसी प्रकार टूर्नामेंट के अन्य मुकाबले 16 और 17 जनवरी को कैवेलरी, राजस्थान पोलो क्लब ग्राउंड (आरपीसी) और पीपीसी पर होंगे। टूर्नामेंट का फाइनल 19 जनवरी को खेला जाएगा। इस टूर्नामेंट में 6 टीमें भाग ले रही हैं। जिन्हें दो पूल में विभाजित किया गया है। पूल ए में टीम आरपीसी/एएससी, कैवलरी रॉयल एन्फील्ड और टीम जयपुर शामिल हैं। वहीं पूल बी में टीम रामबाग पोलो, चांदना मेयफेयर और अरावली शामिल हैं। गौरतबल है कि जयपुर पोलो सीजन 2025 , 30 मार्च तक चलेगा और इस दौरान कई रोमांचक मुकाबले देखने को मिलेंगे।

राजस्थान अंडर-23 वीमेन टीम घोषित

जयपुर, 13 जनवरी। राजस्थान महिला चयन कमेटी ने आगामी 16 जनवरी को त्रिवेंद्रम में उत्तराखंड के विरुदखेले जाने वाली बीसीसीआई की राष्ट्रिय अंडर 23 वीमेन टी20ट्रॉफी हेतु राजस्थान टीम का चयन किया।

चयनित राजस्थान अंडर 23 वीमेन टीम :- आयुषी गर्ग (कप्तान), यशस्वी कट्टा, याना वर्मा, शानू सेन, सिद्दी शर्मा (उपकप्तान), रुद्राक्षी सिंह, दीक्षा सैनी, उषा, डिंपल कँवर, मनीषा कुंतल, निशा गारती, कनिष्कासिसोदिया, निवेदिता कविया, रिज़ा शेख, ज्योति चौधरी, बबीता, अनाया गर्ग, कौशल्या चौधरी।

स्वियाटेक ने ऑस्ट्रेलियन ओपन टेनिस में जीत के साथ अभियान की शुरुआत की

मेलबर्न, 13 जनवरी। विश्व की दूसरे नंबर की टेनिस खिलाड़ी इगा स्वियाटेक ने सोमवार को पहले दौर के मैच में चेक गणराज्य की खिलाड़ी कैटरीना सिनियाकोवा को हराकर ऑस्ट्रेलियन ओपन में विजयी अभियान की शुरुआत की। आज यहां चार बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन स्वियाटेक ने 81 मिनट तक चले मुकाबले में कैटरीना सिनियाकोवा को सीधे सटों में 6-3, 6-4 से हराया। अगले दौर में स्वियाटेक का मुकाबला स्लोवाकिया की रेबेका स्त्रामकोवा के साथ होगा। मैच के बाद स्वियाटेक ने कहा, ईमानदारी से कहूं तो मुझे यहां हर स्टेडियम में खेलना पसंद है। जॉन कैन में मैंने कई बेहतरीन मैच खेले है।

चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 के लिए टीमों ने किया स्क्वॉड का ऐलान

नई दिल्ली, 13 जनवरी। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का आगाज 19 फरवरी से होने जा रहा है। इस टूर्नामेंट में कुल 8 टीमें हिस्सा ले रही हैं। जहां अभी तक 5 टीमों ने अपने स्क्वॉड का ऐलान किया है। आईसीसी ने प्रोविजनल स्क्वॉड का ऐलान करने के लिए 12 मार्च की तारीख तय की थी, लेकिन अभी तक 3 टीमों ने अपने स्क्वॉड का ऐलान नहीं किया है। इसमें टीम इंडिया भी शामिल है। भारत के अलावा पाकिस्तान और साउथ अफ्रीका ने अपने-अपने स्क्वॉड का ऐलान नहीं किया है। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 हाइब्रिड मॉडल के तहत खेला जाएगा। इसमें भारत के सभी मैच दुबई में होंगे। वहीं एक सेमीफाइनल मुकाबला भी दुबई में होगा। 9 मार्च को टूर्नामेंट का फाइनल है जिसका वेन्यू अभी तय नहीं है। चैंपियंस ट्रॉफी में हिस्सा लेने वाली 8 टीमों को 4-4 के दो ग्रुप में बांटा गया है। ग्रुप-ए में भारत के साथ पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और बांग्लादेश है। जबकि ग्रुप बी में ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, साउथ अफ्रीका और अफगानिस्तान है।

सभी टीमों पर एक नजर

ऑस्ट्रेलिया- पैट कमिंस (कप्तान), एलेक्स कैरी, नाथन, एलिस, आरोन हार्डी, जोश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जोश इंगलिस, मार्नस लाबुशेन, मिशेल मार्श, ग्लेन मैक्सवेल, मैट शॉर्ट, स्टीव स्मिथ, मिशेल स्टार्क, मार्कस स्टोइनिस, एडम जम्पा।

इंग्लैंड- जोस बटलर (कप्तान), जोफ्रा आर्चर, गस एटकिंसन, जैकब बेथेल, हैरी ब्रूक, ब्रायडन कार्स, बेन डकेट, लियाम लिविंगस्टोन, साकिब महमूद, जेमी ओवरटन, आदिल राशिद, जो रूट, फिल साल्ट, जेमी स्मिथ (विकेटकीपर), मार्क वुड।

न्यूजीलैंड- मिचेल सेंटनर (कप्तान), माइकल ब्रेसवेल, मार्क चैपमैन, डेवोन कॉन्वे, लॉकी फर्ग्यूसन, मैट हेनरी, टॉम लैथम, डेरिल मिशेल, विल ओरुरके, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रविंद्र, बेन सियर्स, नाथन स्मिथ, केन विलियमसन, विल यंग।

बांग्लादेश- नजमुल हुसैन (कप्तान), तंजीद हसम तमीम, सौम्य सरकार, परवेज हुसैन इमोन, मुश्फिकुर रहीम, तौहीद ह्रदोय, महमुदुल्लाह, मेहदी हसन, जेकर अली अनिक, रिशाद हुसैन, नसुम अहमद, तंजीम हसन साकिब, नाहिद राणा, तस्कीन अहमद और मुस्तफिजुर रहमान।

अफगानिस्तान- हशमतुल्लाह शाहिदी (कप्तान), इब्राहिम जादरान, रहमानुल्लाह गुरबाज, सेदिकुल्लाह अटल, रहमन शाह, इकराम अलीखिल, गुलबदीन नायब, अजमतुल्लाह उमरजई, मोहम्मद नबी, राशिद खान, एएम गजनफर, नूर अहमद, फज़लहक फारूकी, फरीद मलिक, नवीद जादरान।

आईसीसी पुरुष चैंपियंस ट्रॉफी 2025 शेड्यूल

19 फरवरी - पाकिस्तान बनाम न्यूजीलैंड, नेशनल स्टेडियम, कराची, 20 फरवरी - बांग्लादेश बनाम भारत, दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, दुबई, 21 फरवरी - अफगानिस्तान बनाम दक्षिण अफ्रीका, नेशनल स्टेडियम, कराची, 22 फरवरी - ऑस्ट्रेलिया बनाम इंग्लैंड, गद्दाफी स्टेडियम, लाहौर, 23 फरवरी - पाकिस्तान बनाम भारत, दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, दुबई, 24 फरवरी - बांग्लादेश बनाम न्यूजीलैंड, रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम, रावलपिंडी, 25 फरवरी - ऑस्ट्रेलिया बनाम दक्षिण अफ्रीका, रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम, रावलपिंडी, 26 फरवरी - अफगानिस्तान बनाम इंग्लैंड, गद्दाफी स्टेडियम, लाहौर, 27 फरवरी - पाकिस्तान बनाम बांग्लादेश, रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम, रावलपिंडी, 28 फरवरी - अफगानिस्तान बनाम ऑस्ट्रेलिया, गद्दाफी स्टेडियम, लाहौर, 1 मार्च - दक्षिण अफ्रीका बनाम इंग्लैंड, नेशनल स्टेडियम, कराची, 2 मार्च - न्यूजीलैंड बनाम भारत, दुबई अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, दुबई, 4 मार्च - सेमीफाइनल 1, दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, दुबई, 5 मार्च - सेमीफ़ाइनल 2, गद्दाफ़ी स्टेडियम, लाहौर, 9 मार्च - फ़ाइनल - गद्दाफ़ी स्टेडियम, लाहौर,, सभी मैच पाकिस्तान मानक समयानुसार 14:00 बजे शुरू होंगे, अगर वे क्वालिफाई करते हैं तो सेमीफाइनल 1 में भारत शामिल होगा, अगर वे क्वालिफाई करते हैं तो सेमीफाइनल 2 में पाकिस्तान शामिल होगा अगर भारत फाइनल के लिए क्वालीफाई करता है तो यह दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम, दुबई में खेला जाएगा।

भारतीय टीम का बेसब्री से इंतजार

नई दिल्ली, 13 जनवरी। बीसीसीआई ने आईसीसी से पहले ही टीम के ऐलान के लिए थोड़ा सा समय मांगा है और ये हालात में भारत को 17 या 18 जनवरी को टीम की घोषणा करनी है। लेकिन बोर्ड के सामने समस्या ये है कि, पेसर जसप्रीत बुमराह और स्पिनर कुलदीप यादव अभी फिट नहीं हैं। खासकर जसप्रीत बुमराह के कारण टीम का ऐलान करने में देरी हो रही है। जो ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी टेस्ट मैच में बैक इंजरी से परेशान दिखे थे और उन्होंने दूसरी पारी में गेदंबाजीनहीं की थी। उनको अभी फुल फिटनेस हासिल करने के लिए थोड़ा समय लगेगा। जबकि कुलदीप यादव अक्टूबर 2024 से ग्रोइन इंजरी से परेशान हैं। उन्होंने जर्मनी में सर्जरी कराई थी। वहीं बुमराह ने न्यूजीलैंड के डॉक्टर से परामर्श लिया है। हालांकि, उनकी चोट किस ग्रेड की है कब तक वे मैदान पर लौटेंगे, इसकी जानकारी बोर्ड ने शेयर नहीं की है। दूसरी ओऱ अच्छी खबर भारत के लिए ये है कि मोहम्मद शमी की वापसी हो गई है। कुलदीप यादव भी जल्द फिट हो जाएंगे। शमी को इंग्लैंड के खिलाफ 22 जनवरी से खेली जाने वाली पांच मैचों की टी20 सीरीज के लिए चुना गया है। जबकि कुलदीप यादव को वनडे सीरीज में मौका मिलने की उम्मीद है। उसी से उनकी फिटनेस का अंदाजा लगेगा, लेकिन चैंपियंस ट्रॉफी में उनका खेलना अभी भी संस्पेंस बना हुआ है।

इंडिया ओपन सुपर 750 टूर्नामेंट में भारत ने सबसे बड़ा दल उतारा, सात्विक और चिराग पर नजरें

नई दिल्ली, 13 जनवरी। भारत ने मंगलवार से शुरू हो रहे सितारों से सजे इंडिया ओपन सुपर 750 टूर्नामेंट में अपना सबसे बड़ा दल उतारा है लेकिन नजरें कुछ जाने पहचाने नामों खासकर लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी पर लगी होंगी। भारतीय खिलाड़ियों को पिछले दो सत्रों से इस टूर्नामेंट में सफलता नहीं मिली है। भारत का 21 सदस्यीय दल इस कमी को पूरा करने के साथ छह महीने पहले पेरिस ओलंपिक में खराब प्रदर्शन के बाद अपनी गलतियों को सुधारने के इरादे से उतरेगा। भारत को सात्विक और चिराग से काफी अपेक्षायें हैं।

चूंकि दुनिया की पूर्व नंबर एक पुरूष युगल टीम ने 2022 इंडिया ओपन जीता था और 2025 सत्र में पिछले सप्ताह मलेशिया ओपन सुपर 1000 टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचकर अच्छी शुरूआत की। टूर्नामेंट में दुनिया के शीर्ष 20 पुरूष एकल खिलाड़ियों में से 18 और महिला एकल में 14 शीर्ष खिलाड़ी भाग ले रही हैं। पेरिस ओलंपिक की निराशा के बावजूद चिराग और सात्विक पिछले दो साल में भारत के सबसे भरोसेमंद खिलाड़ी रहे हैं।

चाइना मास्टर्स 2024 सेमीफाइनल खेल चुके सात्विक और चिराग का सामना पहले दौर में मलेशिया के वेइ चोंग मैन और केइ वुन ती से होगा। उन्हें चीन के ओलंपिक रजत पदक विजेता लियांग वेइकेंग और वांग चांग , पेरिस ओलंपिक कांस्य पदक विजेता मलेशिया के आरोन चिया और सोह वूइ यिक , डेनमार्क के किम एस्ट्रूप और एंडर्स रासमुसेन और इंडोनेशिया के फजर अल्फियान और मुहम्मद रियान अर्डियांटो से कड़ी चुनौती मिलेगी। इस साल भारत से 21 प्रविष्टियां मिली है जिसमें दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पी वी सिंधू शामिल है।

सिंधू अपने विवाह के कारण मलेशिया मास्टर्स से बाहर रहने के बाद वापसी कर रही हैं। हैदराबाद की 29 वर्ष की सिंधू ने सैयद मोदी इंटरनेशनल खिताब जीता था लेकिन उसमे अधिकांश भारतीय खिलाड़ी ही खेले थे। सिंधू का सामना पहले दौर में अनुपमा उपाध्याय से होगा। वह आगे जापान की तोमोका मियाजाकी से खेल सकती है जिसने उन्हें पिछले साल स्विस ओपन में हराया था। सैयद मोदी खिताब जीतने वाले लक्ष्य सेन मलेशिया में शुरूआती दौर में ही बाहर हो गए थे। यहां तीन साल पहले खिताब जीत चुके लक्ष्य का सामना पहले दौर में चीन के होंग यांग वेंग से होगा।

राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में राजस्थान प्रथम स्थान पर

जयपुर, 13 जनवरी। हाल ही में आयोजित 67वी निशानेबाजी प्रतियोगिता में राजस्थान के निशानेबाजो के शानदार प्रदर्शन से राजस्थान के खेल जगत में प्रसन्नता का माहौल है।मानसरोवर स्थित ओम प्रकाश चौधरी निशानेबाजी अकादमी की शिखा चौधरी ने 10,25 व 50 मीटर प्रतियोगिता में 1 स्वर्ण 1 रजत ओर 4 कास्य पदक अपने नाम किये व सोमिल चौधरी एक कास्य व एक स्वर्ण और अंशुल ने 50 मीटर में एक कास्य। रिधिमा गजराज ने एक कास्य। मोनिका तोमर व परी शर्मा व खनक व्यास गोरवी सुंडा व विजेन्द्र गढ़वाल सिद्दार्थ ओला ने भी शानदार प्रदर्शन किया। अकादमी की डायरेक्टर कविता चौधरी ने सफलता का कारण खिलाड़ियों की मेहनत और सरकार की खेलों के प्रति सकारात्मक नीतियाँ बताई है।

आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य धनंजय सिंह खींवसर ने बीसीसीआई एसजीएम में भाग लिया

जयपुर, 13 जनवरी। मुंबई में आयोजित बीसीसीआई की एसजीएम हेतु आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य धनंजय सिंह खींवसर ने मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम स्थित बीसीसीआई ऑफिस पहुंच बीसीसीआई की एसजीएम में राजस्थान क्रिकेट संघ का प्रतिनिधित्व करते हुए भाग लिया।एडहॉक कमेटी सदस्य ने इस अवसर पर जय शाह को आईसीसी चेयरमेन बनने पर बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए विश्वास जताया की जय शाह जी के नेतृत्व में आईसीसी नए आयाम प्राप्त करेगी जिसका फायदा न केवल विश्व खेल जगत के साथ साथ भारत के समस्त खिलाडियों व खेल जगत को भी होगा।

धनंजय सिंह खींवसर के अनुसार बीसीसीआई की एसजीएम में राजस्थान क्रिकेट संघ का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने बीसीसीआई के पूर्व सचिव जय शाह से मुलाकात कर उन्हें राजस्थान क्रिकेट संघ के तत्वाधान में आरसीए एडहॉक कमेटी द्वारा आयोजित की गयी विभिन्न क्रिकेट प्रतियोगिताओं व गतिविधियों की जानकारी दी साथ ही खेलो के आयोजन हेतु बीसीसीआई द्वारा दिए गए सहयोग की प्रशंसा की। बीसीसीआई एसजीएम के दौरान आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य धनंजय सिंह खींवसर ने बीसीसीआई के नवनिर्वाचित सचिव देवजीत सैकिया , कोषाध्यक्ष प्रभतेज भाटिया को पदभार ग्रहण करने व निर्वाचित होने पर बधाई दी व अन्य बीसीसीआई पदाधिकारियों सहित स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन के प्रतिनिधियों से मुलाकात की व् क्रिकेट के विभिन्न मुद्दों पर गहन चर्चा की।

इतिहास रच देंगे श्रेयस अय्यर, बन जाएंगे भारत के पहले क्रिकेटर

नई दिल्ली, 13 जनवरी। आईपीएल फ्रेंचाइजी पंजाब किंग्स ने बीते रविवार को श्रेयस अय्यर को टीम का नया कप्तान घोषित किया है। वे आईपीएल 2025 में पंजाब की कमान संभालते हुए नजर आएंगे। जब वे पहले मैच में कप्तान करेंगे तो ये भारतीय क्रिकेटर के तौर पर एक इतिहास लिखा जाएगा। वे भारत के पहले ऐसे कप्तान बन जाएंगे, जिन्होंने दो से ज्यादा टीमों की कप्तानी की है। अभी तक

सिर्फ दो ही क्रिकेटर ऐसा कर पाए हैं, लेकिन दोनों विदेशी थे। किसी भारतीय को पहली बार तीन टीमों की कप्तानी करने का मौका मिला है। 21 मार्च से आईपीएल 2025 की शुरुआत होनी है। पंजाब ने 26.75 करोड़ रुपये में दाएं हाथ के मध्य क्रम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर को खरीदा था। केकेआर को उन्होंने कप्तानी करते हुए 2024 में चैंपियंस बनाया था। ऐसे में वे इस समय आईपीएल चैंपियंस कप्तान हैं। लेकिन चैंपियंस टीम का हिस्सा नहीं हैं। बता दें कि, श्रेयस अय्यर 18 सीजन में पंजाब किंग्स के 17वें कप्तान हैं। किसी भी अन्य टीम ने इतने कप्तान नहीं बदले हैं जितने पंजाब किंग्स ने बदले हैं। श्रेयस अय्यर ने आईपीएल में इतिहास रच दिया है, क्योंकि वह तीन आईपीएल टीमों की कप्तानी हासिल करने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए। अय्यर 2018 सीजन के मध्य से 2020 तक दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान रहे और एक सीजन उन्होंने टीम को फाइनल में भी पहुंचाया।

कपिल को मारने पिस्टल लेकर गया था : योगराज

नई दिल्ली, 13 जनवरी। युवराज के पिता योगराज सिंह ने कपिल देव से संबंध को लेकर एक इंटरव्यू में खुलासा कि वह एक बार उन्हें गोली मारने के लिए पिस्टल लेकर उनके घर चले गए थे। योगराज ने एक इंटरव्यू में युवराज को लेकर बड़ी बात कही। उन्होंने कहा कि यदि उनका बेटा 2011 के वर्ल्ड कप के दौरान मर भी जाता तो उन्हें उस पर गर्व होता। युवराज ने 2011 के वर्ल्ड कप जीताने में अहम भूमिका निभाई। उस दौरान वह कैंसर से जूझ रहे थे। जिसका पता उन्हें वर्ल्ड कप के बाद लगा।

योगराज सिंह ने एक घटना का खुलासा करते हुए कहा कि कपिल देव नॉर्थ जोन और हरियाणा के कप्तान बने, तो उन्होंने बिना बताए मुझे टीम से हटा दिया था। मेरी पत्नी चाहती थी कि मैं टीम से हटाए जाने को लेकर कपिल से सवाल पूछूं। मैं बहुत गुस्से में था। मैंने अपनी पिस्तौल निकाली और चंड़ीगढ़ में सेक्टर 9 स्थित कपिल के घर पहुंच गया। वह अपनी मां के साथ घर से बाहर निकले। मैंने उन्हें गालियां दी। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी वजह से मैंने एक दोस्त खो दिया है और तुमने जो किया, उसकी कीमत तुम्हें चुकानी पड़ेगी। मैं तुम्हारे सिर में गोली मारना चाहता हूं, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर रहा हूं क्योंकि तुम्हारे पास भगवान में विश्वास रखने वाली मां है, जो यहां खड़ी है।

युवराज सिंह के पिता योगराज सिंह अक्सर अपने बयानों के चलते सुर्खियों में बने रहते हैं। एक बार फिर उन्होंने महिलाओं को लेकर एक विवादित बयान दिया है जिससे बवाल मच गया है। इस बार योगराज ने हिन्दी भाषा को लेकर बयान दिया है, उन्होंने हिन्दी भाषा को लड़कियों की भाषा कह दिया है। पूर्व क्रिकेटर योगराज ने अनफिल्टर्ड बाय समदिश के यूट्यूब चैनल पर हिन्दी भाषा को लेकर बयान दिया और कहा कि, हिन्दी भाषा ऐसी लगती है जैसे कोई महिला बोल रही हो।

अंडर-19 दिनों के अंदाज में बल्लेबाजी करने का फायदा हुआ : जेमिमा रोड्रिग्स

राजकोट, 13 जनवरी । अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने शतक का सात साल के इंतजार को खत्म करने से खुश भारतीय बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिग्स ने रविवार को यहां कहा कि उन्हें अपने अंडर-19 दिनों की मानसिकता और तरीकों को अपनाने से इस उपलब्धि तक पहुंचने में मदद मिली। जेमिमा की 102 रन की पारी की बदौलत भारत ने दूसरे महिला वनडे में पांच विकेट पर 370 रन बनाकर आयरलैंड पर 116 रन से जीत दर्ज की। जेमिमा ने मैच के बाद संवाददाता सम्मेलन में कहा, "बहुत अच्छा लग रहा है। मुझे इसका लंबे समय से इंतजार था। मुझे खुशी है कि आज यह टीम के लिए कर सकी।" उन्होंने कहा, " मैंने अंडर-19 क्रिकेट में कई शतकीय पारियां खेली है, वहां 200 रन भी बनाये है। ऐसे में मैं वही करने की कोशिश कर रही थी जो उस समय करती थी। मैं आज इस अच्छे से करने में सफल रही।" जेमिमा ने 2017 में अंडर-19 महिला वनडे प्रतियोगिता में सौराष्ट्र के खिलाफ मुंबई के लिए नाबाद 202 रन कर सुर्खियां बटोरी थी।

सीनियर नेशनल हैंडबॉल में राजस्थान के पुरुषों को कांस्य

गुजरात पुरुष में और छत्तीसगढ़ महिला वर्ग में चैम्पियन

जयपुर, 13 जनवरी। गुवाहाटी (असम) में सोमवार को संपन्न चार दिवसीय सीनियर बीच नेशनल हैंडबॉल चैंपियनशिप (पुरुष व महिला) में राजस्थान पुरुष टीम उत्तर प्रदेश के साथ संयुक्त तीसरे स्थान पर रही। पुरुष वर्ग में गुजरात पहले व सर्विसेज़ दूसरे स्थान पर रही। वही महिला वर्ग का ख़िताब छत्तीसगढ़ ने जीता। केरल दूसरे तथा हरियाणा व असम संयुक्त तीसरे स्थान पर रही।

राजस्थान राज्य हैंडबॉल संघ के मानद सचिव यश प्रताप सिंह ने बताया कि राजस्थान ने अपने लीग मैचेस में तेलंगाना को 2-0 से, दिल्ली को 2-0 से, हिमाचल प्रदेश को 2-0 से, मध्यप्रदेश को 2-0 से हराया। जबकि बिहार से 2-1 से हारा का सामना करना पड़ा। क्वार्टर फाइनल मुक़ाबले में

राजस्थान ने हरियाणा को 2-0 से हराया। सेमीफाइनल में राजस्थान को गुजरात ने 2-1 से हराया।

राजस्थान टीम:- रविंद्र पाल सिंह सैनी (कप्तान)-राजस्थान पुलिस, लोकेंद्र सिंह हाड़ा (बूंदी), रोहिताश (राजस्थान पुलिस), प्रिंस सहारण, विक्रम (श्रीगंगानगर), राजकुमार, मनीष लील (जयपुर), रुद्र प्रताप सिंह सिसोदिया (भीलवाड़ा), नितिन बंजारा (अजमेर), हर्ष आचार्य (बाँसवाड़ा)।

अभिषेक के साथ दिल्ली एयरपोर्ट पर हुई बदसलूकी

नई दिल्ली, 13 जनवरी। भारतीय टीम के युवा बल्लेबाज अभिषेक शर्मा के साथ दिल्ली एयरपोर्ट पर बदसलूकी हुई है। उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरी शेयर कर इसकी जानकारी दी है। इस दौरान उन्होंने दावा किया कि, एयरलाउन के स्टाफ ने उनके साथ गलत व्यवहार किया है। अभिषेक छुट्टी मनाने के लिए जाने वाले थे। लेकिन एयरपोर्ट पर हुई दिक्कत के बाद उनकी फ्लाइट छूट गई। इसके साथ ही उनकी कोई मदद भी नहीं की गई। दरअसल, अभिषेक को इंग्लैंड के खिलाफ होने वाली टी20 सीरीज के लिए चुना गया है।अभिषेक शर्मा ने इंस्टाग्राम के जरिए एक स्टोरी शेयर की। उन्होंने लिखा कि, दिल्ली एयरपोर्ट पर इंडिगो के साथ मेरा बहुत ही खराब अनुभव रहा। स्टाफ का व्यवहार बर्दाश्त करने जैसा नहीं था। मैं सही काउंटर पर टाइम पर पहुंच गया था। लेकिन उन्होंने मुझे अनावश्यक रूप से दूसरे काउंटर पर भेज दिया। इसके बाद मुझे बताया गया कि चेक-इन बंद हो गया है। इसकी वजह से मेरी फ्लाइट छूट गई।

आईपीएल का 18वां सीजन 21 मार्च से शुरू होगा, 25 मई को कोलकाता में फाइनल

नई दिल्ली, 13 जनवरी। आईपीएल 2025 का पहला मैच 21 मार्च को कोलकाता में खेला जाएगा। यहीं 25 मई को टूर्नामेंट का फाइनल भी होगा। वहीं, विमेंस प्रीमियर लीग का तीसरा सीजन 7 फरवरी से शुरू होकर 2 मार्च तक चलेगा। इस बार का टूर्नामेंट 2 की बजाय 4 वेन्यू पर खेला जाएगा। क्रिकइन्फो की रिपोर्ट अनुसार आईपीएल कमेटी ने सभी फ्रेंचाइजी को टूर्नामेंट शुरू होने की डिटेल भेज दी है, जिससे कि वे खिलाड़ियों को लेकर अपनी तैयारी शुरू कर दें। कोलकाता नाइट राइडर्स आईपीएल की डिफेंडिंग चैंपियन है, टीम ने फाइनल में सनराइजर्स हैदराबाद को हराया था।

आईपीएल का पूरा शेड्यूल जनवरी के आखिर में रिलीज किया जा सकता है।

चैंपियंस ट्रॉफी के कारण देर से शुरू होगा टूर्नामेंट नवंबर में आईपीएल का मेगा ऑक्शन हुआ। जिसके बाद कमेटी ने सभी टीमों को अगले 3 साल का संभावित शेड्यूल बताया था। जिसके हिसाब से इस बार का टूर्नामेंट 15 मार्च से 25 मई तक होना था। हालांकि 9 मार्च को चैंपियंस ट्रॉफी का फाइनल खेला जाएगा। इसलिए प्लेयर्स को आराम देने के लिए बीसीसीआइ ने आईसीसी 'शुरू होने की तारीख को एक सप्ताह के लिए बढ़ा दिया। चैंपियंस ट्रॉफी 19 फरवरी से शुरू होकर 9 मार्च तक पाकिस्तान और यूएई में खेली जाएगी। इसके 2 सप्ताह बाद शुरू होगा। अगर टीम इंडिया फाइनल में पहुंची तो भी प्लेयर्स के पास रेस्ट के लिए अच्छा-खासा समय रहेगा।

आईपीएल प्लेयर्स की खैर नहीं, मैदान में की ये गलती तो मिलेगी कड़ी सजा

आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन के बाद अब फैंस को लीग मैचों का बेसब्री से इंतजार है। आईपीएल 2025 के मार्च के आखिरी हफ्ते में शुरू होने की उम्मीद है। हालांकि, बीसीसीआई के उपाध्यक्ष और पूर्व आईपीएल चेयरमैन राजीव शुक्ला ने कहा कि उसकी शुरुआत 23 मार्च से भी हो सकती है। वहीं, विमेंस प्रीमियर लीग का ओजन चार अलग-अलग शहरों में किया जाएगा। वहीं आईपीएल की शुरुआत से पहले मैदान पर खिलाड़ियों के अनुशासन से जुड़े कई नियम सख्त कर दिए गए हैं। आईपीएल अपने नए सीजन में मैदान पर खिलाड़ियों के अनुशासन को लेकर काफी सख्त हो गई है। अब आईपीएल में इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल की आचार संहिता का पालन किया जाएगा। रविवार को हुई गर्वनिंग काउंसिल की बैठक में ये अहम फैसला लिया गया। इसके तहत लेवल 1,2 और 3 के उल्लंघन पर खिलाड़ियों को आईसीसी के नियमों के मुताबिक सजा दी जाएगी। गर्वनिंग काउंसिल के एक सदस्य ने बताया कि, अब इस आईपीएल में आईसीसी के टी20 इंटरनेशनल प्लेइंग कंडीशंस का पालन होगा। पहले लीग के अपने नियम होते थे, लेकिन अब आईसीसी द्वारा निर्धारित कोड ऑफ कंडक्ट लागू किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने रिफाइनरी के पास पेट्रोज़ोन के भूमि आवंटन को स्वीकृति दी

रीको को सोलर पार्क तथा चम्बल वृहद् पेयजल के लिये भी भूमि आवंटन को मंजूरी मिली

- पेट्रोज़ोन के लिये पचपदरा के ग्राम सिन्धियों की ढाणी में 74 हैक्टेयर और ग्राम खेमाबाबा नगर में 102 हेक्टेयर भूमि आवंटन को स्वीकृति दी गई।
- चम्बल-सवाई माधोपुर-करौली-नारौनी-गंगापुर सिटी की वृहद् पेयजल योजना के लिये वॉटर रिज़रवॉयर बनाने के लिये भंडारायल तहसील में 221 हैक्टेयर भूमि आवंटन की स्वीकृति दी गई।

जयपुर, 13 जनवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य में औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने, ऊर्जा और पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने और युवाओं को रोजगार के अवसर में वृद्धि के उद्देश्य से महत्वपूर्ण निर्णय लिये हैं। शर्मा ने रीको को राजस्थान पेट्रोजोन और औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना के लिए, राजस्थान सोलर पार्क डवलपमेंट कंपनी लिमिटेड को सोलर प्रोजेक्ट की स्थापना के लिए तथा चंबल नदी आधारित वृहद् पेयजल योजना के लिए भूमि आंवटन की स्वीकृति प्रदान की है।

मुख्यमंत्री ने पचपदरा रिफाइनरी के पास राजस्थान पेट्रोजोन की स्थापना करने संबंधी बजट घोषणा को पूरा करते हुए, रीको को पचपदरा तहसील (बालोतरा) के ग्राम सिन्धियों की ढाणी में 74.50 हैक्टेयर भूमि और ग्राम खेमाबाबा नगर में 102 हैक्टेयर भूमि के आंवटन की स्वीकृति दी है। इससे रिफाइनरी के पास पेट्रोजोन की स्थापना का कार्य शीघ्र शुरू हो सकेगा। शर्मा ने बजट घोषणा वर्ष 2024-25 के अन्तर्गत भीलवाड़ा जिले की जहाजपुर तहसील के ग्राम पीपलून्द में नवीन औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना के लिए भी रीको को 31 हैक्टेयर भूमि आवंटित करने की स्वीकृति प्रदान की है।

इसके साथ ही, उन्होंने 2000 मेगावाट सोलर प्रोजेक्ट की स्थापना के लिए राजस्थान सोलर पार्क डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड को जैसलमेर जिले की तहसील नाचना के ग्राम बोडाना में 4 हजार हेक्टेयर राजकीय भूमि के आवंटन की स्वीकृति दी है।

एक अन्य प्रकरण में, बजट घोषणा वर्ष 2024-25 के अन्तर्गत चम्बल नदी आधारित वृहद पेयजल परियोजना चम्बल-सवाईमाधोपुर-करौली-नादौती-गंगापुर सिटी की क्रियान्विति के लिए वाटर रिजर्वेयर बनाने के लिए तहसील मण्डरायल (करौली) के ग्राम पंचौली, दरगवां, फिरोजपुर और मारकाकुआ में 221 हैक्टयर भूमि के आवंटन की स्वीकृति दी गई है।

'ग्रॉस फिक्स्ड कैपिटल फॉर्मेशन इस वर्ष 6.4 प्रतिशत घटेगा'

कांग्रेस का आरोप है कि ग्रोथ में भारी गिरावट आई है और सरकार इससे इन्कार नहीं कर सकती है

- कांग्रेस ने यह भी कहा कि मनरेगा की दिहाड़ी में वृद्धि और कृषि उपज की एमएसपी बढ़ाना जरुरी है ताकि गरीबों की आय में वृद्धि हो सके।
- कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने प्राइवेट फाइनल कंज़म्पशन एक्स्पैंडिचर में गिरावट का उल्लेख करते हुए कहा है, इस बार कारों की बिक्री चार साल के न्यूनतम स्तर पर रही।
- कांग्रेस ने मिडिल क्लास की घरेलू बचत कम होने पर भी चिंता जताई और कहा कि सरकारी आंकड़े ही कह रहे हैं कि 2020-21 और 2022-23 के बीच घरेलू बचत 9 लाख करोड़ रूपए घटी है।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जनवरी। कांग्रेस ने आज केन्द्र सरकार से कहा कि भारतीय गरीब लोगों के लिए आमदनी का सहारा, मनरेगा की अधिक मजदूरी तथा बढ़ा हुआ न्यूनतम समर्थन मूल्य- आज की बड़ी आवश्यकता हैं। पार्टी ने मांग की कि आगामी केन्द्रीय बजट में "हास्यास्पद रूप से जटिल" जी.एस.टी. व्यवस्था को सरल बनाया जाये तथा मध्यम वर्ग को इनकम टैक्स में राहत दी जाये।

कांग्रेस ने एक बयान में कहा कि वर्तमान राजस्व के लिये जी.डी.पी. ग्रोथ के अनुमानों में गिरावट को रोकने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाने की जरुरत है, ताकि ग्रोथ में हो रही कमी तथा देश में निवेश में कमी होने की स्थिति खत्म हो सके।

ए.आई.सी.सी. महासचिव तथा मीडिया-प्रभारी जयराम रमेश ने कहा कि ऐसी स्थिति से केन्द्रीय बजट की बड़ी निराशाजनक पृष्ठभूमि बनती है।

रमेश ने एक बयान में कहा कि वित्त वर्ष 2024-25 में जी.डी.पी. ग्रोथ के लिये केन्द्र सरकार द्वारा जारी अग्रिम अनुमान में केवल 6.4 प्रतिशत ग्रोथ रहने का अनुमान है।

उन्होंने कहा, "यह चार साल की सबसे कम ग्रोथ है तथा वित्त वर्ष 2024 (2023-24) की 8.2 प्रतिशत ग्रोथ की तुलना में जबरदस्त कमी दर्शाती है। यह हाल ही के आर.बी.आई. के अनुमान, 6.6 प्रतिशत ग्रोथ से भी कम है, जो पहले ही 7.2 प्रतिशत के पूर्व के अनुमान में कमी दर्शाने वाली थी। पिछले चन्द सप्ताहों में, भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति बिगड़ी तथा सबसे महत्वपूर्ण मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र का विस्तार बंद हो गया है।

कांग्रेस नेता ने कहा कि सरकार ग्रोथ में स्लोडाउन और उसके विभिन्न आयामों से इन्कार करने की स्थिति में नहीं है।

रमेश ने मोदी सरकार पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि गत दस सालों में भारत की उपभोग की कहानी उलट गई है और अर्थव्यवस्था के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन कर उभरी है।

उन्होंने कहा, इस वर्ष की दूसरी तिमाही के आँकड़ों के अनुसार, प्राइवेट फाइनल कंज़म्पशन एक्सपैंडिचर (पी.एफ.सी.ई.) पूर्व तिमाही के 7.4 प्रतिशत से घट कर 6 प्रतिशत रह गया है। कारों की बिक्री चार साल में सबसे निचले स्तर पर रही। भारत के कई प्रमुख उद्योगपतियों ने संकुचित होते मध्यम वर्ग पर चिंता जताई। उपभोग में स्थिरता से जी.डी.पी. ग्रोथ रेट्स घिसट रही हैं, यही वजह है कि प्राइवेट सेक्टर नई उत्पादन क्षमता में निवेश करने को इच्छुक नहीं है।

कांग्रेस महासचिव ने निजी निवेश में सुस्ती की ओर भी इशारा किया व कहा कि "सरकार का अनुमान था कि सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र में फिक्स्ड कैपिटल फॉर्मेशन में समग्र ग्रोथ के बारे में अनुमान था कि यह गत वर्ष के 9 प्रतिशत से घट कर 6.4 प्रतिशत हो जाएगी।"

उन्होंने कहा, यह आँकड़ा भी भारत में निवेश करने की निजी क्षेत्र की अनिच्छा को ढकने का प्रयास करता है।

उन्होंने कहा, सरकार का अपना इकोनॉमिक सर्वे मानता है कि मशीनरी और उपकरण तथा बौद्धिक संपदा से प्राइवेट सैक्टर के ग्रॉस फिक्सड कैपिटल फॉर्मेशन (जी.एफ.सी.एफ.) से वित्त वर्ष 2022-23 तक मात्र 35 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है, जो अच्छा नहीं कहा सकता। स्थिति और बिगड़ी है और निजी क्षेत्र द्वारा वित्त वर्ष 2023 और वित्त वर्ष 2024 में नई योजनाओं की घोषणा के 21 प्रतिशत की कमी हुई है। निजी क्षेत्र की नई उत्पादन क्षमता में निवेश की अनिच्छा दर्शाती है कि हमारी मध्यकालिक ग्रोथ और ज्यादा प्रभावित होगी।

रमेश ने कहा, 2024-25 के केन्द्रीय बजट में 11.11 लाख करोड़ रूपए के आवंटन के साथ पूँजी निवेश में बढ़ोतरी के बड़े-बड़े वादे किए गए थे। तथापि, नवम्बर तक, केवल 5.13 लाख करोड़ रूपए ही खर्च किए गए। रमेश ने यह भी दावा किया कि यह पिछले वर्ष की तुलना में 12 प्रतिशत कम था।

उन्होंने दावा किया, "अधिकतर आकलन संकेत देते हैं कि वित्तीय वर्ष के अंत तक सरकार लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाएगी। अपने फंड खर्च करने में सरकार की अक्षमता कुछ हद तक व्यापक आर्थिक निराशा के लिए जिम्मेवार है।"

"परिवार की सिकुड़ती बचत" की बात करते हुए, उन्होंने कहा कि सरकार का स्वयं का डेटा दिखाता है कि 2020-21 और 2022-2023 के बीच परिवारों की नैट वित्तीय बचत में 9 लाख करोड़ की कमी आई।

उन्होंने कहा, परिवार के वित्तीय उत्तरदायित्व जी.डी.पी. का 6.4 प्रतिशत थे, जो कि कई दशकों में सर्वाधिक हैं। रमेश ने कहा, "कोविड-19 पैन्डैमिक के समय की नीतियों की असफलता अभी भी भारत के परिवारों को परेशान कर रही है। यह पृष्ठभूमि है, वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए आमामी बजट की। जैसा कि नैशनल कांग्रेस ने निरंतर कहा है, ग्रोथ स्लोडाउन और निवेश निरुत्साह के बादलों को हटाने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाने की आवश्यकता है।" उन्होंने कहा, भारत के गरीबों के लिए आय में सहायता, मनरेगा में दिहाड़ी बढ़ाने और कृषि उपज की एम.एस.पी. बढ़ाना समय की जरुरत है, हास्यास्पद रूप से जटिल जी.एस.टी. प्रणाली का सरलीकरण और मध्यम वर्ग के लिए इनकम टैक्स में राहत भी जरुरी है।

लम्बे रोड शो के कारण आतिशी नामांकन नहीं भर सकीं

नयी दिल्ली, 13 जनवरी। आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता एवं दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने सोमवार को नामांकन से पहले लंबा रोड शो, किया लेकिन नामांकन नहीं दाखिल कर सकी। आतिशी ने नामांकन से पहले लंबा रोड शो किया लेकिन तीन बजे उन्हें चुनाव आयोग पहुंचना था, इसलिए नामांकन नहीं कर सकी। इससे पहले, उन्होंने आप नेता मनीष सिसोदिया के साथ गिरि नगर स्थित गुरुद्वारा गुरु गोविंद साहिब में मत्था टेका और कालकाजी मंदिर में पूजा-अर्चना की और अपने अभियान के लिए आशीर्वाद मांगा।

न स्वास्थ्य, न उम्र, ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बना हुआ है। उस परिवार का उन पर भरोसा नहीं रहा है, क्योंकि वे ऐसे इकलौते नेता हैं, जिन्होंने सोनिया गांधी को आँखें दिखाई हैं तथा उस विश्वास को तोड़ा है, जो उस परिवार को उन पर था।

इसलिए, अगर गहलोत ने दिल्ली के चुनावों को लेकर एक प्रैस कॉन्फ्रैंस आयोजित की, तो सचिन पायलट से भी कहा गया है कि एक युवा नेता के रूप में, वे भी एक प्रैस कॉन्फ्रैंस को संबोधित करें तथा यह घोषणा करें कि कांग्रेस दिल्ली के शिक्षित बेरोजगार युवाओं को एक वर्ष तक 8500 रूपए प्रतिमाह देगी।

गहलोत इस समय मुश्किल में है क्योंकि उनका स्वास्थ्य, उनकी उम्र और गांधी परिवार से उनकी परेशानी- कोई भी चीज उनकी इस महत्वाकांक्षा का समर्थन नहीं कर रही कि वे पार्टी और राजनीति में प्रासंगिक बने रहें।

हर मोर्चे पर असफल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सरकार ने सीमा पर बड़ी संख्या में सैनिक तैनात कर दिये हैं, इसके साथ ही गोला-बारुद का बड़ा जखीरा वहाँ पहुँचा दिया गया है। कुछ नौसैनिक बल भी अतिरिक्त रुप से सक्रिय हो गये है तथा उन्होंने बंगाल की खाड़ी से भारतीय मछुआरे पकड़े हैं।

सही बात तो यह है कि बाँग्लादेश के सीमा सुरक्षा बलों तथा सेनाओं द्वारा भारतीय सेना पर सीधी लड़ाई के लिये दबाव बनाने में कोई संदेह नहीं रहा है। यह पूरी तरह सम्भव है कि बाँग्लादेश की अन्तरिम सरकार पर कम से कम कुछ क्षेत्रों में कुछ परिणाम प्रदर्शित करने का भारी दबाव है तथा इसलिये वह सरकार अपनी जनता को अपनी सैन्य दक्षता दर्शा रही है। कुछ छुटपुट तथा आकस्मिक घटनाएं घटित होने की कुछ संभावना हर समय है तथा ऐसी घटनाओं से अनावश्यक टकराव तथा दुश्मनी की स्थिति पैदा हो सकती है।

बाँग्लादेश में इस उग्र माहौल को शांत करने के प्रयास के अन्तर्गत, भारतीय डिप्टी हाईकमिश्नर ने मौजूदा तंत्र पर बातचीत के लिये मंच उपलब्ध कराने पर बल दिया है।

बाँग्लादेश, भारत पर यह दबाव बनाने की कोशिश भी कर रहा है कि वह उनकी फरार नेता, शेख हसीना को बाँग्लादेश के सुपुर्द करे। बाँग्लादेशी अधिकारी शेख हसीना को वापस करने की मांग पहले ही कर चुके हैं। अब वे भारत में शेख हसीना की गिरफ्तारी के लिये "रैड कॉर्नर" नोटिस जारी कराने के लिये इन्टरपोल भी जा रहे हैं।

हालाँकि, इन्टरपोल समझौते पर भारत के हस्ताक्षर हैं, फिर भी प्रत्येक भागीदार देश सभी "रैड कॉर्नर" आवेदनों को अपने देश के कानून के आधार पर परखता है तथा किसी देश के लिये यह जरुरी नहीं है कि वह उस व्यक्ति को सौंप दे, जिसने उसके क्षेत्राधिकार में शरण ली है। यह असंभावी है कि इन परिस्थितियों में, भारत शेख हसीना को बाँग्लादेशी अधिकारियों को सौंप देगा। इससे आगामी उस अवधि के दौरान दोनों देशों के रिश्ते खराब भी हो सकते हैं, जब तक वहाँ वर्तमान अन्तरिम सरकार का शासन है।

हाईकोर्ट ने गंगापुर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रामकेश मीणा की ओर से दायर जनहित याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान, याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता सारांश सैनी ने अदालत को बताया कि गंगापुर सिटी को जिले का दर्जा निर्धारित मापदंड के तहत दिया गया था। प्रदेश में सरकार बदलने के बाद जिलों को लेकर राजनीति शुरु हुई और अब राजनीतिक द्वेषता के चलते ही कुछ जिलों का दर्जा समाप्त कर दिया गया है। गंगापुर सिटी से जिला का दर्जा समाप्त करने के पीछे भी सरकार की राजनीतिक द्वेषता ही है। याचिका में कहा गया कि सरकार ने करीब डेढ़ साल पहले गंगापुर सिटी को जिला बनाया था और उसके बाद यहां कई प्रशासनिक नियुक्तियां हो चुकी हैं। यहां विभाग भी बतौर जिला स्तर पर काम कर रहे हैं। कमेटी ने लोगों से आपत्तियां मांगने के बाद इसे जिला घोषित किया था। ऐसे में अब महज राजनीतिक द्वेषता के चलते इसे जिला निरस्त करना गलत है।

महाकुंभ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जुड़े हुए हैं, और यहां आना उनके लिए सौभाग्य की बात है। भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और आस्था का प्रतीक यह मेला हर 12 वर्ष पर आयोजित होता है। महाकुम्भ भारत की पौराणिक परम्पराओं और आध्यात्मिक विरासत का उत्सव है। आज प्रथम स्नान को लेकर भी लोगों में जोश और उत्साह देखा जा रहा है। यहां आये श्रद्धालु चाहे, वे जिस भी किसी आयु वर्ग के हों, उनके अंदर पावन महाकुम्भ में स्नान करके पुण्य-लाभ के भागी बनने की इच्छा स्पष्ट नजर आ रही है।

छात्र आंदोलन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

का लाभ दे चुकी है, जबकि नरेश के अलावा शेष अन्य आरोपी अभी फरार चल रहे हैं। वहीं, साल 2004 में ही पुलिस ने विवि के बाहर रास्ता जाम करने के मामले में मामला दर्ज कर आरोपी नरेश मीणा की अनुपस्थिति में उसके खिलाफ आरोप पत्र पेश किया था। इस पर अदालत ने नरेश मीणा के गिरफ्तारी के स्थाई वारंट जारी कर तलब किया था। पुलिस ने सोमवार को नरेश मीणा को जेल से प्रोडक्शन वारंट से लाकर अदालत में पेश किया था, जहां अदालत ने उसे 24 जनवरी तक जेल भेज दिया।

सिंगापुर के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सहित एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी आयेगा। उनका 16 जनवरी को राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में औपचारिक स्वागत किया जाएगा।

अपनी यात्रा के दौरान, शनमुगरत्नम, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के साथ चर्चा करेंगे, जो उनके सम्मान में एक भोज का आयोजन भी करेंगी। वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भी मुलाकात करेंगे। इसके अलावा वे विदेश मंत्री एस. जयशंकर और कई अन्य भारतीय गणमान्य लोगों से भेंट करेंगे। वे 17-18 जनवरी को ओडिशा का भी दौरा करेंगे। यह राजकीय यात्रा भारत और सिंगापुर के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ के समारोहों की शुरुआत को भी चिह्नित करेगी।

ओडिशा के भुवनेश्वर में राष्ट्रपति थर्मन ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी से मुलाकात करेंग।

फरवरी 2020 को दिल्ली में...

- ताहिर हुसैन इस केस में आरोपी हैं तथा 4.9 साल जेल में हैं।
- अपनी जमानत अर्जी में ताहिर हुसैन ने कहा है, वे चुनाव लड़ने जा रहे हैं, उन्हें जमानत पर रिहा किया जाये, क्योंकि मुकदमा काफी लम्बा चलेगा, 114 गवाहों के बयान होने पर, 4.9 साल में केवल 20 गवाहों की गवाही हुई है। चुनाव का पर्चा भरने, चुनाव प्रचार करने व अन्य औपचारिकताएं पूरी करने के लिए उन्हें अंतरिम जमानत पर छोड़ा जाये।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आरोपी ने जेल से ही नामांकन पत्र भरा था। नवीनतम उदाहरण अमृतपाल सिंह का है।

आरोपी के वकील ने कहा, उसे एक राष्ट्रीय पार्टी ने प्रत्याशी बनाया है, उसे नामांकन पत्र दाखिल करने के अलावा चुनाव प्रचार भी करना होगा और अपनी सम्पत्ति भी घोषित करनी होगी।

दिल्ली हाई कोर्ट ने आई.बी. कर्मचारी अंकित शर्मा हत्या के केस में दायर ताहिर हुसैन की जमानत याचिका पर पुलिस से जवाब मांगा।

उन्होंने आगे कहा कि ट्रॉयल कोर्ट ने गत वर्ष राशिद इंजीनियर को लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए जमानता दी थी।

यह भी कहा गया है कि हुसैन 9 मार्च 2020 से ही जेल में है तथा उसने दंगों से जुड़े दो अन्य मामलों में भी जमानत मांगी है। अगली सुनवाई 14 जनवरी को होगी।

हुसैन ने गत सप्ताह कोर्ट से 14 जनवरी 2025 से 9 फरवरी 2025 तक के लिए जमानत मांगी थी ताकि वह ए.आई.एम.आई.एम. के टिकट पर मुस्तफाबाद सीट से चुनाव लड़ सके। उसने नामांकन पत्र भरने, बैंक में खाता खोलने व प्रचार करने के लिए जमानत मांगी है।

यह याचिका अधिवक्ता तारा नरुला ने दायर की है। पूर्वोत्तर दिल्ली में 24 फरवरी 2020 को हिंसा भड़की थी, जिसमें 53 लोग मारे गए थे तथा कई अन्य घायल हो गए थे।

अभियोजन पक्ष के अनुसार, 26 फरवरी 2020 को शिकायतकर्ता रविंदर कुमार ने दयालपुर पुलिस को स्टेशन में शिकायत की थी कि उसका पुत्र अंकित शर्मा जो इन्टैलिजैंस ब्यूरो में नौकरी करता है, 25 फरवरी से लापता है। कथित रूप से शर्मा को दंगाग्रस्त क्षेत्र खजूरी खास नाला से मिला उसके शरीर पर चोट के 51 निशान थे। हुसैन ने कहा कि वह 4 साल 9 माह जेल में गुजार चुका है और केस का ट्रायल शुरु हो चुका है। पर, 114 गवाहों में से 20 के बयान दर्ज हुए है।

हुसैन ने कहा कि ट्रायल पूरा होने में काफी समय लग गए। उसकी याचिका में कहा कि दंगाई भीड़ में शामिल लोगों, जो कथित तौर पर शर्मा की हत्या में लिप्त थे, उन्हें हाई कोर्ट जमानत दे चुका है।

नाबालिग से दुष्कर्म व बेचने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि पीड़िता की मां ने 10 जुलाई, 2014 को गलता गेट थाने में पीड़िता के लापता होने की जानकारी दी थी। रिपोर्ट में बाल अपचारी पर उसे बहला फुसलाकर ले जाने का आरोप लगाया था, जिस पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने बाल अपचारी के खिलाफ किशोर बोर्ड में चालान पेश किया था और बोर्ड ने उसे तीन साल के लिए सुरक्षित स्थल, भीलवाड़ा में भेजने के आदेश दिया था।

सुनवाई के दौरान पीड़िता ने अदालत को बताया कि बाल अपचारी और नैना व सपना उसे बहला फुसला कर शिकोहाबाद ले गए थे। यहां बाल अपचारी ने अपने घर पर उसका रेप किया और अनैतिक काम कराना चाहा।

'सीएजी रिपोर्ट पेश करने में बरती जा रही ...

- जस्टिस सचिन दत्ता ने आप सरकार को कहा, आपको तुरंत रिपोर्ट सदन में पेश करनी चाहिए थी और चर्चा करवानी चाहिए थी।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जिस तरह टालमटोल कर रही है उससे उसकी वास्तविकता को लेकर शक होता है आपको सीएजी रिपोर्टों को तुरंत विधानसभा अध्यक्ष को प्रेषित करना चाहिये था ताकि उस पर सदन में बहस करायी जा सके।

अदालत इस मामले की अगली सुनवाई 16 जनवरी को करेगी। दिल्ली सरकार की ओर से कहा गया कि यह याचिका राजनीति से प्रेरित है।

अदालत ने कहा कि इन रिपोर्टों को उपराज्यपाल को भेजने और फिर उन्हें विधानसभा अध्यक्ष को प्रेषित करने की तिथियों और उनमें लगने वाले समय को देखा जाये तो उससे सारी चीजें स्पष्ट लगती हैं।

अदालत ने कहा, देखिये आपने कुछ समय तक किस तरह टाल-मटोल की यह दुर्भाग्यपूर्ण है। अदालत ने टिप्पणी की कि यह टाल-मटोल सीएजी की रिपोर्ट पर बहस करने से बचने के लिए थी।

भाजपा के विधायक विजयेन्द्र गुप्ता, विधायक मोहन सिंह बिष्ट, ओम प्रकाश शर्मा, अजय कुमार महावर, अभय वर्मा, अनिल कुमार वाजपेयी और जितेन्द्र महाजन ने अदालत में याचिका दायर की है कि सी ए जी की रिपोर्ट को सदन पटल पर रखने के लिए दिल्ली विधानसभा का विशेष सत्र आयोजित करने के लिए अध्यक्ष को निर्देश दिया जाये।

दिल्ली सरकार के अधिवक्ता ने कहा कि उपराज्यपाल के कार्यालय में रिपोर्टों को सार्वजनिक किया गया है और समाचार पत्रों को भी दे दिया है। उन्होंने कहा कि यहां राजनीतिक फायदे के लिए अदालत का इस्तेमाल किया जा रहा है। दिल्ली सरकार वकील ने यह भी कहा कि याचिकाकर्ताओं ने मामला अदालत के विचाराधीन होने के बावजूद संवाददाता सम्मेलन किया।

अदालत ने कहा कि इन बातों का असल मुद्दे से क्या संबंध है। अदालत ने सरकार से आरोपों का जवाब देने को कहा और टिप्पणी की कि राजनीति से उसका लेना देना नहीं है।

याचिकाकर्ताओं के अधिवक्ता ने कहा कि अदालत को पूरा अधिकार है कि वह विधानसभा अध्यक्ष को सीएजी की रिपोर्ट रखने के लिए विधानसभा की बैठक बुलाने का निर्देश दे सके। उन्होंने कहा कि रिपोर्ट न पेश करना विधानसभा की कार्यवाही का मामला नहीं है बल्कि एक बड़ा अवैध कार्य है और संविधान का उल्लंघन है।

याचिकाकर्ताओं की ओर से कहा गया है कि दिल्ली विधानसभा चार दिसंबर को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित की गयी, लेकिन उसका सत्रावसान नहीं किया गया है।

विधानसभा सचिवालय ने याचिका पर नोटिस के जवाब में कहा है कि कानूनी व्यवस्था के अनुसार अब सीएजी की इन रिपोर्टों की संवीक्षा नहीं करायी जा सकती क्योंकि अब चुनाव के बाद गठित होने वाली सरकार द्वारा लोक लेखा समिति का गठन किया जायेगा। सचिवालय ने यह भी कहा है कि सदन को चलाने के अध्यक्ष के अधिकार को देश के किसी भी अदालत में चुनौती दी जा सकती है।

उपराज्यपाल के कार्यालय की ओर से कहा गया है कि उच्च न्यायालय के पास यह अधिकार है कि वह अध्यक्ष को सीएजी की रिपोर्ट तत्काल सदन में रखवाने का निर्देश दे सके।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार
एक वर्ष
परिणाम उत्कर्ष
पटेल नगर
आवासीय योजना
(खोरी-रोपाड़ा) जोन-10
(रेरा रजिस्ट्रेशन नं. RAJ/P/2023/2588)
270 भूखण्डों
के लॉटरी से आवंटन हेतु ऑनलाइन आवेदन प्रारम्भ

आवेदन की प्रारम्भ तिथि	:	14.01.2025
आवेदन की अन्तिम तिथि	:	13.02.2025
लॉटरी की तिथि	:	24.02.2025

आवेदन से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु
जविप्रा की वेबसाइट www.jda.rajasthan.gov.in
अथवा ई-मित्र कियोस्क केन्द्रों पर उपलब्ध हैं।
RERA Website : http://rera.rajasthan.gov.in
राजस्थान संवाद
जयपुर विकास प्राधिकरण
इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरु मार्ग, जयपुर-302004

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908